विद्यार्थी की कलम से

॰2013॰ भाग 1॰

भारत पुनः विश्व गुरू कैसे बने ?

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

– प्रकाशक –
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

विषय	विद्यार्थी का नाम
1. अधिकार नहीं कर्तव्यों को भी जानें	मोहम्मद नोफिल
2.अपने आप से करें शुरुआत	पवित्र जैन
3. शांति स्थापना के लिए भारत वचनबद्ध	नेहा जुनेजा
4. शांति का संदेशवाहक खुद अशांत	आकांक्षा सिंह ठाकुर
5. संसाधनों को बनाएं जनोपयोगी	रिद्धि गुप्ता
6. ज्ञान आधारित ग्रामीण विकास जरुरी	चन्दन कुमार राय,
7. सभी को बदलनी होगी सोच	प्रशांत कुमार
8. पाश्चात्य की नकल से बचना होगा	प्रियांश कुमार
9. आओ! खुद को बदल कर देखें	वासु गुप्ता
10.आत्मनिर्भरता से ही होगा सपना साकार	मयंक नेमा
11.अन्तःकरण से बनें कर्तव्य निष्ठ	अन्वीक्षा दीक्षित
12.समस्या को उखाड़ फेंके	आशुतोष यादव
13.मिटाना ही होगा आतंकवाद का नासूर	भावना
14.प्रत्येक नागरिक बने जागरुक	ज्योति अग्रवाल
15.भौतिक के साथ आत्मिक उन्नति जरुरी	मनन सोम
16.प्रत्येक क्षेत्र में हो परिवर्तन	रूबी रावत
17.सौर ऊर्जा पर दें ध्यान	राशि जैन
18.उच्च विचार, विश्व गुरु बनने का आधार	चंचल दहिया
19.स्वर्णिम अतीत से सीख वर्तमान कोसजाए	आर्यन बाल्यान
20.सुबह होने वाली है	अंजलि कुमारी
21.वापस लानी होगी खोई हुई एकता	तन्वी कटारिया
22.युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण	कृतिका नरुला
23.अपने भीतर सद्गुणों को जगाएं	रिया शर्मा
24.जहां चाह वहीं राह	शालिनी कुमारी
25.शिक्षा पद्धति को सुधारना आवश्यक	विवेकानन्द
26.बहुमुखी हो शिक्षा का उद्देश्य	आशुतोष गुप्ता
27.एक होकर बढ़ना है आगे	सोनू रमेश पडोल
28.सबको अपना बना कर चलें	तनुषा त्यागी
29.विगत गलतियों से लेनी होगी सीख	पूरव
30.दिनोंदिन प्रगति से बनेगा विश्वगुरु	साक्षी सिंह
31.कमजोरियों पर विजय बनाएगी विश्वगुरु	गोठीवाला मेघना अशोक भाई
32.विश्व गुरु बनने का मंत्र है तकनीक	श्रेया सिंह
33.जनसंख्या वृद्धि पर रोक जरुरी	मलिहा जामिल
34.हिन्दी का करना होगा सम्मान	तेजस्विनी पंडित
35.कुछ तो खास है भारत में	भव्या
36.प्रगति पथ पर आरुढ है भारत	आंचल खुराना

अधिकार नहीं कर्तव्यों को भी जानें

इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक सभी कर्तव्य विमुख होकर अंधी दौड़ लगा रहे हैं। व्यापारी मिलावट करके टैक्सों के बखेड़ों का हल ढूंढ रहे हैं। डॉक्टर अंगों का क्रय–विक्रय करके अपनी धन लिप्सा को पूरा कर मानवता का अहित कर रहे हैं। वकील अपराधियों की रक्षा कर निरपराधियों को सूली पर चढ़वा कर अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है।

भारत हमारी मातृभूमि है, पितृभूमि है, पुण्यभूमि है। हम इसकी कोख से उत्पन्न हुए। इसने हमारा पालन–पोषण किया। इसके तीर्थ हमारी आस्था और श्रद्धा के केन्द्र हैं। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि से प्रतिपादित धर्म भारतीय धर्म है।

विजय केवल लोहे की नहीं, धरा पर रही धर्म की धूम,भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर–घर घूम विश्वगुरु कहलाता था, कहते थे हम धरा को चूम विश्वगुरु कहलाएगा, कहेंगे उच्च गगन को चूम।

प्रिय भूमि भारत की गाथा देवता भी गाते थे। विष्णु–पुराण के अनुसार स्वर्ग में देवत्व भोगने के बाद देवता मोक्ष प्राप्ति के लिए भारत में ही मनुष्य रुप में जन्म लेते थे।

भारत को विश्व गुरु कहलाने का गौरव है। न केवल यूरोप अपितु फ्रांस, अरब आदि राष्ट्रों में भारत को सोने की चिड़िया या स्वर्ण भूमि कहकर इसकी स्तुति की जाती रही है। मनु ने भारत को मानवीय गुणों की प्रेरणा और शिक्षा का एकमात्र केन्द्र बताया है।

हिमालय हमारा भाव प्रतीक है। गंगा हमारी मां है। इन जैस संसार में और कहां ? हमारा देश सरितामय है। यहां प्रकृति का लावण्य और सौन्दर्य अलसा कर बिखर गया है। कालिदास ने हिमालय को देवात्मा और पृथ्वी का मानदण्ड माना है। महाकवि रविन्द्रनाथ भी उसे देवात्मा मानते है।

भारत सभ्यता और संस्कृति का आदि स्त्रोत है। धर्म की जन्मभूमि होने के कारण भारत आध्यात्मिक देश है। यहीं मानव, प्रकृति एवं अन्तर्जगत के रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर सर्वप्रथम उगे। यहीं परमात्मा की अमरता, एक अन्तर्यामी ईश्वर की सत्ता, प्रकृति और मनुष्य के भीतर एक परमात्मा के दर्शन सर्वप्रथम किए गये। यहीं धर्म तथा दर्शन के उच्चतम सिद्धान्तों ने अपने चरम शिखर स्पर्श किए। भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन की लहर ने बार–बार उमड़ संसार को सिक्त किया।

संसार गणित और ज्योतिष के लिए भारत का ऋणी है। अरब राष्ट्रों ने ज्योतिष–विद्या भारत से ही सीखी। भारत ने चीन को ज्योतिष और अंकगणित सिखाया। गणित में शून्य का सिद्धान्त भी भारत ने ही विश्व को पढ़ाया। बन्दूक और तोपों का प्रचलन वैदिककाल में था। आयुर्वेद, चित्रकारी और कानून भी भारतवासियों ने यूरोप को पढ़ाया। मलमल, रेशम, टीन, लोहे और शीशे का ज्ञान भी यूरोप ने भारत से प्राप्त किया।

यदि हम आने अतीत पर दृष्टि डालें तो समाज का एक सुंदर रुप हमें दिखाई देता है। व्यक्ति चरित्रवान थे। धर्म में उनकी निष्ठा थी। सामाजिक कायदे–कानूनों का पालन होता था। मानवीय मूल्यों का महत्व था। बुद्ध की करुणा, महावीर की अहिंसा, ईसा, मोहम्मद, नानक और कबीर की नीतिपूर्ण वाणी ने संसार को मानवता का पाठ पढ़ाया। धर्म, संप्रदाय एवं भेद–भाव की क्षुद्र लकीरों से ऊपर उठकर मानव मात्र की सेवा के लिए सबको प्रेरित किया गया।

सत्य और अहिंसा के सामने असत्य और अन्याय को झुकाना पड़ा। पर हाय रे। यह कैसी विडम्बना है कि आज हमारे सामने समाज का घिनौना और वीभत्स रुप दिखाई दे रहा है। सर्वत्र अशांति का साम्राज्य है। समाज का प्रत्येक वर्ग आतंक और भय के साये में जी रहा है। चोरी, डकैती, तस्करी, बेईमानी और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सरकारी कार्यालय देवालय बन गये हैं जहां प्रसाद चढाना आवश्यक हो गया।

इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक सभी कर्तव्य विमुख होकर अंधी दौड़ लगा रहे हैं। व्यापारी मिलावट करके टैक्सों के बखेड़ों का हल ढूंढ रहे हैं। डॉक्टर अंगों का क्रय–विक्रय करके अपनी धन लिप्सा को पूरा कर मानवता का अहित कर रहे हैं। वकील अपराधियों की रक्षा कर निरपराधियों को सूली पर चढ़वा कर अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है।

एक प्रश्न उठता है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहूति देकर, पुलिस की लाठियां खाकर, क्या देश को इसलिए आजाद करवाया था कि विदेशियों की जगह देशी लोग जनता का खून चूसें, किन्तु आज स्थिति यही है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। अनपढ़ या पांचवीं फेल भारत मां के महान सपूत विधायक के पद पर नियुक्त होते हैं। प्रधानमंत्री बनना है तो किसी तरह बारहवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओ। समस्या यह नहीं है कि भारत में शिक्षित लोगों की कमी है, समस्या यह है कि समाज में एक धारणा फल गई कि राजनीति एक गटर है। अगर राजनीति एक गटर है तो यह भारत को विश्वगुरु के पद पर आसीन नहीं होने देगा।

इसका सामाधान यह है कि हमें उस गटर को साफ करना होगा और एक स्वच्छ दरिया में परिवर्तित करना होगा। माफ कीजिए, पर मैं गंगा की मिसाल भी नहीं दे सकता क्योंकि गंगा को हमने प्रदूषित कर दिया है कि आज उसके जल और गटर में कोई फर्क नहीं दिखता।

स्थिति ऐसी हो गई है कि हम हर अंग्रेज के समक्ष स्वयं को हीन महसूस करते हैं जो कि पूर्णतः गलत है। हमें तो उनके सामने सीना चौड़ा करके खड़ा होना चाहिए क्योंकि हमारी संस्कृति विश्व में सबसे महान है। जो बात विदेशी वैज्ञानिकों–कोपर्निकस और गैलिलयों ने पंद्रहवी और सोलहवीं सदी में (सूर्य सौर प्रणाली का केन्द्र है और पृथ्वी सहित अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं) साबित की थी, वह बात भारतीय वैज्ञानिक आर्य भट्ट ने दो या तीन सौ साल पहले नहीं पूरे डेढ हजार साल पहले साबित कर दी थी।

जोड़ों का दर्द ठीक करना। साठ की उम्र के नजर का चश्मा हटाना ऐसे काम कर पाना विदेश के आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के बस की बात नहीं है पर भारत की जड़ीबूटियां तो ऐसा चमत्कार दिखाती हैं कि आपको बिना किसी अंग्रेजी दवाई या शल्य चिकित्सा के इन सब बीमारियों से निजात दिला सकती है। आधुनिकीकरण

के नाम पर वैश्वीकरण निजीकरण को बढ़ावा दिलाकर आज फिर से अंग्रेज भारतीय मजदूरों का, भारत के संसाधनों का शोषण कर रहे हैं।

आज की भारतीय विदुषी नारियों को गृहस्थी का कार्यभार संभालते हुए राष्ट्र के कार्यों में सराहनीय योगदान करना चाहिए। आज की नारियां सादे जीवन से बहुत दूर हैं। उन्हें अपनी श्रृंगार करने की पुरानी प्रवृत्ति को आज भी नहीं छोड़ना चाहिए। आज की नारी का कर्तव्य है कि वे सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार कर देश की प्रगति व उत्थान के लिए आगे बढ़ें। यद्यपि आज की नारियों में नवचेतना है, नव जागृति है तथा वे अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हैं, परन्तु इसके साथ–साथ वे अपने कर्तव्यों की और ध्यान दे तो उनकी प्रतिभा से देश विश्वगुरु बन जाएगा।

पवित्र जैन, बारहवीं
लिटिल फ्लोवर्स पब्लिक सी.सै.
स्कलू, शिवाजी पार्क, शाहदरा,
दिल्ली

अपने आप से करें शुरुआत

भारत पुनः विश्व गुरु बने इसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी। हम यह सोचें की हम देश के लिए क्या कर रहे हैं। इस व्यवस्था को सुधारने के लिए हम क्या कर रहे हैं। जब सभी यह साचने लगेंगे तो भारत का नक्शा ही बदल जायेगा।

प्राचीन भारत की सीमाएं विश्व में दूर–दूर तक फैली हुयी थीं। सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान के लिए भारतीय मनीषी विश्व भर में गए। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के चिन्ह विश्व भर में सभी देशों में मिलते हैं। इसका विस्तार ईरान से बर्मा तक था।

संयम एवं अनुशासन की कसौटी पर खरे उतरने वाले चिन्तनशील ऋषियों ने संसार को बहुत कुछ दिया है। भारतीय दर्शन से पुराना सिद्धान्त कहीं नहीं है। विश्व के सभी दर्शनों में भारत की झलक अवश्य मिलेगी। प्रत्यक्ष रुप से सभी भारतीय दर्शन के अनुयायी हैं।

परमात्मा की खोज, ग्रह, उपग्रह, औषधियों एवं वनस्पतियों के गुणों की खोज सर्वप्रथम भारतीय ऋषियों ने की। मनुष्य के लिए उपयोगी प्रत्येक वस्तु की खोज भारतीय मनीषा की देन है। विश्व के किसी भी शास्त्र में वायुयान एवं अत्याधुनिक अस्त्र–शस्त्र का कहीं उल्लेख नहीं है। भारतीय ऋषियों ने इतना कुछ उन शास्त्रों में समावेश कर दिया है कि मनुष्य को वहां तक पहुंचने में हजारों साल लग जायेंगे। फिर भी उतना प्राप्त नहीं कर सकेंगे जितना उन भारतीय शास्त्रों में लिखा है।

भारत विश्व गुरु था, इसकी परा–अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु–मुमुक्षु इस पुण्यभूमि में शिष्य भाव से आते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय ईसा पूर्व 700 में दुनिया का पहला विश्वविद्यालय था, जहां विश्व भर में 10,000 से अधिक छात्र 60 से अधिक विषयों का अध्ययन करते थे। अंग्रेजों को भारत पर राज्य करना था, इसलिए सबसे पहले उन्हेंने यहां की शिक्षा पद्धति पर हमला किया। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति स्वावलम्बी बनाती है और स्वावलम्बी ही स्वामी हो सकता है।

लार्ड मेकाले की शिक्षा पद्धति ने क्लर्क व दा बनाये। हमारी शिक्षा पद्धति में सुधार करने की आवश्यकता है। रोजगार मूलक पाठ्यक्रम द्वारा हम शिक्षा पद्धति में सुधार कर सकते हैं और उच्च शिक्षा में भी अधिक से अधिक सुधर कर भारत को पुनः शिक्षा का केन्द्र बनाकर हम विश्व गुरु बना सकते हैं।

मनुष्य के लिए प्रत्येक उपयोगी वस्तु की खोज भारतीय प्रणाली, आर्यभट्ट द्वारा शून्य का प्रयोग, दशमलव प्रणाली, महर्षि चरक द्वारा 2500 वर्ष पूर्व आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली, भास्कराचार्य द्वारा खगोल शास्त्र से पृथ्वी की सूर्य के चारों और परिक्रमा अवधि, बोधायन ऋषि द्वारा पाई का मूल्य एवं पाइथागोरस से पहले पाईथागोरस सिद्धान्त प्रतिपादित किया आदि सभी हमारे प्राचीन ऋषियों की देन हैं।

राईट बन्धुओं के हवाई जहाज के आविष्कार से 8 वर्ष पूर्व 1895 में संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित शिव कर बापूजी तलपड़े ने मुम्बई चौपाटी समुद्र तट पर चालक विहीन विमान मारुत शक्ति का प्रदर्शन किया था। कई वैमानिक शास्त्र हमारे महर्षियों की देन हैं। विमान संरचना का कई शास्त्रों में उल्लेख था जिन्हें अंग्रेजी सरकार द्वारा

जला दिया गया। एक अर्द्ध जली किताब से एक विमान का उल्लेख मिलता है जिसमें मरक्यूरी ईंधन का प्रयोग किया जाता था। यह विमान अन्तरिक्ष में जाने योग्य था। इसी किताब में 12 विमानों की संरचनाएं एवं बॉडी मेटेरियल की जानकारी मिलती है। अंग्रेजों के अलावा भी भारत में कई बाहरी लोगों ने लूटपाट की और हमारे ऋषियों के अमूल्य शास्त्र साथ ले गए। उनका अनुवाद कर वे कई आविष्कार कर रहे हैं। हमें भारत के इन शास्त्रों का पता लगाकर और भारत में बचे शास्त्रों द्वारा वैज्ञानिक उन्नति करनी चाहिए।

प्राचीन भारत में कृषि के साथ कई कुटीर विकसित थे। यहा की रेशम दुनिया भर में प्रसिद्ध थी। अंग्रेजों ने यहां के कुटीर उद्योगों का विनाश किया, इसलिए कि उनकी मशीनों के बनाए उत्पाद भारत में बिक सकें, उन्हें बाजार मिल सके। फलस्वरुप करोड़ों हाथ खाली हो गये, लोग बेरोजगार हो गये। जब तक पुनः कुटीर उद्योगों की स्थापना नहीं होगी तब तक बेरोजगारी दूर नहीं हो सकती है।

भारत पुनः विश्व गुरु बने इसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी। हम यह सोचें की हम देश के लिए क्या कर रहे हैं। इस व्यवस्था को सुधारने के लिए हम क्या कर रहे हैं। जब सभी यह सोचने लगेंगे तो भारत का नक्शा ही बदल जायेगा।

हमें सभी भारतीयों को शिक्षा देनी होगी और साक्षरता बढ़ानी होगी। प्राचीन भारत में कोई भी निरक्षर नहीं था। भारत में हजारों शिक्षा केन्द्र और गुरुकुल थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने नष्ट कर दिया। हमें इनमें सुधार करना होगा जिससे हम पुनः विश्व गुरु की और अग्रसर हो सके।

सार्वजनिक सम्पत्ति का सही उपयोग, सभी कानूनों का पालन, रिश्वत न देना, भ्रष्टाचारियों को सजा दिलाना, विदेशों में जमा भारतीयों का काला धन पुनः भारत में लाना आदि कारक ये सभी भारत को पुनः विश्व गुरु बनने में सहयोग करेंगे। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हमारे ही किसानों से 5 रु. किलो आलू खरीदकर 200 रु. किलो चिप्स हमें बेच रही हैं, हमारा ही पानी बोतलो में बन्द कर हमें लूट रही हैं, इसे हमे रोकना होगा। हमें प्राचीन ऋषियों की तरह देश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना होगा जिससे प्राचीन भारत की तरह वर्तमान भारत पुनः एक विश्व गुरु के रुप में उभरेगा।

मोहम्मद नोफिल, सातवीं
श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्था
उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर
राजस्थान

शांति स्थापना के लिए भारत वचनबद्ध

भारत प्रारम्भ में ही शांति प्रिय हो रहा है। उसने कभी किसी राष्ट्र की भूमि पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया। भारत के सम्राटों ने अत्याचार और दमन का रास्ता न अपनाकर त्याग और तपस्या का रास्ता चुना भगवान बुद्ध महावीर स्वामी से लेकर महात्मा गांधी तक भारतीय परंपरा अहिसा की नीति पर चलने की रही है।

भारत विश्व का प्राचीनतम देश है। प्राचीन काल में भी यहां संस्कृति और सभ्यता सर्वोच्च शिखर पर थी। ज्ञान के स्त्रोत वेदों का प्रादुर्भाव इसी धरती पर हुआ। अपने ज्ञान एवं सांस्कृतिक उच्चादर्शों के कारण भारत विश्वगुरु की संज्ञा से सुशोभित था। दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। अपने आदर्श एवं आध्यात्मिक मूल्यों के कारण भारत की संस्कृति एवं सभ्यता आज भी विद्यमान है।

भारत के उत्तर में हिमालय जैसा विशाल पर्वत है तो दक्षिण में हिंद महासागर इसके पग पखारता है। पूर्व में बगांल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर है। तीन और से समुद्र से घिरा होने के कारण यहां सम जलवायु पाई जाती है। यहां विभिन्न ऋतुएं होने के कारण अनेक धन्य–धान्य पाए जाते हैं। भारत में लोहा कोयला, अभ्रक, तांबा आदि खनिजों के विशाल भंडार हैं। यहां पर गंगा, यमुना, गोमती, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी आदि नदियां अपना अमृतमय जल देकर इसको सींचती है। अनेक धर्म, संप्रदाय, जाति , भाषा, प्रांतों के लोग यहां रहते हैं इसी विशेषता पर संसार को आश्चर्य है।

प्राचीन काल से ही भारत अपने ज्ञान, संस्कृति, व्यापार आदि के लिए प्रसिद्ध रहा है। आज भी हमने बहुमुखी उन्नति की है। हमने पृथ्वी, अग्नि, नाग, त्रिशूल आदि के सफल परीक्षण किए हैं और सिद्ध किया है कि वैज्ञानिक प्रगति में हम किसी देश से पीछे नहीं है। जहां पहले हम छोटी–मोटी चीजें भी विदेशों से मंगाते थे, वहां आज हम बड़ी–बड़ी मशीने निर्यात करते हैं। भारत राम, कृष्ण, महावीर, नानक, मीरा, तुलसी, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, गांधी जैसे महापुरुषों की भूमि है। हम सभी धर्मो का सम्मान करते हुए आपस में प्रेमपूर्वक रहे। देश की अखंण्डता एवं एकता के लिए यदि आवश्यक हुआ तो हमने अपने प्राणों की बाजी भी लगा दी। तभी इकवाल ने कहा हैः

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियां रहा है दुश्मन दौरे ए जहां हमारा।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने प्रगति व विकास की और अपने कदम बढ़ाए तथा अपना वही सम्मान व पहचान जो प्राचीन समय में थी, पुनः पाने का भरपूर प्रयास किया। इस समय भारत भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अपराध आदि समस्याओं से जूझ रहा है। भ्रष्ट राजनितिज्ञों ने देशभक्ति की भावना को धुंधला कर दिया है। सांप्रदायिकता फिर से सिर उठा रही है। नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। पश्चिम की चकाचौंध से प्रभावित होकर युवा पीढ़ी अपनी अमूल्य संस्कृति को भूलती जा रही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी संस्कृति प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारत प्राचीन समय में इतनी उन्नति कर चुका था कि सभी देश इसकी ओर ताकते थे। हमारा कर्तव्य है कि निजी स्वार्थों को

त्यागकर एकजुट होकर देश की प्रगति के लिए प्रयास करें और भारत को फिर से सर्वोच्च शिखर पर लाकर खड़ा कर दें। देश की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

राष्ट्रभक्ति प्रबल हो, यत्न कीजिए।
राष्ट्र अर्जन में सुमन अर्पण कीजिए।

भारत प्रारम्भ से ही शांतिप्रिय रहा है। उसने कभी किसी राष्ट्र की भूमि पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया। भारत के सम्राटों ने अत्याचार और दमन का रास्ता न अपनाकर त्याग और तपस्या का रास्ता चुना भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी से लेकर महात्मा गांधी तक भारतीय परंपरा अहिंसा की नीति पर चलने की रही है। हमारी सभी प्राथनाएं ओइम् विश्वानि देव' से शुरु होकर' ओइम् शांतिः शांतिः शांतिः पर समाप्त होती है। भारत सदा से वसुधैव कुटुबंकम की भावना पर बल देता रहा है।

भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं की अनदेखी नहीं कर सकता। विश्व पर मंडरा रही परमाणु युद्ध की विभीषिका को पहचान कर भारत ने अमेरिका और अन्य परमाणु देशों के प्रभुत्व को समाप्त करने के उद्देश्य से मई, 1998 में परमाणु विस्फोट किए। इनका उद्देश्य परमाणु शस्त्रों की होड़ में शामिल नहीं है बल्कि परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को चेताना है। अब भारत की बात सुनीजा रही है। आज संसार उसी की बात सुनता है जिसके पास शक्ति होती है।

शांति स्थापित करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। जिसके पास शक्ति होती है संसार उसी की बात सुनता है। जब से भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न बना है तब से विश्व समुदाय में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है और उसकी बात सुनी जाने लगी है। भारत अब भी परमाणु शक्ति को शांति पूर्ण कार्यों के लिए प्रयोग करने के प्रति वचनबद्ध है। वचनबद्धता उसे विश्वगुरू पर पाने के मुकाम तक ले जाएगी।

नेहा जुनेजा, आठवीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कल,
अशोक विहार, फेज 4, दिल्ली

शांति का संदेशवाहक खुद अशांत

आज भारत भ्रष्टाचार रुपी गंभीर रोग से ग्रसित है। इस रोग के समूल इलाज के लिए जनता को आगे आना होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने स्तर पर इसे रोके। न भ्रष्टाचार करे और न सहे। हमारे शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने का कार्य प्रशासन की और से भी होना चाहिए। प्रत्येक वह व्यक्ति जो भ्रष्टाचार करता पाया जाये उसे तुरंत निलंबित किया जाये।

जी हां, भारत को यदि पुनः विश्वगुरु बनाना है तो इसकी युवा शक्ति को जागृत करना हो। वह युवा जो देश की आधी से अधिक आबादी। भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने या बनने से पहले इस बात पर विचार करना चाहिए की पुरातन काल में भारत किन कारणों से विश्वगुरु बन पाया। प्राचीन भारतवासी ज्ञानवान वीरवान एवं धैर्यवान थे। भारत ने अपनी प्राकृतिक सम्पदाओं एवं संस्कारों के उपयोग से विश्व में ख्याति प्राप्त की। प्राचीन भारत में आर्य भट्ट, सुश्रुत, नागार्जुन जैसे वैज्ञानिक हुए जिन्होंने अतुल्य खोजों एवं आविष्कारों द्वारा विश्व को अचम्भित कर दिया।

प्राचीन भारत संस्कारवान भारतवर्ष था, जिसके आदर्शों एवं भावों के आगे विश्व नतमस्तक था। भारत में बड़ों का आदर, प्रेम, सत्य, सामंजस्य, बंधुत्व के गुण थे। एक बार चीनी यात्री भारत आया। यहां उसने कई नगरों का भ्रमण किया। उसने देखा कि यहां कोई अपने दरवाजों पर ताले नहीं लगाता। उसने एक घर के सामने जाकर आवाज लगाई। अंदर से एक स्त्री निकली ह्यूनसांग ने उससे पीने हेतु पानी मांगा किंतु वह स्त्री दूध लाई और कहा कि हमारे यहां अतिथि देवता तुल्य है। देवता को केवल पानी नहीं दिया जाता। आप भीतर चलकर भोजन ग्रहण करें। उसने ह्यूनसांग को घरों के दरवाजों पर ताले न होने का कारण आपसी प्रेम, बंधुत्व एवं विश्वास को बताया।

यह है हमारे भारत की पहचान। भारत विश्वगुरु बना अपने आदर्शों, सद्भावनाओं एवं संस्कृति से । यह भारत ही है जहां सती सीता और अनुसुईया ने जन्म लिया। जहां गौतम, महावीर जन्मे। जिस धरती पर राजा विक्रमादित्य जैसे न्यायप्रिय शासक ने जन्म लिया यह वही पावन धरा है।

किंतु वर्तमान भारत का परिप्रेक्ष्य अत्यंत ही भयावह है। यहां पश्चिमी हवाओं का दूषित कहर है, आज का भारत भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार और बेहाली के थपेड़ों से घिरा हुआ है। भारत भूमि स्वयं यहां हो रहे अत्याचारों को देख तड़प उठती है। आज संस्कारों, सभ्यता का नाश हो रहा है। रक्षक ही भक्षक बन गया है। न्याय और सच, ईमानदारी और सच्चाई न जाने किस काल कोठरी में बंद हैं।

आज धर्म, जाति, रंग आदि के आधार पर भेदभाव, हिंसा, मारकाट जोरों पर है। दूध की नदियां बहाने वाली धरती आज खून की नदियों से सराबोर है। भारत मां कभी मुंबई हमलों से रोई तो कभी जयपुर के हादसों पर बिलखी और ऐसे में भी कोई उसके आंसू पोंछने नहीं आया बल्कि आज भी अखबार के पन्नों पर यही शब्द अंकित हैं कि किसी ने रिश्वत ली, किसी ने हत्या की, किसी ने जालसाजी की। आज इंसान जानवर से भी अधिक वहशी हो गया।

विश्व को शांति, अमन–चैन का संदेश देने वाला भारत आज स्वयं बहुत अशांत एवं परेशान है। ऐसे में भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना थोड़ा कठिन प्रतीत होता है किंतु विश्वगुरु बनना है तो पहले देश के युवा वर्ग को इसकी प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित करवाना होगा। उनमें इसके प्रति सम्मान पैदा करना होगा। ताकि वह पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण छोड़े और हमारी अपनी सभ्यता को अपनाए। ऐसा इसलिए जरुरी है क्योंकि जब तक हम देशवासियों को देश की महानता नहीं बताएंगे तब तक विश्व को भी इसका महत्व नहीं समझा सकते।

भारत ने प्राचीनकाल में जो ज्ञान विदेशों को दिया है उसे आज वह स्वयं भूल रहा है। वह है शांति और खुशहाली का ज्ञान। देश के लोगों को स्वयं से चाहिए कि वे इन साम्प्रदायिक झगड़ों, हिंसा आदि में भाग न ले। क्योंकि सभी धर्मों का एक ही सार है ''मानव मात्र से प्रेम''। यही नानक की वाणी है यही हजरत का पैगाम है, और यही राम का संदेश है। लोगों में सांप्रदायिकता की भावना समाप्त करने के लिए समय–समय पर सौहार्द भेटें करवायी जा सकती हैं।

आज भारत भ्रष्टाचार रुपी गंभीर रोग से ग्रसित है। इस रोग के समूल इलाज के लिए जनता को आगे आना होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने स्तर पर इसे रोके। न भ्रष्टाचार करे और न सहे। हमारे शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने का कार्य प्रशासन की और से भी होना चाहिए। प्रत्येक वह व्यक्ति जो भ्रष्टाचार करता पाया जाये उसे तुरंत निलंबित किया जाये। ऐसे लोगों के लिए अलग मानव सुधार गृह होना चाहिए जहां उन्हें आचरण की शुद्धता सिखाई जाये।

गरीबी–भुखमरी का निदान भी है। आजकल कई ऐसी गैर सरकारी संस्थाएं हैं जो इन गरीब लोगों की सहायता को तत्पर हैं। आप स्वयं भी यदि अपने आस – पास किसी गरीब – दुःखी को देखे तो उसकी यथासम्भव मदद करें। दान देकर नहीं क्योंकि इससे उनमें भिक्षावृत्ति बढ़ती है। हो सके तो उन्हें रोजगार दिलाने में मदद करें। कहा गया है कि ''भूखे को दी भीख एक वक्त की भूख मिटा सकती है पर उसे दी सही सीख उसका जीवन बना सकती है।''

आज भारत में लाखों ऐसी प्रतिभाएं हैं जो देश को विश्व पटल पर सबसे आगे ला सकती हैं। फिर चाहे वह शिक्षण क्षेत्र में हों, खेल जगत में या अन्य किसी क्षेत्र में। वे सभी भारत का लोहा मनवा सकती हैं। किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि छोटे गांवों एवं कस्बों की ये प्रतिभाएं आर्थिक तंगी एवं अवसरों की कमी के कारण वहीं दम तोड़ देती हैं। आगे नहीं बढ़ पातीं। कुछ ऐसे वैज्ञानिक एवं खोजकर्ता भी हैं जिन्होंने अपने घर बेचकर अपनी खोजों को अंजाम दिया। ऐसी खोजें जो आदित्म जाति के लिए वरदान साबित हो सकती हैं किंतु उन्हें शासन द्वारा न कोई सहायता मिली न ही कोई प्रोत्साहन। भारत में ऋषि, गणितज्ञों, विद्वानों आदि को प्रशासकों का संरक्षण एवं समर्थन प्राप्त था। आज भी जरुरत इसी बात की है कि देश में छुपी प्रतिभाओं को उजागर किया जाए। उन्हें संरक्षण एवं संवर्धन दिया जाये ताकि देश का नाम सदा उन्नति करे।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यही हमारे प्रचीन भारत की मान्यता रही है। तब स्त्री का समाज में उचित स्थान एवं सम्मान था। परिवार में भी सभी निर्णयों में उसकी महती भूमिका थी। नारी को माता भगिनी, भार्या, सखी आदि रुपों में सम्मान प्राप्त था। तब सीता, अनुसुईया, मीरा जैसी महान स्त्रियां थी जो सर्वगुण संपन्न थीं। स्त्रियों का आदर भारतीय परंपरा की एक महान विशेषता थी किंतु आज नारी को सम्मान नहीं

दिया जाता। उसका तो कभी उसके साथ गलत व्यवहार किया जाता है। स्त्री को स्वयं अपनी रक्षा का भार उठाना होगा। घरेलू हिंसा, बाल–विवाह, असाक्षरता जैसे कलंकों से स्वयं को बचाना होगा।

इसी प्रकार असत्य, अन्याय, अत्याचार, अपराध, अनैतिकता, बेरोजगारी, महंगाई, अशिक्षा, बाल मृत्युदर, कन्या भ्रूण हत्या जैसी अनेक बीमारियां हैं जिनका उपचार करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को आगे आना होगा। देश को पुनः विश्वगुरु बनाने का जो स्वप्न हमने देखा है उसकी राह थोड़ी कठिन अवश्य है किंतु यदि सच्चे मन से प्रयास करें तो मंजिल दूर नहीं। क्योंकि हम युवा हैं देश का भविष्य हम प्रयास करेंगे तभी देश की तकदीर बदलेगी।

आकांक्षा सिंह ठाकुर, ग्यारहवीं
न्यू पिंक फ्लॉवर उ.मा. विद्यालय
नेहरु नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश

संसाधनों को बनाएं जनोपयोगी

भारत कभी इसी ज्ञान और विज्ञान के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। हमारे पूर्वजों ने ज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इन्हें जीवनोपयोगी बनाया। भारत को विश्वगुरु बनाने में पूर्वजों की अथक लगन परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। भारत में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग से ही प्राप्त की जा सकती है।

भारत हमारी मातृभूमि है और यह विश्व का श्रेष्ठ देश है। विभिन्न संस्कृतियों में सम्मिलित सभी धर्मों और त्योहारों को मनाने वाले, सांप्रदायिक एकता का प्रतीक भारत विश्व विख्यात देश है। विश्व में भारत की जीवन–पद्धति विश्व कल्याण की द्योतक है। किसी भी देश का विकास उस देश में शिक्षा संस्थाओं के विकास से संबंधित होता है। भारत ने प्राचीन काल में ही शिक्षा का महत्व समझ लिया था। हमारी मान्यता रही है कि विद्या रुपी धन सभी धनों में प्रधान है। शिक्षा के इसी महत्व के कारण भारत विश्व गुरु कहलाता था। इसकी अपार विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु इस पुण्य भूमि में शिष्य–भाव से आते रहे हैं। इसी भूमि से ज्ञान–दीप लेकर विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे हैं।

भारत कभी इसी ज्ञान और विज्ञान के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। हमारे पूर्वजों ने ज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इन्हें जीवनोपयोगी बनाया। भारत को विश्वगुरु बनाने में पूर्वजों की अथक लगन, परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। भारत में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग से ही प्राप्त की जा सकती है। जागरुकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही समृद्धि के शिखर पर पहुंचा जा सकता है।

किसी राष्ट्र की शक्ति उसके प्राकृतिक संसाधनों में समाहित होती है। प्रकृति ने भारत में दिल खोलकर अपनी संपदा लुटाई है। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खनिज संपदा, कृषि योग्य भूमि, जल व जंगल, जलवायु वातावरण सभी एक से बढ़कर एक हैं।

हमारे देश की जलवायु की भिन्नता बहुत विस्तृत है। वातावरण विविधता ने हमारे देश में संपूर्ण विश्व उपस्थित कर दिया है। हमारा देश सम्पूर्ण विश्व के समान है जहां ध्रुव क्षेत्रों जैसी ठंडक भी है तो ऊष्ण कटिबंधि स्थानों जैसी हरियाली भी ऊंची–ऊंची पर्वत शिखर मालाएं भी हैं तो दूसरी और विस्तृत फैले रेगिस्तान भी। ये सभी विशेषताएं पूरे विश्व में अलग–अलग स्थानों पर पाई जाती हैं।

हमारे देश में आने वाली छः ऋतुयें विदेशों में बड़े आश्चर्य के रुप में जानी जाती हैं। प्रकृति के ये उपहार हमारे देश को विकास के उच्चतम पायदान पर ले जा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है इन इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए। हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद हमारी प्राकृतिक संपदा के रुप में उपलब्ध खनिज और कच्ची धातुयें स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार हैं। चमत्कार और बहुमूल्य हीरों और रत्नों की खानों के दुर्लभ भंडारों का परिश्रम व उपर्युक्ता से उपयोग हमारी समृद्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।

हमारे देश की नदियां और समुद्री तट काफी समृद्ध हैं। इनके सहयोग से विधुत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन होने वाली विधुत की कमी से लड़ा जा सकता है। निरन्तर प्रवाहित होने वाली वायु के बेग से पवन–चक्कियों का उपयोग करके भी विधुत बनायी जा सकती है।

हमारे देश में 6 में 8 माह तक सूर्य का प्रकाश भरपूर रहता है। सोलर एनर्जी का प्रयोग देश की समृद्धि को बढ़ाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि क्षेत्र में नये–नये अनुसंधान कर जागरुकता और सजगता से विकास के नये सोपान प्राप्त किये जा सकते हैं। विदेशों में भारतीय युवाओं ने प्रौद्योगिक क्षेत्र में अपनी धाक जमाई है।

देश में आज मोबाईल फोन, इंटरनेट, ई–मेल आदि गांवों तक पहुंच चुका है। पर्यटन के रुप में देश के पास एक विशाल क्षेत्र है जहां देश की सम्पन्नता और समृद्धि में वृद्धि हो सकती है। राष्ट्रीय धरोहरों की सुरक्षा राष्ट्र की संपदा में वृद्धि करती है।

विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए भी धर्म को संप्रदायों से अलग रखना जानता है। अध्यात्म का भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। भौतिकता के बोझ के तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने की कला हमें विश्व गुरु बनाने में सहायक है।

देश, समाज और जीवन में जितना अनुशासन होगा, वह उतना ही सुदृढ़ और विकसित होगा। हमें स्वार्थ और अहंकार त्यागकर सजग, जागरुक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नये सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा, तभी हम पुनः स्वयं को विश्व गुरु सिद्ध कर पायेंगे।

रिद्धि गुप्ता दसवीं डी
त्यागी पब्लिक स्कूल, दिल्ली
बी–3 केशवपुरम, दिल्ली

ज्ञान आधारित ग्रामीण विकास जरुरी

हमें आगत आठ वर्षों में भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बौद्धिक समाज के रुप में अपनी क्षमता का लाभ उठाना चाहिए। इस देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों, तकनीशियनों तथा कृषकों व अन्य लोगों को इस जिम्मेवारी को उठाना चाहिए और प्रयास को समन्वित करके विकास लक्ष्यों में मदद देनी चाहिए।

भारत के पुनः विश्वगुरु बनने से तात्पर्य है अन्य देशों की अपेक्षा भारत को प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयामों जैसे विशिष्टीकरण, डिजाइन उत्पादन आदि और प्रौद्योगिकी विकास में स्वदेशी कला में पूर्ण योग्यता हासिल करनी होगी। इस योग्यता को हासिल करने के लिए समन्वित रणनीतियां नया मिशन विकसित करने की योग्यता तथा क्षमता का पूर्ण संचार करना होगा।

यदि हम इतिहास के पन्नें पलटें तो ज्ञात होगा कि भारत विश्व के चंद सभ्य तथा संपन्न देशों में से एक था। सिंधु घाटी सभ्यता, मोहन जोदड़ो तथा हड़प्पा के अवशेष इस बात के प्रमाण है कि 2500 ई.पूर्व में ही भारत कृषि, मिट्टी के बरतन, औजार, आभूषण, मान व निर्मित वस्तुओं तथा मिश्रित धातु की मूर्तियों के निर्माण का कौशल विकसित कर चुका था। बाद में लगभग छठी शताब्दी इस्वी में मगध साम्राज्य में शहरों का विकास तथा सिक्कों का इस्तेमाल आरंभ हुआ। इसके बाद कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ लिखे गये। इसके अलावा भारत को समय–समय पर विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा जिससे औधोगिक क्रांति की कमी महसूस होने लगी। बढ़ती जनसंख्या अकाल तथा गरीबी के साथ कभी एक संपन्न रहा देश भारत अनुक्रमी विदेशी शासकों द्वारा दमन तथा दरिद्रता का शिकार बना दिया गया।

इन सब कुटिलताओं के बावजूद भारत बौद्धिक युग में अपने गौरव का विस्तार कर रहा है। सौभाग्य से भारत ज्ञान युग के उद्‌भव के साथ खुद को एक अत्यंत लाभकारी स्थिति में पाता है, क्योंकि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और शासन में सामाजिक परिवर्तनों को प्रेरित करेगा। यह परिवर्तन बड़े पैमाने पर रोजगार, उच्च उत्पादकता, उच्च राष्ट्रीय विकास, कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण, समन्वित तथा पारदर्शी समाज और ग्रामीण समृद्धि को प्रोत्साहित करेगा। बौद्धिक युग के दौरान भारत का गौरव फिर लौट के आएगा। क्योंकि भारत के पास सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक कार्यकताओं की क्षमताएं हैं। ऐसा कहा गया है कि– *अध्ययन से सृजनात्मकता आती है। सृजनात्कता विचारों को आगे बढ़ाती है। विचारों से ज्ञानवर्धन होता है और ज्ञान आपको महान बनाता है।*

भारत को विश्वगुरु बनाने में युवा व विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण योग्यदान अति आवश्यक है। भारत को विश्व गुरु बनाने में निस्संदेह प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भमिका है। इस प्रक्रिया में हम भारतीयों को कुछ नए प्रारुपों की मदद लेनी होगी और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल तथा भारत को परेशान करने वाली समस्याओं को सुलझाने में कुछ कल्पनाशील प्रवृतियों की मदद लेनी होगी। देश को अपने हितकारी जैव प्रौद्योगिकी सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी, रणनीतिक क्षेत्रों, उद्योगों तथा आधारभूत तंत्र का विकास, नदियों की नेटवर्किंग के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में समन्वित विकास योजना तथा अधिकृत प्रबंधन के लिए ज्ञान आधारित ग्रामीण विकास एक अनिवार्य आवश्यकता है।

मैं व्यक्तिगत रुप से सोचता हूं कि भारत में आर्थिक या सामाजिक विकास के संदर्भ में जी–8 देशों को भी पीछे छोड़ने की संभावना है। हमारे अंदर इस इंधन को प्रज्ज्वलित करने वाले ईंधन का अभाव है। उसका हम लाभ नहीं उठाते । इसके विभिन्न कारण खराब नेतृत्व, मूल्य संवर्धन का अभाव इत्यादि हो सकते हैं। एक कहावत है कि भेड़ के नेतृत्व में शेरों की सेना एक शेर के नेतृत्व में भेड़ों की सेना से युद्ध हार जाएगी। अभी सबसे अधिक आवश्यकता स्वप्नदृष्टा तथा योग्य नेतृत्व की है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर सके। क्योंकि–

इक्कीसवीं सदी में पूंजी या श्रम के बजाय ज्ञान प्राथमिक उत्पादन संसाधन है। विकास का एक अन्य प्रेरक है–साक्षरता। एक अशिक्षित देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। हमें भारत को विश्वगुरु बनाने से पहले साक्षर भारत का स्वप्न देखना चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि हममें वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपने उत्पादों को बेचने की आक्रामक प्रवृत्ति का अभाव है। हम इसके बजाय 'अमेरिका में निर्मित' से प्रभावित हैं।

हमें भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना चाहिए और उनका प्रभावपूर्ण तरीके से विपणन करना चाहिए। हमें अपनी जैव–विविधता को पहचानना चाहिए और उन्हें पेटेंट कटाना चाहिए। साथ ही साथ हमें बढ़ती जनसंख्या के संकट पर भी एक निगाह रखनी चाहिए क्योंकि मात्रा में वृद्धि गुणवत्ता में कमी को प्रेरित करेगी। इसके लिए में चीन की सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों का सुझाव दूंगा। भारत जैस लोकतांत्रिक देश किसी भी देश को पछाड़ सकता है, यदि एक बार लोग इसके साथ–साथ चलें।

भारत के पास पारंपरिक ज्ञान की संपदा है, लेकिन वह बिखरा हुआ है। हमें उन सभी ज्ञानों को एकत्रित करना होगा। पांच विकसित क्षेत्रों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होनी चाहिए–

- कृषि क्षेत्र
- शिक्षा तथा स्वास्थ्य
- अधारभूत सुविधाएं
- रणनीतिक क्षेत्र
- सूचना तथा संचार प्रौधोगिकी

हमें आगत आठ वर्षों में भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बौद्धिक समाज के रुप में अपनी क्षमता का लाभ उठाना चाहिए। इस देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों, तकनीशियनों तथा कृषकों व अन्य लोगों को इस जिम्मेवारी को उठाना चाहिए और प्रयास को समन्वित करके विकास लक्ष्यों में मदद देनी चाहिए। चुनौतियों हमेशा रहेंगी, लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम प्रगति तथा विकास के लिए उन्हें अवसरों में कैसे बदलते हैं।

हमें किसी भी मिशन में सफल होने के लिए अदम्य उत्साह तथा विफलताओं का सामना करने और उनसे सीखने के साहस की आवश्यकता होती है।

दायित्व चुनौतीपूर्ण है, परंतु एक अरब जनसंख्या वाले एक दृढ़ संकल्प देश के लिए साकार योग्य है। हमें इस तथ्य का संज्ञान लेना होगा कि विश्व का सबसे बढ़ा लोकतंत्र होने के बावजूद भारत स्वतंत्रता के छ दशकों बाद भी एक विकासशील देश ही है।

इस स्थिति में बदलाव जरुरी है और भारत को एकमात्र विश्वगुरु बनने से पहले विकसित देश बनना है। विकास के लिए दृढ़ निश्चय और एकनिष्ठ समर्पण की आवश्यकता है। हमें याद रखना चाहिए कि भारत को विदेशी शासक से आजाद कराने में हमारे पूर्वजों ने बहुत से बलिदान दिये हैं, कठिनाइयों और दुःखों का सामना किया है, ताकि हम स्वतंत्र भारत में रह सकें और अपना मस्तक ऊँचा रख सकें।

एक देश केवल कुछ लोगों के महान हाने से महान नहीं होता, बल्कि इसलिए महान होता है कि उस देश में हर कोई महान होता है।

युवाओं को शिक्षा में श्रेष्ठता प्राप्त करनी चाहिए और उन्हें नैतिक मूल्यों तथा समाज कल्याण की भावना के साथ अच्छा मनुष्य बनना चाहिए। युवाओं के समन्वित तथा केंद्रित प्रयास भारत को एक संपन्नशाली विश्वगुरु बनाने की चुनौती को पूरा कर सकते हैं।

यह स्वप्न वास्तव में एक चुनौती है और हम इस पर तभी विजय प्राप्त कर सकते हैं जब हम एक अरब लोग, अन्य सभी साधरण मुद्दों को भूलकर एक देश के रुप में सामने आकर एक–दूसरे से हाथ मिलाएं। सरकार अकेले इस चुनौती का सामना नहीं कर सकती।

चन्दन कुमार राय, आठवीं सी
सैनिक स्कूल गोवालपारा,
राजापाड़ा, असम

सभी को बदलनी होगी सोच

हम पूजा पाठ, यज्ञ–दान, पुण्य कर घी के दीए को जलाकर अपना जन्म–विस मनाने की परंपरा को छोड़कर अंडे से बने गंदे केक पर फूंककर असंगत परंपरा को बड़े गर्व से निभा रहे हैं। अपनी स्वास्थकर चीजों को छोड़कर अंडे से बने और दूसरे रोगों को बुलावा देने वाले चीजों को खाना अपनी शान समझ रहें हैं।

हमारा देश भारतवर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है। अपनी महान सभ्यता व संस्कृति के कारण ही नहीं प्रकृति के भौगोलिक निर्माण की दृष्टि से भी सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना है। कविवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों मेंः–

तीन तरफ सागर की लहरें, जिसका बने सवेरा
पतवारों पर नियति सजाति, जिसका सांझ– सवेरा।
बनती हो मल्लाह मुट्ठिया, सतत भाग्य की रेखा
रत्नाकर रत्नों का देता हो टकराकर लेखा।

सभी प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्य और वैभव से सम्पन्न हमारा देश संसार का सबसे बड़ा जनतंत्र भी है। यह विश्व की प्राचीनतम मावन संस्कृति की जन्मभूमि है। भारत ऋषिओं का तपोवन है, प्रकृति का उपवन है, इसीलिए प्रसिद्ध शायर इकबाल के शब्दों में हम गाया करते हैं– *'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।*

कहा जाता है प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु के रुप में जाना जाता था। यहां सैकड़ों ज्ञान पिपासु बाहर से, दूर देशों से आते थे और यहां की शिक्षा प्रणाली को देखकर इसकी चाह में यही रुक जाते या वापस दूसरी बार इसे ग्रहण करने जरुर आते थे। हमारे देश को विश्व गुरु बनाने का श्रेय हमारे देश के विद्वानों, कलाकारों, हमारे महापुरुषों, ऋषियों और कवियों को जाता है। इनके द्वारा रचित ग्रंथों, काव्यों, महाकाव्यों, उपनिषदों, पुराणों आदि द्वारा ही पहले शिक्षा के स्वरुप में लोगों को शिक्षित किया जाता था।

नालन्दा नामक दो विश्वविद्यालय उन दिनों बहुत प्रख्यात थे। देशी–विदेशी लोग उच्च शिक्षा के लिए यहां आया करते थे। यहां की सभ्यता और संस्कृति को अपना कर यहीं के हो जाते थे। उन दिनों इनके द्वारा भारत की शिक्षा के बारे में विश्व में बहुत प्रचार–प्रसार हुआ। लेकिन जितना प्रचार–प्रसार हुआ, जितना मान–सम्मान मिला, सब कुछ विदेशियों को खटकने लगा। वे तो हमारे रहने के तौर–तरीके ले गए और यहां की संस्कृति और शिक्षा से अपने देश को धनी बना डाला परंतु हमारे देश को खोखला करना शुरु कर दिया और धीरे–धीरे इसका पतन हो गया।

पूरे विश्व को अंधेरी गुफा से निकालकर सूर्य की रश्मि में भिगोने वाले जो चारों पैरों पर घुडकना सीख रहे थे, उन्हें उंगली पकड़ कर चलना सिखाने वाले हम हजारों भारतीयों को आज अपने भारतीय होने पर शर्म महसूस होती है। हीन भावना से ग्रसित होकर जीवन जी रहे हैं हम सब। तभी हम भारतीय अपने तर्कसंगत नए साल को छोड़कर अंग्रेजों का नया साल मनाते हैं जिसका कोई आधार नहीं है। हम पूजा पाठ, यज्ञ, दान–पुण्य कर घी के दीए को जलाकर अपना जन्म–दिवस मनाने की परंपरा को छोड़कर अंडे से बने गंदे केक पर फूंककर असंगत परंपरा को बड़े गर्व से निभा रहे हैं।

अपनी मातृभाषा में बात करने से हम अपने आप को अपमानित महसूस करते हैं और विदेशी भाषा को बोलने में गर्व महसूस करते हैं। हमारे देशवासियों की अगर ऐसी मानसिकता बन गई है तो विश्व गुरु बनने के लिए इसको बदलना ही होगा। भारतीयों में रुग्ण मानसिकता और हीन भावना से भरने की चाल तो 1931 से मेकाले के घोषणा पत्र के समय से ही चली आ रही है, जबसे यहां अंग्रेजी शिक्षा लागू हुई।

अंग्रेजी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही यही था कि भारतीयों के पराधीन मानसिकता वाला बना दिया जाए ताकि वे हमेशा अंग्रेजों के तलवे चाटते रहें। लोगों का नैतिक पतन हो जाए, भारतीय कभी अपने पूर्वजों पर गव न कर सकें, वे बस यहीं समझते रहें कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत बिल्कुल असभ्य था। उसके पूर्वज अंधविश्वासी और रुढ़िवादी थे। अगर अंग्रेज न आये होते तो हम कभी तरक्की नहीं कर पाते। इसी तर्ज पर उन्होंने शिक्षा– व्यवस्था लागू की थी और सफल भी हो गए और यह हमारा दुर्भाग्य ही है।

हमारी एक और महान विरासत है संगीत, जो सरस्वती की देन है, किन्हीं साधारण मानवों की नहीं। फिर इसे हम तुच्छ समझकर इसका अपमान क्यों कर रहे हैं ? हमें इसे विश्वव्यापी बनाना होगा। आज हमारे संगीत निर्देशक ए. आर. रहमान को संगीत के लिए आस्कर पुरस्कार' दिया गया जिसके गर्व से सीना चौड़ा कर दिया भारतीयों का। सभी को मिलकर अपनी सोच को बदलना होगा और पुनः हमें अपने प्राचीन संस्कृति को दुबारा से अपनाना होगा। तभी हम दुबारा से अपने देश को विश्व गुरु के रुप में देख पायेंगे।

इसके अलावा हमें अनेक उपाय करने होंगे। सर्वप्रथम समूचे भारत के लोगों को योग्य, कुशल, आदर्शवान, चरित्रवान एवं ज्ञानवान बनाना होगा हमें अपने साहित्य–संगीत और कला का विकास चरम सीमा तक करना होगा। हमें अपने विज्ञान का सम्पूर्ण विकास करना होगा जो विश्व के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन जाए। हमें वैभव सम्पन्न भी होना होगा जिससे विश्व में हमारा प्रभाव पूर्णरुप से स्थापित हो सके। हमें अपनी भाषा का सम्मान करते हुए उसको विश्व की आवश्यकतानुकूल ढालना होगा। उसमें सुधार और विकास करके विश्व का मार्गदर्शक बनना होगा।

हमें अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के बीज विश्व को वितरित करने होंगे। हमें अपनी उन दीवारों को तोड़ना होगा जो संकुचित रीति–रिवाजों के कारण बाधक बन रही हैं। हमें वेदों की विश्वबन्धुत्व की भावना सारे विश्व में फैलानी होगी और संसार को बताना होगा कि–

''सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत।''

हमें विश्व के प्रत्येक देश में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अपने ढंग के शिक्षा केंन्द्र खोलने होंगे। भारत में ऐसी शिक्षण संस्थाएं बनानी होंगी जहां विश्व के कोने–कोने से छात्र आकर ज्ञान प्राप्त कर सकें और कह सके–

''अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहां पहुंच अंजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।''

प्रशांत कुमार, दसवीं
मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल,
पंचशील पार्क, दिल्ली

पाश्चात्य की नकल से बचना होगा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हम फिर से संभल रहे हैं। आज भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रुप में विश्व मानचित्र पर उभर रहा है। भारत के पास चीन के बाद दूसरा जन–धन है। हमारे पास अपने अनगिनत महापुरुषों के आदर्शों की धरोहर है। आज भी राम, कृष्ण, बुद्ध तथा महावीर जैसे महापुरुषों के आदर्श से पूरा विश्व प्रभावित है।

गुरु अर्थात परम ब्रह्म। सृजन, पालन तथा संहार शक्ति से संम्पन्न यानी सर्वशक्तिमान। यह वाक्य है हमारे वेदों का। हमारे वेदों में गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। गुरु वह होता है जो मनुष्य को मानवता का पाठ पढ़ाए। उसे मानव जीवन के उद्देश्यों से अवगत कराए। आज संसार में अदृश्य ईश्वरीय शक्ति की कल्पना तो सभी करते हैं लेकिन जब वास्तविक ईश्वर की बात होती है तो विभिन्न महापुरुषों की जीवनी हमारे दृष्टि पटल पर नाचने लगती है जिनके विचार तथा आदर्श आज भी अनुकरणीय हैं। वही महापुरुष देश के लिए, समाज के लिए तथा हर एक व्यक्ति के लिए गुरु है। हमारे समाने एक नया शब्द है विश्वगुरु जिसके अर्थ की व्याख्या का बहुत विस्तार है। विश्वगुरु का अर्थ है विश्व का गुरु। उपर्युक्त सापेक्ष में विश्वगुरु शब्द स्व–विश्लेषित है। हम स्पष्ट रुप से कह सकते हैं कि विश्व गुरु वह सामर्थ्यवान देश है जो विश्व के अन्य देशों के लिए अनुकरणीय हो, जो ज्ञान–विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र हो तथा जिसके आदर्श को विश्व का हर देश अपनाए।

आज भारत विश्व मानस पटल पर एक महाशक्ति के रुप में उभर रहा है। 21वीं सदी के बदले विश्व मानचित्र पर हर शिक्षित तथा उत्तरदायी भारतीय नागरिक के समक्ष एक यक्ष प्रश्न उपस्थित है– भारत विश्वगुरु कैसे बने? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने से पहले हमें खुद में एक विश्वास जगाना होगा कि क्या भारत में विश्व गुरु बनने की क्षमता है। निश्चित रुप से भारत में विश्वगुरु बनने की क्षमता है। बल्कि यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटें तेा भारत प्राचीन काल से ही विश्वगुरु है।

ज्ञान–विज्ञान का प्रमुख स्त्रोत होने के कारण भारत विश्वगुरु कहलाता था। इस कथन की पुष्टि भारत के दो विश्व–विख्यात प्राचीन विश्व–विद्यालयों नालंदा तथा तक्षशिला से होती है। आर्थिक परिदृश्य में भी भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। लेकिन विभिन्न विदेशी आक्रमणों, मुगल तथा अंग्रेजों शासकों के लुटेरे व्यवहार ने हमारी प्राचीन विश्वगुरु की पहचान को धूमिल कर दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हम फिर से संभल रहे हैं। आज भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रुप में विश्व मानचित्र पर उभर रहा है। भारत के पास चीन के बाद दूसरा जन–धन है। हमारे पास अपने अनमिनत महापुरुषों के आदर्शों की धरोहर है। आज भी राम, कृष्ण, बुद्ध तथा महावीर जैसे महापुरुषों के आदर्श से पूरा विश्व प्रभावित है। हमारे महान काव्यों जैसे रामायण, महाभारत आदि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्त्रोत है। हमार वेद तथा पुराण आधुनिक विज्ञान जथा चिकित्सा क्षेत्र के विकास का मूल हैं।

हमारे आधुनिक महापुरुषों जैसे स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि के आदर्शों को पूरा विश्व अपना रहा है। गांधी जी के सत्याग्रह तथा अहिंसा के सिद्धांत को विश्व के प्रत्येक देश में अपनाया जा रहा है। अनेक भारतीय सपूतों के आविष्कारों से विज्ञान तथा चिकित्सा क्षेत्र फल–फूल रहा है, जैसे भाष्कराचार्य द्वारा शून्य तथा अनंत के आविस्कार ने गणित तथा ज्योतिष विद्या को और अधिक समृद्ध बनाया।

सुश्रुत के अनुसंधान ने आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी को जन्म दिया। ऐसे अनगिनत प्राचीन पाठ के बल पर ही हम विश्वगुरु बनने की क्षमता रखते हैं। लेकिन इस आधुनिक युग में अब समय आ गया है जब हम अपनी क्षमता को वास्तविक रुप दें तथा विश्वगुरु वाली भूमिका में आएं।

भारत को विश्वगुरु बनने के लिए महाशक्ति बनना अति आवश्यक है क्योंकि सर्व शक्तिमान बनकर ही आप दूसरों को सही राह दिखा सकते हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी के शब्दों में–

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।
उसका क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत सरल हो।।

हमें आघ्यात्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा सामरिक सहित हर क्षेत्र में नायक की भूमिका निभानी होगी। यह शुभ संकेत है कि हम इस दिशा में अग्रसर भी हैं। आज स्थिति यह है कि भारतीय मस्तिष्क के बिना विश्व के किसी भी आधुनिक शिक्षण संस्थान, तकनीकी संस्थान तथा चिकित्सा संस्थान की कल्पना अंसभव है। प्रति वर्ष आई आई टी, एन.आई.टी, आई.आई.एम आदि संस्थानों से प्रशिक्षित हजारों छात्र विश्व के अधिकांश देशों में अपने ज्ञान का लोहा मनवाते हैं।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने चांद तक पहुंचने का लक्ष्य भी हासिल कर लिया है। हमारे नीति निर्माताओं को शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक निवेश करने की जरुरत है जिससे भारत अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक केंद्र के रुप में उभर सके तथा विश्वगुरु बनने की राह और आसान हो जाए।

जहां तक आर्थिक शक्ति की बात है तो भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है। यदि कुछ समस्याओं तथा बाधाओं जैसे भ्रष्टाचार, कालाधन तथा प्राकृतिक आपदा आदि से ठीक तरह से निपटा जाए तो वो दिन दूर नहीं जब भारत नंबर एक आर्थिक महाशक्ति होगा तथा हर जरुरतमंद देश की सहायता तथा निर्देशन कर सकता है। भारतीय राजनीतिक तंत्र को अन्ना हजारे तथा रामदेव जी की आवाज को ध्यान में रखकर भ्रष्टाचार तथा कालाधन रुपी रोग का समाधान खोजना होगा जिससे भारत विश्वगुरु की राह पर एक कदम और अग्रसर हो सके। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति की जरुरत है जिससे प्रति वर्ष की अपार जन–धन की क्षति को रोका जा सके तथा इसका उपयोग दूसरे क्षेत्रों में किया जा सके।

विश्वगुरु की राह में एक और बाधक तत्व है क्षेत्रीय अस्थिरता। हमें पड़ोसी देश जैसे चीन, पाकिस्तान आदि से संबंध मधुर बनाने होंगे। इसके लिए कूटनीतिक प्रयास के साथ – साथ सामरिक शक्ति भी बढ़ानी होगी। वैसे भारत सदैव ही शान्ति का पुजारी रहा है और आगे भी रहेगा परंतु तुलसीदास जी के शब्दों में – 'बिनु भय होहि न प्रिति'। अतः विश्वगुरु बनने के लिए सामरिक महाशक्ति बनना भी जरुरी है।

भारत विश्व का सबसे विशाल तथा सफल गणतांत्रिक देश है। इसका अनुकरण पूरा विश्व कर रहा है। विश्व के अनेक राजतांत्रिक देश जैसे नेपाल, मिश्र आदि भी इससे प्रभावित होकर इसकी शासन व्यवस्था को अपना रहा है। योग तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में तो भारत सदियों से विश्वगुरु की भूमिका निभा रहा है। विश्वगुरु की भूमिका में आज भारत विश्व के अनेक क्षेत्रों में शान्ति सहायता तथा नव निर्माण कार्य में राष्ट्र संघ का अभिन्न

अंग है। लेकिन यह एक विडंबना ही है कि भारत आज भी राष्ट्रसंध का स्थायी सदस्य नहीं है। हमें कूटनीतिक प्रयास कर राष्ट्रसंघ का स्थायी सदस्य बनना होगा। जिससे हम विश्व शान्ति स्थापना में और अधिक सक्रिय हो सकें।

हमारे लक्ष्य में बाधक अतिरिक्त तत्व जैसे आतंकवाद नक्सलवाद, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी इत्यादि से हमें सख्ती से निपटना होगा। हमें हमारी सामाजिक बुराइयां जैसे अंधविश्वास, दहेजप्रथा, जातिवाद इत्यादि से भी निपट कर एक सभ्य सामाजिक व्यवस्था कायम करनी होगी जिससे अन्य देश भी हमारी सामाजिक व्यवस्था का अनुकरण कर सकें। आंतरिक बाधाएं विश्वगुरु के उत्तरदायित्व से हमारा ध्यान बंटाती हैं।

भारत के विश्वगुरु बनने में युवा वर्ग के सहयोग की आवश्यकता है। एक देश का भविष्य उसकी युवा शक्ति है। हम ऊपर वर्णित सारी बाधाओं से दृढ़ता से छुटकारा पा सकते हैं। बस दृढ़ इच्छा शक्ति तथा समुचित कार्यान्वयन की आवश्यकता है। हमें भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता विश्व के अन्य क्षेत्रों में पहुंचानी होगी। इसके लिए हम फिल्म तथा मीडिया का सहारा ले सकते हैं। हमें पश्चिमी सभ्यता की नकल से बचना होगा तथा अपनी सभ्यता का प्रचार करना होगा।

इस तरह हम विश्व मानचित्र पर हर क्षेत्र में श्रेष्ठता साबित कर विश्व को शान्ति तथा मानवता की राह पर लाकर विश्वगुरु बना सकते हैं और गुनगुना सकते हैं :–

गांधी के सपनों का भारत प्यारा है और न्यारा है।
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा है।।

प्रियांश कुमार , दसवीं बी
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल,
मकरपुरा, बडोदरा, गुजरात

आओ! खुद को बदल कर देखें

रानी पदमावती की सुंदरता के चर्चे बहुत दूर तक फैले हुए थे। शायद यही सब कारण थे जिसके लिए प्राचीन काल में भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। तब के समय और आज के समय में बहुत अंतर आ गया है। इस स्थिति के हम ही जिम्मेदार हैं। आज हम अपने अतीत को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। यह बातें शायद हमारी आज की पीढ़ी को सुनने में भी अजीब लगे परंतु यह बिल्कुल सच है।

भारत ऐसा पहला देश है जिसमें कला, सभ्यता और संस्कृति ने सबसे पहले जन्म लिया। सुरों का ज्ञान भारत ने ही विश्व को कराया था। भारत में वे राग और मल्हार गाए जाते थे जिनसे दीपक प्रज्ज्वलित हो जाते थे। ऐसी संस्कृति जो किसी भी बाहर वाले को अपना बना ले, भारत की ही थी। हमारे यहां से ज्ञान लेने के लिए चीन के विशाल गुरु दार्शनिक मीलों यात्रा करके तक्षशिला के विश्वविद्यालय से ज्ञान अर्जित करने आए थे।

हमारे यहां ही गोतम बुद्ध व महावीर आदि का जन्म हुआ जिन्होंने विश्व को शांति का पाठ पढ़ाया व उन पर जीवन भर अमल भी किया। स्त्रियों में लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, जोधाबाई जैसी शक्तियों ने अपना लोहा पूरी दुनिया से मनवाया था। साथ ही साथ गुरुओं में भी मैत्रेयी, गार्गी, कात्यायनी, भामनी तथा गौतमी आदि स्त्रियों ने अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाया था।

रानी पदमावती की सुंदरता के चर्चे बहुत दूर तक फैले हुए थे। शायद यही सब कारण थे जिसके लिए प्राचीन काल में भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। तब के समय और आज के समय में बहुत अंतर आ गया है। इस स्थिति के हम ही जिम्मेदार हैं। आज हम अपने अतीत को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। यह बातें शायद हमारी आज की पीढ़ी को सुनने में भी अजीब लगे परंतु यह बिल्कुल सच है।

आज की पीढ़ी इस बात को कैसे स्वीकार कर सकती है कि किसी समय में हमारे दश को सोने की चिड़िया कहा जाता था। बाबर अपने सैनिकों को यह कहकर भारत लाया था कि वह उन्हें धरती पर जन्नत दिखाएगा जो भारत में है। वह अपने सैनिकों को घुमाने के लिए लेकर आया था परंतु वह यहीं का होकर रह गया।

अब मुझे खुद किताबों में पढ़कर ऐसा नहीं लगता की भारत कभी ऐसा रहा होगा। मुझे तो सब जगह बेईमानी, चोरी, अपना माल जेब में भरो, दूसरे का हक छीन लो, किसी को आगे मत बढ़ने दो जैसा माहौल ही दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में कोई कैसे विश्व गुरु बन सकता है ?

भारत को अगर विश्व गुरु बनना है तो उसे हमें एक परिवार की तरह मानना होगा और इसकी सबसे छोटी कड़ी जो की एक क्लास या कक्षा है, जिसमें मैं पढ़ता हूं अगर हम कक्षा को ठीक ढंग से चलाएंगे तो परिणाम स्वरुप एक कक्षा सही होगी फिर स्कूल, बढ़ते–बढ़ते एक इलाका, नगर, एक शहर, एक राज्य और अंत में एक देश सुधरेगा।

अब आप इसकी शुरुआत कैसे करेंगे, मैं आपको बताता हूं। पहले तो हमें अपनी कक्षा से भेदभाव को निकालना होग। अगर हम इस को करने में सफल हो जाते हैं तो हमारी कक्षा में एकता की झलक तो देखने को मिलेगी ही, साथ ही हमारा अभियान का पहला चरण भी सफल हो जाएगा। इसके बाद हमें अपनी कक्षा में दूसरे की

काट करना छोड़ना होगा जैसे कि दूसरे के नंबर कटवाना, किसी की चुगली करना आदि जैसे गलत कामों को अंत देना होगा।

अगर हम किसी को भी उसकी गलत चीजों को सुधारना बताएं तो यह ज्यादा लाभकारी होगा। फिर हम आगे बढ़ने के साथ–साथ दूसरों की टांगें भी खीचते रहते हैं और आगे जाकर फैल जाते हैं और जिंदगी भर इस गलती का पालन करते हैं। इस प्रकार समाज में जो नींव बचपन से ही दूसरे को काटकर आगे बढ़ने व दूसरे के दुख को देखकर खुश होने की मानसिकता बनकर रह गई हैं, इस वजह से हमारा देश तरक्की नहीं कर पाता।

दूसरी बात हमें आसपास भी किसी भी जरुरतमंद की सहायता करनी चाहिए तथा इस बात के लिए हमें उन्हें मनाना चाहिए कि वे हमारे लिए किसी का हक ना मारे तथा भ्रष्टाचार में संलिप्त न हो। कहीं हमारे कारण या हमारी जरुरतों को पूरा करने के लिए हमारे माता–पिता कुछ काम गलत तो नहीं कर रहे। बड़े होकर हम यह खुद प्रण लें की अपने कर, अपने भुकतान तथा अपनी आवश्यकताओं को इतना कभी न बढ़ाएं कि हमें गलत काम करने पड़ें। यह काम मुश्किल जरुर है पर असंभव नहीं। इसके लिए हमें किसी को भी समझाने की जरुरत नहीं हैं। कोई अनशन या मार्च भी नहीं निकालना है। केवल एक छोटा सा प्रण लेना है। इसके लिए हमें किसी भी बड़े को समझाना नहीं है। अपने विद्यालय से अच्छी शिक्षा प्रप्त करके हम जो भी व्यवसाय, नौकरी या कुछ भी काम करें, अपनी ईमानदारी व दूसरों की मदद करते हुए करें। ईमानदारी से इस प्रकार धीरे–धीरे भारत विश्व गुरु बन पाएगा।

यह सब हम बच्चों के ही हाथ में है। हम अपने से बड़ों को बदलने का जोखिम तो नहीं उठा सकते मगर खुद को बदलकर तथा अपने सहपाठी की मदद करके एक सभ्य समाज की नींव जरुर रख सकते हैं। मैं चाहता हूं कि इस की शुरुआत आज से और अभी से हो ताकि विश्व गुरू बनने में ज्यादा समय न लगे।

वासु गुप्ता आठवीं ए
हैप्पी होम पब्लिक स्कूल
बी–4, सैक्टर–11, रोहणी, दिल्ली

आत्मनिर्भरता से ही होगा सपना साकार

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व क्रांति आई। पहले एक जिले में एक विद्यालय हुआ करता था परंतु अब हर गांव में विद्यालय खुल चुके हैं। 1947 में भारत की साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी जो अब 2011 की जनसंख्या के अनुसार 74.04 प्रतिशत पर पहुंच गयी है। देश में कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान खुल चुके हैं। हससे ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षा को बहुत बढ़ावा दिया जा रहा है।

एक समय था जब भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। वह व्यापार, शिक्षा, कला, संस्कृति, आर्थिक व्यवस्था व साहित्य में चरम उत्कर्ष पर था। इसका यश देश–विदेश में फैला था तथा वह विश्व का गुरु था। भारत में एक से बढ़कर एक शिक्षण संस्थान थे। तक्षिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों में देश–विदेश से बड़े–बड़े विद्वान शिक्षा ग्रहण करने आते थे। हमारे गुरुकुलों की ख्याति भी देश–विदेश में थी। इनमें छात्रों का सम्पूर्ण विकास होता था।

मुगल साम्राज्यों के हमलों ने भारत को बहुत नुकसान पहुंचाया। ज्ञान के केंद्रों को आगजनी द्वारा जलाया गया जिससे समाज की अवनति का मार्ग प्रशस्त हो गया। निरक्षरता का विस्तार होता गया। मुगल साम्राज्य के बाद भारत करीब तीन सौ वर्षों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। पराधीनता के कारण शिक्षा का प्रचार थम–सा गया। भारत सोने की चिड़िया से एक जर्जर अर्थव्यवस्था में तब्दील हो गया।

अंधेरे के बाद उजाला जरुर आता है। 1994 में भारत की स्वतंत्रता के बाद उसके संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा पंडित जवाहर लाल नेहरु ने इस संपूर्ण विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण फर्ज अदा किया। भारत कृषि प्रधान देश है। इसको ध्यान में रख उन्होंने रुस के साथ करार किया जिसके तहत भारत में कई बांधों का निर्माण किया गया।

बांधों के निर्माण से सिंचित क्षेत्र में इजाफा हुआ तथा मानसून पर निर्भरता कम हुई। हरित क्रांति ने इस पैदावार को और बढ़ा दिया। अब भारत विश्व में चावल व गेहूं के उत्पादन में चीन के बाद दूसरे नंबर पर है। मक्का के उत्पादन में वह छठे स्थान पर है। हमारे छत्तीसगढ़ को तो 'धान का कटौरा' कहा जाता है।

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व क्रांति आई। पहले एक जिले में एक विद्यालय हुआ करता था परंतु अब हर गांव में विद्यालय खुल चुके हैं। 1947 में भारत की साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी जो अब 2011 की जनसंख्या के अनुसार 74.04 प्रतिशत पर पहुंच गयी है। देश में कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान खुल चुके हैं। हससे ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षा को बहुत बढ़ावा दिया जा रहा है।

आजादी के बाद स्वास्थ्य सेवाओं में भी जमीन आसमान का फर्क आ गया है। भारत में पहले कई महामारियों का प्रकोप था। सरकार द्वारा चलाए गए अभियानों ने इनका अस्तित्व काफी हद तक मिटा दिया है। कई तरह की उन्नत मशीनों ने दुर्लभ्ज्ञ उपचारों को सुलभ बना दिया है। 1947 में शिशु मृत्यु दर 30 था जो अब नीचे 6 पर आ गया है। औसत आयु दर भी बढ़ी है। 1947 में यह 32 वर्ष थी जो अब 67 वर्ष हो गई है।

आवागमन साधनों का भी तेजी से विकास हुआ है। अभी हाल में ही उद्‌घाटित 165 कि.मी. लंबा यमुना एक्सप्रेस वे इसका साक्षात उदाहरण है। गांव–गांव में भी सड़कें बन चुकी हैं। वायु–मार्ग में भी क्रांति आई है। अब कई शहर हवाई मार्ग से जुड़ चुके हैं। 1853 में मुम्बई और पूणे के बीच पहली रेलगाड़ी चली थी। समूचे देश में अब पटरियों का जाल बिछ चुका है। दिल्ली एवं कोलकाता में मेट्रो–ट्रेन की सुविधा भी है।

देश की सुरक्षा में तैनात सेना उसकी रीढ़ की हड्डी होती है। भारत पहले सैन्य ताकत में काफी कमजोर था पर अब उसने पूरे विश्व को अपनी शक्ति से अवगत कराया है। भारत की थल सेना विश्व की तीसरी सबसे बड़ी सेना है तथा सैन्य खर्च में भारत 8वें स्थान पर है।

आज के समय में भारत एक विकासशील देश है। इसे विकसित देशों की सूची में लाने के लिए तथा विश्व का गुरु बनने के लिए हमें कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे।

भारत में 70 प्रतिशत लोग जीवन यापन के लिए खेती पर निर्भर है। इसलिए सिंचित क्षेत्र में विस्तार करना आवश्यक है। एक भावी योजना के तहत सरकार को देश की सारी नदियों को आपस में जोड़ना चाहिए जिससे अनाज की पैदावार में भारत समृद्ध बने। हमें पारंपरिक तरीकों को छोड़ आधुनिक यंत्रों को अपनाना होगा ताकि भारत का हर किसान सुखी एवं संपन्न रहे।

जब तक किसी देश की स्वास्थ्य सेवा दुरुस्त नहीं रहेगी तब तक देश भी बीमार रहेगा। हमारे देश में हजारों अस्पताल हैं, फिर भी हर साल न जाने कितने गरीब दवाइयां न खरीद पाने के कारण काल के ग्रास बन जाते हैं। देश में सर्वसुविधायुक्त अस्पताल स्थापित किए जाने चाहिए, जिससे सब लोग स्वस्थ एवं प्रसन्न रहकर देश के विकास में अपना योगदान दें। खेल हमेशा से भारत का पिछड़ा हुआ पहलू रहा है। लंदन ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन इसका उदाहरण है।

हमारे देश की रक्षा–व्यवस्था आंकड़ों के हिसाब से बहुत मजबूत है। फिर यह हमारी समझ से परे है कि देश में बार–बार बम धमाके क्यों हो रहे हैं ? जरुरत है रक्षा–व्यवस्था दुरुस्त करने की। सेना को उन्नत हथियार प्रदान किए जाने चाहिए।

हमें भारत को एक आत्मनिर्भर देश बनाने का प्रयास करना चाहिए। जब तक भारत के नागरिकों को जीवन की मूलभूत सुविधाएं नहीं प्राप्त होंगी तब तक वह पिछड़ा ही रहेगा। जरुरत है इन सब योजनाओं को अमल में लाने की जिससे भारत फिर से विश्व का गुरु बन सके तथा इसकी ख्याति सारे जहां में फैली रहे।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।

मयंक नेमा दसवीं ई
दिल्ली पब्लिक स्कलू, भिलाई,
छत्तीसगढ़

अन्तःकरण से बनें कर्तव्य निष्ठ

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त हुई परंतु हम आज भी इस परतंत्रता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये हैं। आज भी हम अंग्रजों की शिक्षा पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को ही सर्वोतम माना जाता है। हमें अपनी इस आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना होगा क्योंकि हमारी संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, इश्वरोन्मुखी है। इसके लिए प्रत्येक भारतीय को स्वधर्म को पहचानना होगा, उसे अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा।

भारत शब्द का अर्थ है 'भा'– अर्थात् ज्ञान और 'रत' का अर्थ है लगा हुआ। जिस देश का नाम ही यह संकेत कर रहा हो कि इस देश के वासी निरंतर ज्ञानार्जन में लगे रहते हैं उस देश को विश्व गुरु बनना सर्वथा उचित ही है। कहा भी गया है– ''यथा नाम तथा गुण'' किसी भी व्यक्ति का जैसा नाम होता है उसी के अनुरुप उसमें गुण भी पाये जाते हैं।

यदि हम भारत देश के स्वर्णिम अतीत पर दृष्टिपात करें तो यह पायेंगे कि भारत में ऋषि–महर्षि तथा प्रखर चिंतकों की कभी कहीं भी नहीं रही। इन ऋषियों – महर्षियों और चिंतकों ने अपने ज्ञान एवं चिंतन की अजस्त्र धारा में भारत को समृद्ध बनाया। भारतीय चितंकों के चिंतन का ही यह सुफल था कि हमारे भारत में ही वेद–पुराण, उपनिषद, रामायण एवं कालिदास जैसे विश्व–प्रसिद्ध कवियों द्वारा लिखे काव्य एवं नाटक पूरे विश्व को सत्य एवं प्रशस्त मार्ग को दिखाने में समर्थ सिद्ध हुए।

वेदों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं विज्ञान की बातें समूचे विश्व को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। पूरे विश्व का सबसे पुराना ग्रंथ है तो वह ऋग वेद ही है जिसमें विश्व के सभी मानवों के लिए सदोपदेश प्राप्त होते हैं जिनके द्वारा हम समूचे विश्व को एक सूत्र में बांधने में आज भी समर्थ हो सकते हैं तथा– यत्र विश्वम् भवत्येक नीडम्, का संदेश देकर विश्व मैत्री एवं सद्भावना का मनोरम् परिवेश भी बना सकते हैं।

हमारे इसी भारत देश में न्याय वेदान्त, मीमान्सा, व्याकरण, साहित्य, साख्ययोग, जैन, बौद्ध चार्वाक आदि विभिन्न दर्शनों का उदय हुआ। इन दर्शनों के माध्यम से भारत ने समूचे विश्व को ज्ञान की विभिन्न विलक्षण धाराओं में अवगाहन करने का अवसर प्रदान किया।

भारत का ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्वेद, अंतरिक्ष विज्ञान जो भास्कराचार्य, आर्य भट्ट, वराहमिहिर, गौतम कणाद् आदि महापुरुषों के द्वारा गंभीर चिंतन के माध्यम से उच्च शिखर प्राप्त हुआ, जिसे समूचा विश्व भारत को विश्वगुरु मानने के लिए विवश था।

यह हमारे भारत का स्वर्णिम युग था। इस युग में हमें अपने देश के चिंतकों की मेधा एवं प्रज्ञा पर गर्व होता था। समूचा विश्व भारत एवं भारतवासियों का अनुकरण करने में गर्व का अनुभव करता था। इसकी परा अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु इस पुण्य भूमि में शिष्य भाव से आते थे। इसी भूमि से ज्ञान दीप ले त्यागी, तपस्वी, विज्ञान साधक, आचार्य विदेशों में संस्कृति के अंधियारे को दूर करते थे।

इतना ही नहीं, इसके गार्गी, अपाला, विद्योत्तमा आदि महिलाएं भी ज्ञान के विषय में पुरुषों से किसी भी तरह कम नहीं थीं। कालान्तर में समय बदला, भीषण युद्ध हुए गृहयुद्ध भी व ब्रह्मा आक्रमण भी। फलतः भारत की क्षात्र शक्ति निर्बल हुई, बुद्धि शक्ति अरक्षित हुई, अर्थतंत्र ध्वस्त हुआ, लोकजीवन दमित व अस्त–व्यस्त हुआ। भारत का स्थूल कलेवर पराजित हुआ था, मन व आत्मा नहीं।

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त हुई परंतु हम आज भी इस परतंत्रता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये हैं। आज भी हम अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को ही सर्वोतम माना जाता है। हमें अपनी इस आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना होगा क्योंकि हमारी संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, इश्वरोन्मुखी है। इसके लिए प्रत्येक भारतीय को स्वधर्म को पहचानना होगा, उसे अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा।

हमारी परमपरागत शिक्षा में गुरु–शिष्य का सम्बन्ध अत्यंत संवेदनशील तथा आत्मीय होता था। शिष्य के प्रति स्नेह गुरु का तथा गुरु के प्रति श्रद्धा शिष्य का आवश्यक गुण था क्योंकि गुरु से जीवन को सफल एवं विकासोन्मुख बनाने का ज्ञान मिलता था। चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अर्जुन, द्रोणाचार्य, एकलव्य आदि गुरु–शिष्य परम्परा के उदात्त उदाहरण हैं।

वर्तमान में भारत जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज हम आर्थिक–औद्योगिक, राजनीतिक, तकनीकी हर क्षेत्र में विकासोन्मुख हैं। आज हमारा भारत एक विश्व की मानी हुई राजनैतिक शक्ति बनकर उभर रहा है।

वैज्ञानिक आविष्कारों, अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने गौरवमयी स्वर्णिम अतीत को स्मरण रखते हुए अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए अपने कर्तव्यों का शुद्ध अंतःकरण से पालन करते रहें तो अवश्य ही हमारा देश पुनः अपने विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगा।

अन्वीक्षा दीक्षित, ग्यारहवीं ए
मानव भारती इंडिया इन्टरनैशनल स्कूल,
पंचशील पार्क, दिल्ली

समस्या को उखाड़ फेंके

हमारा भारत समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। जनसंख्या–विस्फोट उनमें से सर्वाधिक भीषण है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हर नागरिक को आवश्यक है कि वह अपने परिवार को सीमित रखें। एक से अधिक संतान को जन्म न दे तथा लड़का–लड़की को समान मानने से भी जनसंख्या नियंत्रित हो सकती है।

भारत वर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है जिसका भौगोलिक सौंदर्य अति शोभनीय है इसकी सभ्यता और संस्कृति राष्ट्रीय एकता की भावना जन्म–जन्मांतर से चली आ रही है और चलती रहेगी। हमारे देश को सकारात्मक गुण, सोच व ज्ञान के कारण जगद्गुरु तथा धन–वैभव के कारण 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था।

यदि आज के भारत की स्थिति की और ध्यान दिया जाए तो वह बिगड़ती जा रही है। भारत को जनसंख्या वृद्धि, असाक्षरता, बेरोजगारी, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद आदि जैसी समस्याओं ने घेर लिया है। हमारा देश उन्नति का पथ त्याग अवनति की राह पर बढ़ता जा रहा है।

अब वक्त आग गया है कि हम अपने देश को उन्नति का मार्गदर्शन कराएं। अपने देश में प्रगति करें। अपने देश को विकासशील देश से विकसित देश का रुप दें। भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए हमें अपने देश की समस्याओं को जड़ से निकाल कर फेंकना होगा व ज्ञान, सकारात्मक सोच, सरल उपायों के पौधे लगाने होंगे जिससे हमारा देश प्रगति की और अग्रसर हो।

हमारे देश की विविध समस्याएं और उचित समाधान इस प्रकार हैं :–

बढ़ती जनसंख्या : हमारा भारत समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। जनसंख्या–विस्फोट उनमें से सर्वाधिक भीषण है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हर नागरिक को आवश्यक है कि वह अपने परिवार को सीमित रखे। एक से अधिक संतान को जन्म न दे तथा लड़का–लड़की को समान मानने से भी जनसंख्या नियंत्रित हो सकती है।

असाक्षरताः जहां विश्व इतनी तरक्की कर रहा है वहां हमारा भारत असाक्षरता के दलदल में फंसा हुआ है। असाक्षरता का प्रमुख कारण जनसंख्या, गरीबी व बेरोजगारी है। हमें इसके लिए जागरुकता बढ़ानी होगी जिससे कि भारत के सभी बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर बेराजगारी, गरीबी जैसी समस्याओं का शिकार न बनें। हमें हर गांव में सरकारी विद्यालय बनवाने चाहिए व शिक्षा के श्रेष्ठतम संस्थान बनाकर शिक्षा का सही ढ़ंग से प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

बेरोजगारी : बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या। लोगों के पास हाथ है, पर काम नहीं है, प्रशिक्षण है, पर नौकरी नहीं है। अगर हमें अपने देश से बेरोजगारी को कम करना है तो फिर इसके लिए हमें व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, रोजगार के नए अवसरों के लिए हमें व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू करना होगा।

भ्रष्टाचार : आज सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार की जड़ें और गहरी होती जा रही हैं। भ्रष्टाचार मनुष्यों की बदनीयती के कारण बढ़ा है और उसमें सुधार करने से ही यह ठीक होगा। प्रशासन को स्वयं शुद्ध रहकर नियमों का कठोरता से पालन करना होगा। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड़ दिया जाना चाहिए ताकि शेष सबको बाध्य होना पड़े। समाज के नियमों का पालन करने के लिए परिवार तथा विद्यालय में संस्कार दिए जाने चाहिए।

मासिक आयकर : हमारे भारत के अधिकारी, उद्योगपति मासिक आयकर को छिपाते हैं। यदि वे 80 प्रतिशत कमाते है तो 25 प्रतिशत दिखाते हैं। बाकि के बचे 55 प्रतिशत की वे चोरी करते हैं, वे अपना पैसा सरकार से छिपाते हैं। लेकिन ऐसा कब तक चलेगा। हमें लोगों को इसके प्रति जागरुक करना होगा और सरकार को भी सचेत होना पड़ेगा जिससे कि राष्ट्र में उन्नति हो सके। क्योंकि राष्ट्र में कोई भी प्रगति होती है तो वह आयकर की मदद से ही की जाती है।

कृषि व प्राकृतिक संसाधन : हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अधिक उत्पादन व अच्छी फसल के लिए हमें उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग, अत्याधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग, सरकार द्वारा कृषि उपजों का मूल्य निर्धारण करना, सिंचाई सुविधाओं का विकास कराने आदि जैसी सुख–सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। हमें भारत के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करना चाहिए, जिससे की हमारी पीढ़ियों को हानि न हो पाए और वे अपना व अपने बच्चों का पालन–पोषण अच्छे से कर पाएं।

गरीबी एवं आतंकवाद : हमारे देश में गरीबी के मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी व असाक्षरता है। इससे देश में अशांति, भ्रष्टाचार, चोरी, हिंसा का जन्म होता है। हमें गरीबी को दूर करने के लिए घोर परिश्रम, संघर्ष और प्रगति की चाह, सुनियोजित योजनाएं बनानी चाहिए। गरीबी के कारण हमारे देश में आतंकवाद व हिंसा जैसी भावनाओं ने जन्म ले लिया है। हमें आतंकवाद को अपने देश से मिटाना होगा। इसके लिए हमें हिम्मत ही नहीं, उसे कुचलने के लिए सावधानी, कुशलता, और तत्परता भी चाहिए। भारत को कुछ ठोस उपाय खोजने चाहिए, तभी एक दिन वह विश्व, का आतंकमुक्त सुशांत देश बन सकेगा।

शिक्षा प्रणाली में बदलाव : हमें भारत की शिक्षा को पूर्ण रुप से विकसित करना होगा, हमें एक रुपता लाने, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को जनान्दोलन बनाने, सभी को शिक्षा सुलभ कराने, प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय जैसे आधुनिक विद्यालयों की स्थापना करने, शिक्षा को व्यवसायपरक बनाने, अखिल भारतीय प्रौद्योगिक शिक्षा परिषद् को सुदृढ करने तथा खेलकूद, शारीरिक शिक्षा योग को बढ़ावा देने एवं सक्षम मूल्यांकन की प्रतिक्रिया अपनाने के प्रयास शामिल हैं।

यदि हम उपर्युक्त सुझावों का उचित ढ़ग से पालन करेंगे तभी भारत पुनः विश्व गुरु बनने में समर्थ हो पाएगा। हमारा देश का यह नारा 'विश्व विजयी तिरंगा प्यारा, झंड़ा ऊंचा रहे हमारा' फिर से हर गांव, कस्बे, शहर व प्रदेश में गूंज उठेगा।

आशुतोष यादव आठवीं
बालबाड़ी पब्लिक स्कूल,
मोदी नगर, उत्तर प्रदेश

मिटाना ही होगा आतंकवाद का नासूर

साम्प्रदायिक एकता का स्वप्न अभी साकार नहीं हो पाया है। विचारों में मतभेद और पूजा पद्धतियों में विविधता हमारे देश में नई बात नहीं है किंतु इसके कारण खून–खराबा जरुर नई चीज है। इन सब चीजों से ऊपर है मानवता का उदान्त दृष्टिकोण। मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर संप्रदाय तथा सांप्रदायिकता से ऊपर उठा जा सकता है। राष्ट्र का प्रबल भाव भी इसमें सहायक होगा।

भारत देश हमारे लिए स्वर्ग के समान सुंदर है। इसने हमें जन्म दिया। इसके अन्न–जल से हमारा पालन–पोषण हुआ, इस देश का नाम भारतवर्ष है। आधुनिक भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ है। उत्तर में हिमालय का पर्वत भारत माता के सिर पर हिममुकुट के समान सुशोभित है तथा दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को निरंतर धोता है।

भारत में प्रायः सभी धर्मों के लोग परस्पर मिल–जुल कर रहते हैं। यहां सभी धर्मावलंबियों को अपनी–अपनी उपासना पद्धति तथा सामाजिक व्यवस्था का अनुसरण करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। भारत का आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है जिसका अर्थ है– सारा संसार एक कुटुंब के समान है।

प्राकृतिक सुंदरता की दृष्टि से भारत एक अद्‌भुत देश है। यहां हिमालय का पर्वतीय प्रदेश है, गंगा–यमुना का समतल मैदान है, पर्वत एवं समतल मिश्रित दक्कन पठार है, रेगिस्तान राजस्थान का। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के भूमि भाग यहां विद्यमान हैं और विभिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है। यह वह देश है, जहां समय–समय पर छह ऋतुएं आती हैं और अपनी–अपनी विशेषताओं से इस देश को अनुग्रहीत करती हैं।

हमें अपने देश में सभी नागरिकों को सभी अन्य सुविधाएं बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध करानी हैं। स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना देश का कर्तव्य है। हमें अपने व्यवहार में पारदर्शिता लानी होगी, हमारा कर्तव्य एक खुली किताब की तरह हो, जिसमें कोई छल–कपट न हो।

देश व्यक्तियों से मिलकर बना है, जब व्यक्ति का नैतिक पतन हो जाता है। तब देश का भी नैतिक पतन अवश्यम्भावी है। वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि नेताओं और अफसरशाहों का नैतिक पतन पराकाष्ठा पर पहुंच गया है इससे हमारे देश को विश्व में कितना अपमान झेलना पड़ा है, इसे ये लोग नहीं समझते। आज कोई भी नेता जनता के विश्वास के योग्य नहीं रह गया है। उन पर से लोगों का विश्वास ही उठ गया है। यह स्थिति एक लोकतांत्रिक देश के भविष्य के लिए बड़ी चिंताजनक है।

पहले नेता देश को सर्वोपरि समझा करते थे, जबकि आजकल उनका स्वाथ ही प्रमुख रह गया है। देश के सम्मान की रक्षा के लिए नैतिकता को पुनः स्थापित करना होगा। इसे समाज में मान्यता देनी होगी। वर्तमान समय में अनेक राजनेताओं का कितना नैतिक पतन हो गया है उनके घोटालों से यह सामने आ रहा है। शर्मनाक घटनाओं से देश की छवि बिगड़ती है। देश के नागरिकों का मनोबल गिरता है। हमें देश के नैतिक पतन को रोकना ही होगा।

वर्तमान समय में सर्वत्र अनुशासनहीनता दृष्टिगोचर होती है, शिक्षण संस्थाएं अपनी पवित्रता खोती जा रही है। देश की अन्य समस्याओं के साथ–साथ छात्र वर्ग की अनुशासनहीनता भी एक विकट समस्या बनती जा रही है, दिन–प्रतिदिन की हड़तालें, स्कूल–कॉलेज के फर्नीचरों को नष्ट करना, बसों को जलाना, शिक्षकों के प्रति असम्मान प्रदर्शित करना, अनुशासनहीनता नहीं तो और क्या है ?

भारतीय संस्कृति में सदैव से बहुजन हिताय को महत्व दिया जाता रहा है। परोपकार शब्द की रचना भी पर+उपकार से हुई है अर्थात दूसरों की भलाई करना। परोपकार में स्वार्थ का दंश नहीं रहता। दूसरों की निःस्वार्थ सेवा ही परोपकार की श्रेणी में आती है। जिस कार्य में स्वार्थ छिपा हो, उसे परोपकार नहीं कहा जा सकता है।

भारत इस समय गरीबी की समस्या से उलझा हुआ है। वह गत 40–50 वर्षों से इस समस्या से मुक्त होने का प्रयास भी कर रहा है। आर्थिक स्वतन्त्रता पाना भारत का लक्ष्य रहा है। प्रयास कर सुनियोजित ढ़ंग से अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है। प्रत्येक देशवासी को रोजगार, वस्त्र, भोजन एवं आवास जुटाने का लक्ष्य पूरा होते ही गरीबी छूमंतर हो जाएगी।

भारत सरकार शिक्षा–पद्धति में मूलभूत परिवर्तन करने का प्रयास कर रही है। नई नीति लागू करने की तैयारियां जोर–शोर से की जा रही है। नवोदय विद्यालय की जो स्थापना अब की जाती है उनका परिणाम सुखद तो 21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिलना शुरु हो गया है। इन विद्यालयों से प्रतिभावान छात्र देश की काया पलटने में पूर्णतः समर्थ होंगे।

भारत में औद्योगिक विकास की दर भी अभी तक कम है, इस दिशा में प्रयत्न जारी है। हमारे उद्योग पूरी गति के साथ उत्पादन कर सकेंगे, उद्योगों की नई इकाइयां स्थापित की जा रही हैं आशा की जाती है कि उद्योगों का जाल बिछ जाएगा और हम विश्व–बाजार की प्रतिस्पर्धा में टिक सकेंगे।

भारत की एक विशेषता है आपस में भाईचारे की भावना रखना। हमारी संस्कृति में आपसी समझदारी को विशेष महत्व दिया गया है। पाश्चात्य भौतिकता ने अपने प्रभाव स्वरुप इस भाईचारे में सेंध लगाने की शुरुआत अवश्य की है पर यह हमारी मजबूत नींव को तोड़ने में सफल नहीं है। अब साम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों को भड़काने की कोशिश की जाती है। अब हम इस साम्प्रदायिकता के बारे में विचार कर लें।

साम्प्रदायिक एकता का स्वप्न अभी साकार नहीं हो पाया है। विचारों में मतभेद और पूजा पद्धतियों में विविधता हमारे देश में नई बात नहीं है किंतु इसके कारण खून–खराबा जरुर नई चीज है। इन सब चीजों से ऊपर है मानवता का उदान्त दृष्टिकोण। मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर संप्रदाय तथा सांप्रदायिकता से ऊपर उठा जा सकता है। राष्ट्र का प्रबल भाव भी इसमें सहायक होगा।

आज विश्व आंतकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आतंकवाद का सबसे क्रूर हमला 2001 में अमेरिका पर हुआ जिसने सारे विश्व को हिलाकर रख दिया। इसकी परिणति अफगानिस्तान के युद्ध से शुरु हुई। इसी घटना के फलस्वरुप अमेरिका को आतंकवाद का घिनौना चेहरा वास्तविक रुप में नजर आया।

आतंकवाद के कारण देश की स्थिति का पता चलेगा। आंतकवाद की समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है, तदर्थवाद से काम चलने वाला नहीं है, आंतकवादी संगठनों को निर्दयतापूर्वक कुचला जाना आवश्यक है। इसके साथ विभिन्न संगठन स्तर पर अनेक बार शांति वार्ताएं हो चुकी हैं जिनका परिणाम शून्य है। भविष्य में भी इनसे कुछ विशेष उम्मीद नहीं की जा सकती है। अतः इस प्रकार समस्या का समाधान खोजना अंधेरे में भटकना है।

अधिकांश भारतीय चाहते हैं कि हमारी सेनाओं को गुलाम कश्मीर और पाकिस्तान में चल रहे प्रशिक्षण शिविरों पर हमला कर नष्ट कर देना चाहिए। आंतकवादी गतिविधियों के प्रति किसी भी प्रकार का नम्र रुख अपनाना आत्महत्या के समान होगा। आंतकवाद के नासूर का इलाज करना ही होगा। इस काम के लिए हमें दृढ़संकल्प की आवश्यकता है। आतंकवाद देश की प्रगति की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसे नष्ट कर भारत को विश्व गुरु बनाना हमारा परम कर्तव्य है।

भावना दसवीं बी
मोतीराम मैमोरियल गर्ल्स सी.सै. स्कूल,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

प्रत्येक नागरिक बने जागरुक

राष्ट्र की पहचान उसकी जनता और सरकार से होती है। देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा। हमें एक सफल, ईमानदार और जनहित के बारे में सोचने वाली सरकार बनानी होगी। भ्रष्ट से शिष्ट नेता बनाने होंगे। हमारे देश की सरकार को कर्तव्यनिष्ठ और लक्ष्य के प्रति समर्पित बनाना पड़ेगा। हर नागरिक को इसके लिए जागरुक होना आवश्यक है।

भारत वह देश है जिसने समस्त विश्व को सभ्यता और संस्कृति से अवगत कराया, जिसने सबको एकता और वसुधैव कुटुम्बकम की शिक्षा दी। इसके समान गौरवन्वित और प्रतिष्ठित देश शायद ही कोई और होगा। भारत से हर कला का उद्‌भ और विकास हुआ है। शून्य से लेकर कामसूत्र तक हमारे पूर्वजों की देन है। शल्यक्रिया, चिकित्सा और गणित की उलझनें भी हमने ही सुलझाई हैं।

दुनिया को हमने तक्षशिला और नालंदा दिए और आर्यभट्‌ट, बराहमिहिर, चाणक्य और शिक्षावाद तब सारी दुनिया के लिए कौतूहल बन गये थे। वह भारत देश ही है जहां प्रकृति ने धन, शक्ति और सौंदर्य का दान मुक्तहस्ता होकर किया है या दूसरे शब्दों में जिसे प्रकृति ने बनाया ही इसलिए हो कि उसे देखकर स्वर्ग की कल्पना साकार की जा सके।

भारत विश्वगुरु था, इसकी परा–अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु–मुमुक्षु इस पुण्य भूमि में शिष्य भाव से आते थे। इसी भूमि से ज्ञान दीप ले त्यागी, तपस्वी, विद्वान, साधक, आचार्य विदेशों में जाते और ज्ञान–प्रकाश से वहां की संस्कृति के अंधियारे को दूर करते थे। कालांतर में भीष्ण युद्ध हुए, गृहयुद्ध भी व बाह्‌य आक्रमण भी। फलतः भारत की क्षात्र शक्ति निर्बल हुई, बुद्धि शक्ति अरक्षित हुई, अर्थतंत्र ध्वस्त हुआ, लोकजीवन दमित व अस्त–व्यस्त हुआ। भारत का स्थूल कलेवर पराजित हुआ था, मन व आत्मा नहीं।

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात प्राप्त तथाकथित स्वतंत्रता भी दिखावे की सिद्ध हुई। आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना ही होगा, क्योंकि इस संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, ईश्वरोन्मुखी है। किंतु यह अपनी स्वदिशा में गतिमान कैसे हो? कैसे यह विश्वगुरु के पद पर विराजमान हो ? इसके लिए प्रत्येक भारतीय को अपने स्वधर्म को पहचानना होगा। उसे अपनी संस्कृति से एक लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा। उसे स्वकर्म से उसे जगदगुरु की शिष्य भाव से अर्चना करनी होगी। यों शिष्य भाव की अनगिनत धाराएं मिलकर एक प्रबल पवित्र प्रवाह बनेगा और तब फिर यह संस्कृति विश्वगुरु रुपिणी गंगा होगी।

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनका सर्वोत्तम उपयोग किस तरह किया जा सकता है यह ज्ञान होना आवश्यक है। जागरुकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही सकता है। अभी तक हमने देश के असीम भंडार को पहचाना ही नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि अपनी इस संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक–ठीक जानकारी हम प्राप्त करें।

हमारे भारतवर्ष में जहां सच्चाई और ईमानदारी लोगों के आदर्श बनते हैं, वहीं दूसरी और छल, कपट और भ्रष्टाचार का भी बोलबाला है। हर देश की ताकत उसकी युवा ही तो होते हैं। यदि हमने अपनी युवापीढ़ी को हर क्षेत्र में चाहे वह विज्ञान हो या साहित्य, कृषि हो या वायु, भू हो या जल, शिष्टाचार हो या आदर्श, गुण एवं विचार में सक्षम बना दिया तो अवश्य ही हमारा देश पुनः उस प्रगति की राह पर चल पड़ेगा और बहुत जल्द सारे देशों को पीछे छोड़ दिया।

हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद बन सकती है हमारी प्राकृतिक संपदा के रुप में उपलब्ध खनिज पदार्थ और कच्ची धातुओं की उपलब्धता। स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार, हमारे देश की खानें दुर्लभ भंडार के रुप में हमारे पास हैं। इन्हें खोजकर और परिश्रम से निकालकर विश्व के सामने जितना अधिक प्रस्तुत किया जाएगा हमारी समृद्धि उतनी ही बढ़ेगी।

हमारे देश की नदियां, और समुद्री तट माफी समृद्ध हैं, इनके सहयोग से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन विद्युत की होने वाली कमी से लड़ा जा सकता है। हमारे देश में निरंतर प्रवाहित होने वाले वायु के वेग की पवन चक्कियों से भी विद्युत बनाई जाती है। हमारे देश में सूर्य का प्रकाश भी 6 से 8 माह तक भरपूर रहता है। ऊर्जा के अन्य वैकल्पिक साधनों को ढूंढ कर उनके उपयोग के रास्ते खोजने और वैज्ञानिक खोजों को जारी रखने की आवश्यकता है।

भारतीय युवाओं की मांग हर देश को होती है। यहां के युवाओं में ज्ञान और समझदारी का जो समावेश है वह पूरे विश्व में शायद ही किसी और देश के युवाओं के पास हो। विदेशों में भारतीय युवाओं की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक धाक जमी हुई है। देश में आज मोबइल–फोन, इंटरनेट, ई – मेल आदि गांवों में भी पहुंच चुके हैं। गांवों–गांवों में घर–घर में इनका और अधिक प्रचार–प्रसार हो यह आवश्यक है।

कहने को तो हम सब अपने को एक साम्प्रदायिक सद्भाव के आदर्श में ढला देश कहते हैं, पर सच्चाई तो कुछ और ही है। सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद भी ऊँच–नीच, छुआछूत, अमीर–गरीब जैसी भावनाएं लोगों के हृदय में पलती हैं। हमारे देश को उन्नत होने के लिए सच्चे हृदय से इन रेखाओं को मिटाना होगा कि हम सच में एक आदर्श देश हैं, साम्प्रदायिकता का सर्व श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

राष्ट्र की पहचान उसकी जनता और सरकार से होती है। देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा। हमें एक सफल, ईमानदार और जनहित के बारे में सोचने वाली सरकार बनानी होगी। भ्रष्ट से शिष्ट नेता बनाने होंगे। हमारे देश की सरकार को कर्तव्यनिष्ठ और लक्ष्य के प्रति समर्पित बनाना पड़ेगा। हर नागरिक को इसके लिए जागरुक होना आवश्यक है।

विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए भी धर्म को सम्प्रदायों से अलग रखना जानता है और ये मतान्तर हमारे देश के नागरिकों की बौद्धिक व्यापकता को दर्शाते हैं। अध्यात्म के भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। अध्यात्म की खोज में विश्व के अन्य देश समृद्धि और विज्ञान के शिखर पर पहुंचकर भी अशांत और उद्विग्न है। आवश्यकता इस बात की है कि भौतिकता के बोझ तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने, जीवन के समग्र अस्तित्व को पहचानने और विकसित

करने की कला हमारे देश को पूरे विश्व को बताना है और यही कला हमारे देश के सही अर्थों में विश्वगुरु बनाएगी।

इसके लिए हमें क्षुद्र स्वार्थ और अहं को त्यागकर सजग, जागरुक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नए सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा और विश्व के सामने अपने विश्वगुरु के खिताब को पुनः सिद्ध कर दिखाना होगा।

ज्योति अग्रवाल, ग्यारहवीं
भवन्स बी.पी. विद्या मन्दिर,
श्रीकृष्णा नगर, नागपुर, महाराष्ट्र

भौतिक के साथ आत्मिक उन्नति जरुरी

आज भारत विश्व में सबसे युवा आबादी वाला देश है, जहां आज भी अपार सम्भावनाएं भरी पड़ी हैं। हम अपने गौरवशाली अतीत की तरह अपने भविष्य को भी गौरवमयी बना सकते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, अध्यापकों व मैनेजरों की प्रतिभा विश्व मान चुका है। लेकिन जगत्गुरु का पद पाने के लिए हमें अनेक समस्याओं से जूझ रहे विश्व–मानव को राह सुझानी होगी।

भारतीय संस्कृति ही मानव संस्कृति है। उसमें मानवता के सभी सद्गुणों को भली प्रकार प्राप्त करने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। कश्मीर में पैदा होने वाली केशर 'कश्मीरी केशर' अपनी जन्म भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका यह अर्थ नहीं है कि उसका उपयोग केवल कश्मीर के निवासियों तक ही सीमित है। ठीक उसी प्रकार भारतीय संस्कृति भी भारत में पैदा हुई संस्कृति है। किन्तु इसमें विश्व संस्कृति बनने के गुण हैं। बनने के गुण हैं। इसमें सारे विश्व के मानवों को सन्मार्ग में प्रेरित करने की क्षमता कूट–कूट कर भरी है।

मानव के साथ–साथ सभी प्राणी और पदार्थ मूल रुप में प्रकृति से ही पैदा होते हैं। संस्कृति के द्वारा वे उच्च स्तर को प्राप्त होते हैं। यदि वे संस्कृति की और न बढ़ कर निम्न स्तर की और जाने लगते हैं तो उनमें विकृति आ जाती है। इस प्रकार प्रकृति से ऊपर उठने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं तथा प्रकृति से नीचे की और गिरने का नाम ही विकृति है। आज मानव समाज संस्कृति के अभाव में विकृति की और बढ़ रहा है।

जिस प्रकार पेड़–पौधों को काट–छांट कर सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है, उसी प्रकार मनुष्य की उच्छृंखल एवं अवांछनीय मनोवृत्तियों को सुसंस्कारों से नियंत्रित करके सभ्य सुसंस्कृत एवं समाजोपयोगी बनाया जा सकता है।

वेदों में कहा गया है– ''सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'' अर्थात् यही प्रथम और विश्वव्यापी संस्कृति है। भारतीय ऋषियों ने केवल मेरे–तेरे तक सीमित न रह कर पूरी वसुधा को एक परिवार के रुप में माना है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' इनका आदर्श रहा है। यहां धरती को माता तथा मनुष्य मात्र को उसका पुत्र कहा गया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' वैदिक काल से ही यहां के ऋषि विश्व के कोने–कोने में भारतीय संस्कृति को प्रचारित एवं प्रसारित करते रहे हैं। आज भी अनेक देशों में इस बात के ठोस प्रमाण मिलते हैं। हमारी मान्यता रही है :

माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
भ्रातराः मनुजाः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयः।।

अर्थात् पर्वतों के धारण करने वाली पृथ्वी मां पार्वती, मेरी मां है, महाकाल देवाधिदेव शंकर मेरे पिता हैं, सभी मनुष्य मेरे भाई हैं तथा पूरा ब्रह्माण्ड मेरा स्वदेश है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताः भारतीय संस्कृति बडी उदात्त है। अपने देश में जितनी भी विचारधाराएं रही हैं उनको स्वीकारना भारतीय संस्कृति की अपनी पहचान है। बाहर से आने वाली अनेक विचारधाराओं को भी भारतीय संस्कृति अपने में सहजता से मिलाती रही है। अनेकता में एकता का संदेश भारतीय संस्कृति युगों–युगों से देती रही है। इसलिए सभी विचारों, मतों को फलने–फूलने का यहां भरपूर अवसर मिला है।

भारतीय संस्कृति का विस्तार : भारत के लोकसेवी संतों ने अपनी समाज सुधार की गतिविधियां स्वदेश तक ही सीमित नहीं रखीं। उन्होंने सारे विश्व को अपना घर माना और धरती वासियों को अपना परिवार। पिछड़ेपन से जूझने के लिए वे विकट से विकट और दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में गए। यदि वापस लौटना आवश्यक नहीं लगा तो वे वहीं डेरा डाल कर बस गये।

महामानवों की आत्मीयता किसी स्थान विशेष तक सीमित नहीं रहती है। इस परिष्कृत दृष्टिकोण को लेकर भारतीय धर्म प्रचारक और लोकसेवी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचे। उन्होंने वहां की शासन प्रक्रिया को दिशा दी। उसे सुव्यवस्थित किया। जहां सम्पत्ति के अभाव में दरिद्रता व्याप्त थी, वहां कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग, आदि सुव्यवस्थाएं बनाईं। उस क्षेत्र की अशिक्षा, अज्ञान एवं अभावादि को मिटाकर उन्हें सुसंस्कृत बनाया। इसलिए उन्हें जगतगुरु का सम्मान मिला। यह उनकी जनसेवा साधना थी। भारत के ऐसे लोकसेवी संतों एवं साधकों का बहुमुखी लाभ संसार की जनता ने उठाया।

भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। देने वालों को देव तथा लेते रहने वालों को दैत्य कहते हैं। प्राचीन भारत में जहां अन्न, धन और विविध भौतिक सम्पत्ति के भण्डार थे, वहीं यहां दिव्य नर–रत्नों के रुप में असंख्य देव–मानवों की भी कमी नहीं रही, जिनके गौरवशाली अस्तित्व से भारत माता की कीर्ति ध्वजा दशों दिशाओं में फहर रही थी। उन्हीं के यश से भारत की गौरव–गरिमा के सामने विश्व नत मस्तक था।

आज भारत विश्व में सबसे युवा आबादी वाला देश है, जहां आज भी अपार सम्भावनाएं भरी पड़ी हैं। हम अपने गौरवशाली अतीत की तरह अपने भविष्य को भी गौरवमयी बना सकते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों डाक्टरों, अध्यापकों व मैनेजरों की प्रतिभा विश्व मान चुका है। लेकिन जगत्गुरु का पद पाने के लिए हमें अनेक समस्याओं से जूझ रहे विश्व–मानव को राह सुझानी होगी। हमारी नैतिक उच्चता, एवं सास्कृतिक विरासत ही इसमें हमारा मार्ग प्रशस्त करेगी।

भारतीय संस्कृति के उस दिव्य स्वरुप को पुनर्जीवित करने के लिए संस्कार परम्परा को फिर से प्रचारित एवं प्रसारित करना होगा। प्रत्येक भारतीय को संकल्प लेना होगा कि वह भौतिक उन्नति के साथ–साथ आत्मिक उन्नति के लिए प्रयास करेगा व 'बसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धान्त को आत्मसात करेगा। इसी से भारत पुनः जगद्गुरु के अपने खोये पद को प्राप्त कर सकेगा।

मनन सोम सांतवी बी
बाल भवन पब्लिक स्कलू,
मयूर विहार–फेज–।।
दिल्ली

प्रत्येक क्षेत्र में हो परिवर्तन

हमारे देश में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ऐसे में धार्मिक एवं सांमप्रदायिक झगड़े होते रहते हैं। भारत को अगर विश्व गुरु बनाना है तो हमें भेद–भाव, झगड़े, छुआ–छूत, ऊंच–नीच जैसी सभी कुरीतियां मिटानी होंगी और मानवता का समान भाव रखना होगा जिससे हमारा देश एकता के सूत्र में बंध जाए।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश है जिसे हम पूण्यभूमि कह सकते हैं, यदि कोई ऐसा स्थान है जहां पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि कोई ऐसा स्थान है जहां भगवान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखने वाले जीव मात्र को आना होगा, यदि कोई ऐसा देश है जहां मानव जाति के भीतर क्षमा, दया, शुद्धता, ईमानदारी, भोलापना आदि सद्वृत्तियों का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है तो मैं निश्चित रुप से कहूंगा कि वह हमारी मातृभूमि भारत वर्ष है। इसीलिए हम गर्व से कह सकते हैं सम्पूर्ण देशों से अधिक जिस देश का उत्कर्ष है, वह देश मेरा देश है वह देश भारतवर्ष है।

जब मानव सभ्यता का पूर्ण विकास भी नहीं हुआ था तब भारत के ऋषियों ने गहन ज्ञान पर आधारित वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि ग्रन्थों की रचना कर डाली थी। उन्होंने घने वनों में, नदी के तट पर या पर्वतों की गुफाओं में ज्ञानार्जन करते हुए कन्दमूल फल खाकर सरल एवं सदा जीवन व्यतीत करते हुए मनुष्य के मन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया था। हर क्षेत्र में भारत की उन्नति उल्लेखनीय थी। इसी कारण भारत सोने की चिड़िया कहलाता था।

प्राचीन विश्व के अनेक देश यहां की संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान, आर्थिक उन्नति के आधार पर इस देश का लोहा मानते थे और किसी न किसी बहाने यहां आने का प्रयत्न करते थे। यहां के विज्ञान, ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, योग, चिकित्सा शास्त्र, अर्थशास्त्र – गणित आदि विषयों के भारतीय विद्वानों ने इस पावन धरती पर जन्म लिया था। यहां की संस्कृति, ऋषि, गुरुकुल परम्परा, राजनैतिक व्यवस्थाएं सभी कुछ महान थीं जिस कारण भारत विश्व गुरु कहलाया।

हमारा देश एक विशाल देश हैं। यहां अनेक राज्य, अनेक धर्म, भाषाएं, वेशभूषा, खानपान, रहन–सहन, विविध जलवायु, मौसम आदि भिन्नताएं होते हुए भी देश एकता के सूत्र में खड़ा है। जिस देश में राजनैतिक ज्ञान देने वाले चाणक्य, चन्द्रगुप्त, पृथ्वीराज चौहान, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, राम–कृष्ण आदि महापुरुषों ने जन्म लेकर संसार को ज्ञान दिया, वही देश आज समय परिवर्तन के कारण अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। अतीत में इस देश में बाहरी ताकतों द्वारा लूटपाट की गई तथा देश लम्बे समय तक विदेशियों के हाथों पराधीन रहा।

इस देश की अतुल धन सम्पत्ति विदेशों में चली गई। साथ ही साथ इस देश की संस्कृति पर भी विदेशी संस्कृति की छाया पड़ गई। आजादी के बाद भारत में गणतंत्र की स्थापना हुई। यद्यपि अनेक क्षेत्रों में विकास हुआ किन्तु साथ ही भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण सम्बन्धी समस्याओं के कारण देश की जनता का जीना दूभर हो गया है। वह देश जो कभी हर क्षेत्र में सम्पन्न था आज भुखमरी, गरीबी, महंगाई, प्रदूषण आदि समस्याओं के कारण अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। देश आज अपनी ताकत को भूल गया है। जरुरत है इस देश को जगाने की। आइए, इस देश को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु विचार करें।

पुनः विश्वगुरु बनने की सम्भावनाएं : समय परिवर्तनशील है। भारत का गौरवशाली इतिहास इस बात का गवा है कि यहां की भूमि में महान व्यक्तियों ने जन्म लिया है। यद्यपि आज देश हर तरफ से अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है तथापि इस देश की चहुंमुखी उन्नति की पूर्ण सम्भावनाएं आज भी विद्यमान हैं। हमारी विचारधारा आशावादी है। हमारी मातृभमि दर्शन, धर्म, नीति, विज्ञान, मधुरता, कोमलता अथवा मानव जाति के प्रति अटूट प्रेमरुपी सद्‌गुणों को जन्म देने वाली है। ये समस्त चीजें आज भी भारत में विद्यमान हैं। विश्व के उच्च देशों में भारत अभी भी श्रेष्ठ हो सकता है।

आज अगर देश का मानव कल्पना करता है तो उसके पीछे निम्न क्षेत्रों में इस देश के चिन्तकों को सोचकर उपाय करने चाहिए। आज के युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। मनुष्य के चारित्रिक विकास, ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि सद्‌गुणों के विकास के लिए देश की शिक्षा व्यवस्था को अतीत की शिक्षा व्यवस्था की तरह उन्नत बनाना होगा। पश्चिमी संस्कृति को छोड़कर अपनी संस्कृति को अधिक से अधिक अपनाना होगा जिससे देश के हर नागरिक में मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना हो सके।

योग तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में : हमारी ऋषि संस्कृति का मूल योग व आयुर्वेद है। स्वस्थ ज्ञान के लिए स्वस्थ शरीर परम आवश्यक है। अतः शिक्षा में योग व आयुर्वेद को शामिल कर देश के प्रत्येक नागरिक को निरोग बनाया जा सकता है।

कृषि के क्षेत्र में : हमारा देश कृषि प्रधान देश है। बहुत अधिक प्रयासों के बाद भी हम अपनी कृषि को पूर्णतः वैज्ञानिक आधार नहीं दे पाए हैं। रासायनिक पदार्थों का निरंतर उपयोग करके हमने अपने फसलों की पैदावार एक समय के लिए तो बड़ा दी परंतु अब हमें उससे कई समस्याओं का समाना भी करना पड़ रहा है। अब उपाय यही है कि हम जैविक खेती शुरु करें और मिट्‌टी की उर्वरक क्षमता बढ़ाकर पैदावार बढ़ाएं।

राष्ट्रीय एकता : हमारे देश में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ऐसे में धार्मिक एवं सांप्रदायिक झगड़े होते रहते हैं। भारत को अगर विश्व गुरु बनाना है तो हमें भेदभाव, झगड़े, छुआछूत, ऊंच–नीच जैसी सभी कुरीतियां मिटानी होंगी और मानवता का समान भाव रखना होगा जिससे हमारा देश एकता के सूत्र में बंध जाए। साथ ही हमें स्वदेशी वस्तुओं एवं मातृभाषा हिन्दी को उचित सम्मान देना पड़ेगा।

व्यवस्था परिवर्तन : भारत में हर क्षेत्र में व्यवस्था परिवर्तन की आवश्यकता है। राजनैतिक क्षेत्र में स्वस्थ, ईमानदार, कर्मठ युवकों को चुनकर प्रतिनिधि बनाना होगा। भ्रष्टाचार मिटाना होगा। विदेशों में जमा काला धन भारत वापस लाना होगा। भ्रष्टाचार मिटाने हेतु लोकपाल जैसे कानून बनाने होंगे तथा देश को भ्रष्टाचार की चिंता से दूर ले जाना होगा। साथ ही विकास के हर क्षेत्र में उन्नति करनी होगी।

आचार्य चाणक्य ने कहा था, ''जिस देश का राजा महलों में सोता है उस देश की जनता झोपड़ियों में सोती है और जिस देश का राजा झोपड़ियों में सोता है, उस देश की जनता महलों में सोती है। हमारे देश के राजनैतिज्ञ अगर इस शिक्षा को ग्रहण कर लें तो निश्चित रुप से हमारे राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन आ सकता है तथा देश भ्रष्टाचार मुक्त होकर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

अतः यह मात्र कल्पना नहीं है। यदि देश का हर नागरिक संसाधनों का उचित प्रयोग करते हुए विकास के कार्यों में जुट जाए, साथ ही साथ योग्य नेतृत्व देश को मिल जाए तो हर क्षेत्र में परिवर्तन आ जाएगा। वह दिन दूर नहीं जब हम अपने आप को संसार के अन्य विकसित देशों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ पाएंगे तथा भारत को पुनः विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक पायेगा।

रूबी रावत ग्यारहवीं
रेनबो पब्लिक स्कूल,
चौरास, श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

सौर ऊर्जा पर दें ध्यान

अभी तक हमने अपने देश और देश के अकूत भंडार को पहचाना ही नहीं है ? आवश्यकता इस बात की है कि अपनी संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक–ठीक जानकारी हम प्राप्त करें। किसी भी देश की शक्ति उसके प्राकृतिक साधनों में समाहित है।

भारत कभी अपने ज्ञान और विश्वास के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। यह उस समय संभव हो पाया था जब हमारे पूर्वजों ने ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इनको जनोपयोगी बनाया। भारत को पुनः विश्व का सिरमौर बनाने में पूर्वजों की अथक लगन परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। स्वयं अपने देश में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी।

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों को खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग किस तरह किया जा सकता है यह ज्ञान होना आवश्यक है। जागरुकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही समृद्धि के शिखर तक पहुंचा जा सकता है।

अभी तक हमने अपने देश और देश के अकूत भंडार को पहचाना ही नहीं है ? आवश्यकता इस बात की है कि अपनी संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक–ठीक जानकारी हम प्राप्त करें। किसी भी देश की शक्ति उसके प्राकृतिक साधनों में समाहित है।

प्रकृति ने भारत में दिल खोलकर अपनी संपदा लुटाई है। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खनिज संपदा, खेती योग्य सभी उचित चीजें, जल, जंगल, जलवायु, वातावरण सभी एक से बढ़कर एक हैं। हमारे देश की जलवायु में अलग –अलग भिन्नता, समृद्धि ने हमारे देश के अन्दर ही पूर्ण विश्व उपरिथ्त कर दिया है।

हमारा देश विश्व के समान है जहां ध्रुव क्षेत्रों जैसी ठंडक भी है तो ऊष्ण कटिबंधीय स्थलों की हरियाली भी है। ऊंचे–ऊंचे पर्वत शिखरों की मालाएं भी हैं तो दूसरी और विस्तृत रेगिस्तान भी है। यह सारी विशेषताएं पूरे विश्व में अलग–अलग स्थानों पर पाई जाती हैं। हमारे देश में आने वाली छः ऋतुएं विदेशों में बड़े आश्चर्य के रुप में मानी जाती है। प्रकृति के ये उपहार हमारे देश को विश्व के विकास के उच्चतम पायदान पर ले जा सकते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि इन प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग कर स्वयं को तथा अपने देश को समृद्ध बनाएं। हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद बन सकती है हमारी प्राकृतिक संपदा के रुप में उपलब्ध खनिज पदार्थ और कच्ची धातुओं की उपलब्धता। स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार हमारे पास हैं। चमत्कारी और बहुमूल्य टीटेनियम के भंडार, हीरों और रत्नों की खानें, दुर्लभ भंडार के रुप में हमारे पास हैं। इनका खोजना परिश्रम से निकालना और पुनः विश्व के सामने जितना अधिक प्रस्तुत किया जाएगा हमारी समृद्धि उतनी ही बढ़ेगी।

हमारे देश की नदियां और समुद्री तट काफी समृद्ध हैं। इनके सहयोग से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन विद्युत की होने वाली कमी से लड़ा जा सकता है। हमारे देश में निरंतर प्रवाहित होने वाली वायु के वेग से पवन चक्कियों के उपयोग से भी विद्युत बनाई जाती है।

विद्युत की कमी का रोना तो हर राज्य सरकारें रोती हैं पर जल और वायु के समुचित उपयोग से विद्युत उत्पादन की और कई सरकारें अमल कर नए कदम नहीं उठा रही हैं। हमारे देश में सूर्य का प्रकाश भी छह से आठ माह तक भरपूर रहता है। सोलर एनर्जी से विद्युत उत्पादन प्रारंभ करने की और भी ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। ऊर्जा के अन्य वैकल्पिक साधनों को ढूंढ कर उनके उपयोग के रास्ते खोजने और वैज्ञानिक खोजों को जारी रखने की आवश्यकता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि के क्षेत्र में नए–नए अनुसंधान कर जागरुकता और सजगता के साथ नए प्रयोग कर विकास के अनेकों सोपान चढ़े जा सकते हैं। पारंपरिक उद्योगों के साथ–साथ हमारे देश में अब अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के साधन भी हैं, इसके लिए युवा पीढ़ी जागृत होकर अत्यधिक श्रम और समय लगाकर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को सबसे आगे लेजा सकती है। यह एक सत्य है कि भारतीय युवा आज 5 प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमेरिका और यूरोप में सभी अपनी जगह बनाए हुए हैं।

विदेश में भारतीय युवाओं की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक धाक जमी हुई है। देश में भी आज मोबाइल फोन, इंटरनेट, ई–मेल आदि गांवों में भी पहुंच युके हैं। गांवों–गांवों में घर–घर में इनका और अधिक प्रचार–प्रसार हो यह आवश्यक है। पर्यटन के रुप में देश के पास एक विशाल क्षेत्र है जहां से देश की संप्न्नता और समृद्धि में और वृद्धि हो सकती है।

पुनः विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए धर्म को संप्रदायों से अलग रखना जानता है। यह मतान्तर हमारे देश के नागरिकों की बौद्धिक व्यापकता को दर्शाते हैं। अध्यात्म का भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। अध्यात्म की खोज में विश्व के अन्य देश समृद्धि और विज्ञान के शिखर पर पहुंचकर भी अशांत और उद्विग्न है। भौतिकता के बोझ तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने, जीवन के समग्र अस्तित्व को पहचानने और विकसित करने की कला हमारे देश को सही अर्थों में पुनः विश्व गुरु बनाएगी।

इसके लिए हमें क्षुद्र स्वार्थ और अहं को त्यागकर सजग, जागरुक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नए सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा और विश्व के सामने अपने आप को पुनः विश्व गुरु के खिताब को सिद्ध कर दिखाना होगा।

राशि जैन ग्यारहवीं
वर्द्धमान शिक्षा मंदिर,
पदमचन्द्र मार्ग, दरियागंज दिल्ली

उच्च विचार, विश्व गुरु बनने का आधार

आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केंद्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सभी अर्थ और काम की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है।

हमारा देश भारतवर्ष सब देशों में शिरोमणि है। इसका अतीत स्वर्णिम रहा है। एक समय था जब इसे विश्वगुरु, सम्यता व संस्कृति में प्रथम, सोने की चिड़िया आदि अनेक उपाधियों से नवाजा जाता था। इसे प्रकृति देवी ने अपने अपार वैभव, शक्ति व सौंदर्य से विभूषित किया है। दुनिया के दूसरे देशों में जब ज्ञान का प्रकाश फैला भी नहीं था, तब हमारा देश बहुत उन्नत था, उस समय भी ज्ञान–विज्ञान ने यहां बहुत प्रगति कर ली थी।

प्राचीनकाल में दुष्यंत नाम के एक प्रतापी राजा हुए। उनके पराक्रमी और शूरवीर पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत या भारतवर्ष पड़ा। भारत का इतिहास सोने के अक्षरों लिखा हुआ है। जगरुत–प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने लिखा है कि ''यदि मैं यह खोजने के लिए सारे संसार पर दृष्टि दौड़ाऊं कि वह कौन–सा देश है, जो प्रकृति की समस्त संपदा, शक्ति एवं सौंदर्य से संपन्न है तथा कहीं–कहीं तो पृथ्वी पर मानो स्वर्ग ही है, तो मुझे भारत की और संकेत करना पड़ेगा। यदि कोई मुझसे पूछे कि किस आकाश के नीचे मानव ने अपने सुंदरतम गुणों का विकास किया है तथा मानव–जीवन की गहन समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया है और उनमें से कुछ का समाधान भी निकाला है, तो मुझे पुनः भारत की और संकेत करना पड़ेगा। '' ऐसा है हमारा प्यारा हिंदोस्तां, जिसकी प्रशंसा करने के लिए विदेशियों को भी बाध्य होना पड़ता है।

भारतवर्ष की सभ्यता तथा संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में गिनी जाती है। जिस प्रकार फूलों की विविधता के कारण उपवन को चार चांद लग जाते हैं, जिस प्रकार अनेकविध डिजाइनों वाली दुकान समृद्ध मानी जाती है, उसी भांति भारतवर्ष की अनेकताओं के कारण ही यहां की संस्कृति खूबसूरत बनी हुई है। यहां पाई जाने वाली सभी विभिन्नताओं में गहरा तालमेल है। इसकी भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति ऐसी है कि इस एक देश में अनेक देशों की कल्पना सहज भाव से की जा सकती है।

यहां विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, सनातनी आदि यहां असंख्य धर्म–धाराएं प्रवाहित होती हैं। एक अनुमान के अनुसार यहां लगभग दस हजार जातियां निवास करती हैं। भाषा और बोली की दृष्टि से भारत की विभिन्नता का कहना ही क्या ? सैकड़ों बोलियां यहां की धरती का सौन्दर्य बढ़ाती हैं। भारतवर्ष में रहन–सहन, पहनावे, रीतियां, भौगोलिक परिस्थितियां आदि भी परस्पर भिन्न हैं। यदि भिन्नताओं पर विचार करने लगे तो यहां अनेक भिन्नताएं भी ढूंढी जा सकती हैं।

भारत को सिंधु देश, आर्यावर्त, हिंदुस्तान भी कहते हैं। हमारा प्यारा हिंदोस्तां जीवन के हर क्षेत्र में संसार के सभी देशों का पथ–प्रदर्शन कर रहा है। आज से लगभग पांच सहस्त्र वर्ष पहले की सिंधु घाटी सभ्यता के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, उनसे हमारी उच्चता तथा महत्ता का पता चलता है। संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला की प्रगति भी आंखें खोल देने वाली हैं। विधि की सबसे पहली पुस्तक मनुस्मृति भारत में ही रची गई। लीलावती ने गणित के क्षेत्र में जो कार्य किया, गार्गी तथा मैत्रेयी ने वेदसूत्रों की रचना में जो योगदान दिया, उससे प्रमाणित होता है कि नारियां उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करती थीं। भारत ने हजारों साल पहले

चरक तथा धन्वंतरि जैसे जगविख्यात वैद्यों को जन्म दिया था। इन्होंने शरीर की रचना, उसकी क्रियाओं तथा उसमें उत्पन्न होने वाले विकारों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के फलस्वरुप उन्होंने शरीर को स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनाने वाले द्रव्यों की खोज कर ली थी। आपसी फूट के कारण हमारा देश सैंकड़ों वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहा और अनेकों बलिदानों तथा आंदोलनों के पश्चात 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वाधीन हुआ। भारत वर्तमान में अपने लक्ष्य पथ पर तेजी के साथ बढ़ तो रहा है लेकिन आज हमारे सामने कई विकट समस्याएं उत्पन्न हो चुकी हैं। भूख, गरीबी, बेकारी, जनसंख्या वृद्धि आदि समस्याएं हमारे साहस की परीक्षा ले रही हैं। भाषायी विवाद, धार्मिक मतभेद, सांप्रदायिकता आदि हमारी अखंडता को चुनौती दे रहे हैं। कभी धर्म के नाम पर आंदोलन होते हैं तो कभी धर्म की संकीर्णता वैमनस्य का कारण बन जाती है। राजनीतिक पार्टियां परस्पर मतभेद होने के कारण भी देश की उन्नति में बाधक बन जाती हैं।

आज के भारत में भ्रष्टाचार का भी बोलबाला है। इसी कारण राष्ट्रीय चरित्र पर आघात पहुंच रहा है। जब तक भारतवासी चरित्रबल आवश्यकताओं को नहीं समझते तब तक भारत का उच्च स्तर नहीं उठ सकता। आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केंद्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सभी अर्थ और काम की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है।

देश को सबल बनाने के लिए सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्द बनाए रखने की जरुरत है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रेम से प्रेम और घृणा से घृणा उत्पन्न होती है। हमारा पथ प्रेम और अहिंसा का होना चाहिए। घृणा एवं हिंसा सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है।

हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम देश की अनूठी विशेषता अनेकता में एकता का सम्मान करें और बहुत सारे बलिदानों के बाद मिली आजादी के मूल्य को पहचानकर सभी धर्मों, भाषाओं और संप्रदायों का आदर करें। भारत अपने प्राचीन गौरव को समझे, पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध से अपने को बचाए, सदा जीवन और उच्च विचार ग्रहण करें, अपनी भाषा को प्राथमिकता दें, प्राचीनता और नवीनता के समन्वय से अपने ज्ञान–विज्ञान को चरम सीमा पर पहुंचा दे। अगर यह सब हुआ तो वह दिन अवश्य आएगा जब हमारे भारत की संस्कृति विश्व के चौराहे पर चमक कर सभी दिशाओं को आलोकित करेगी तब फिर से भारतवर्ष अपने विश्व गुरु के आसन पर आसीन होगा और हम गर्व से कह सकेंगे कि हम सब भारतीय हैं और यह धरती स्वर्ग के समान है।

चंचल दहिया ग्यारहवीं
प्रताप सिंह मैमोरियल वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय खरखोदा,
जिला : सोनीपत, हरियाणा

स्वर्णिम अतीत से सीख वर्तमान को सजाएं

इस गौरवशाली देश की गाथा आज भी उतनी ही गरिमामय है जितनी प्राचीन काल में थी। विदेशी हमलों व लूटपाट ने भारत को जिस दुर्दशा में पहुंचाया उससे उबरते हुए भारत आज भी विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत एक ऐसा देश है जिसका चयन देवतागण भी दुष्टों के विनाश के लिए करते हैं तथा प्रकृति भी अपनी छः ऋतुओं के साथ इसी देश की शोभा बढ़ाती है।

शोभित है सर्वोच मुकुट से, जिनके विश्व देश का मस्तक। गूंज रही हैं सकल दिशाएं। जिनके जय गीतों से अब तक''।

राम नरेश त्रिपाठी की ये पंक्तियां बरबस ही गौरवशाली भारत की और ध्यान आकर्षित करती हैं। प्राचीन काल में हमारा देश सोने की चिड़िया कहा जाता था क्योंकि भारत देश सर्वगुण सम्पन्न व समृद्ध था। भारत वर्ष शक्ति के क्षेत्र में और शिक्षा के क्षेत्र में धनी व शांतिप्रिय हैं, इसकी उदारता के कारण ही विदेशों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालयों में आते थे। यहां की संस्कृति आदर्श जीवन मूल्यों से परिपूर्ण है जिसे विदेशी लोग भी अपनाने के लिए बाध्य हो रहे हैं। हमारे देश की अखंडता, एकता, त्याग, प्यार और उदारता की मिसाल पूरी दुनिया में दी जाती है।

गुरुओं की भूमि : भारत का इतिहास गौरवमय रहा है, विशेषतः शिक्षा के क्षेत्र में। यह गुरुओं की भूमि रही है। जगत गुरु कृपाचार्य, शंकराचार्य, कबीर, नानक आदि गुरुओं ने इसकी शोभा बढ़ाई है। इस भूमि ने द्रोणाचार्य जैसे गुरु दिये वहीं एकलव्य जैसा गुरुनिष्ठ शिष्य भी। वैदिक काल से लेकर आज तक देश ने कई करवटें बदली हैं किंतु इसने अपने धैर्य एवं मान की रक्षा हमेशा की है। दूर–दूर से विदेशी इसके आकर्षण में बंधे चले आए हैं। यहां आज भी गुरुओं को भगवान से ऊंचा दर्जा दिया जाता है। स्वयं कबीर के शब्दों में :

''गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागों पाय,
बलिहारि गुरु अपने जिन गोबिंद दियो मिलाय''

आध्यात्मिक प्रणेता : धर्म के क्षेत्र में तो भारत ने जो मिसाल दी है वह अतुलनीय है। राम ने आदर्श का पाठ पढ़ाया तो कवीर, नानक, रैदास, नाना फरीद, बुल्लेशाह जैसे संतों की वाणी भी यहीं गूंजी है। बौद्ध धर्म की शिक्षा लेने तो चीनी यात्री फाद्यान तथा ह्यूंसांग वर्षों की कष्टप्रद यात्रा करके भारत पहंचे थे। वर्तमान समय में भी हमारा देश अभी तक अध्यात्मिक जगत का अगुआ बना हुआ है।

स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में भारतीय संस्कृति के जिस स्वरुप से पाश्चात्य जगत को परिचित कराया उसकी गूंज अभी तक सुनाई देती है। भारतीयों ने अस्त्र–शस्त्र के बल पर नहीं बल्कि प्रेम के बल पर लोगों के हृदय पर विजय प्राप्त की। प्रसाद जी ने कहा है : *''विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।''*

शिक्षा जगत में भारत : वैदिक काल में जब यूनान जैसी संस्कृतियों में केवल चार प्रतिशत लोग ही शिक्षित हुआ करते थे, तब भारत की शत–प्रतिशत जनता शिक्षित थी। प्रत्येक वर्ग के बालक के लिए शिक्षा अनिवार्य व निःशुल्क थी। उस समय का भारत शिक्षा का सिरमौर था। वेदों, उपनिषदों, चरक संहिता आयुर्वेद, अर्थशास्त्र आदि पुस्तकें भारत की ही देन हैं जो आज तक विश्व का मार्गदर्शन करती हैं।

भारत की अनुपम भेंटः आधुनिक युग में जब भारत में पूर्ण सुविधायें नहीं थीं, तब भी श्री जगदीश चन्द्र बसु ने बेतार के तार का आविष्कार किया और वनस्पति जगत को प्राणी जगत सिद्ध कर समस्त विश्व के वैज्ञानिकों को चकित कर दिया। चंद्रशेखर, वेंकट रमन तथा हर गोविंद खुराना जैसे देश के नागरिकों ने नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। विश्व को दशमलव और शून्य देने वाले भारत ने कभी इसके बदले किसी फल की कामना नहीं की। भारत ने सदैव पूरे विश्व का एक गुरु की भांति मार्गदर्शन किया है।''परहित सरिस धर्म नहीं भाई'' गुरु मंत्र का मान रखते हुए हमने अनेक कष्ट उठाकर भी किसी से दुर्भावना नहीं रखी है।

अणुव्रत का योगदान : अणुव्रत उन संस्थाओं में से एक है जिसने शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया है। अणुव्रत के पांचों नियम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह सम्पूर्ण मानव जाति के उद्घाट के लिए गुरुवाक्य बने हुए हैं।

अणुव्रतः– *''सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।*
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित दुखः भाग भवेत। का सहारा लेकर सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में अणुव्रत की कई संस्थाएं भारत को विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से कार्यरत हैं जिनमें– अणुव्रत विश्व भारती, बालोदय पुस्तकालय, विश्व दर्शन दीर्घा,जीवन विज्ञान प्रशिक्षण अणुव्रत शिक्षण संघ आदि का नाम उल्लेखनीय है।

विश्व गुरु उपाधि का हकदार : इस गौरवशाली देश की गाथा आज भी उतनी ही गरिमामय है जितनी प्राचीन काल में थी। विदेशी हमलों व लूटपाट ने भारत को जिस दुर्दशा में पहुंचाया उससे उबरते हुए भारत आज भी विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत एक ऐसा देश है जिसका चयन देवतागण भी दुष्टों के विनाश के लिए करते हैं तथा प्रकृति भी अपनी छः ऋतुओं के साथ इसी देश की शोभा बढ़ाती है।

भारत यदि पुनः विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त करना चाहता है तो उसे अपने स्वर्णमयी इतिहास को अपना कर वर्तमान बनाना होगा। भारत उस दिशा में अग्रसर भी है। आज चाहे औधोगिक जगत हो या व्यापार जगत, खेल जगत हो या शिक्षा जगत, भारत के नागरिकों ने अपनी योग्यता से भारत का नाम रोशन किया है। हम अन्य देशों से आयात–निर्यात कर लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर उनकी समस्याओं से छुटकारा दिलवा रहे हैं। यह सब शिक्षा के कारण ही हो रहा है। क्योंकि आजकल प्रत्येक स्त्री–पुरुष को पढ़ने लिखने का अधिकार है।

आज हम अज्ञान रुपी अंधकार से ज्ञान रुपी आकाश में आ गए हैं जिसके कारण हम अपने अस्तित्व की पहचान कर परहित की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। भारत, जहां हर रिश्ता निःस्वार्थ भाव से निभाया जाता है, प्रत्येक देश के लिए एक मिसाल बना हुआ है।

अतः भारत देश जिसकी संस्कृति विश्व की निधि है, जिसका आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विकास दिन–प्रतिदिन हो रहा है, ऐसा देश विश्व को सही राह दिखाने और विश्व गुरु बनने का पूरा हक रखता है। दृढ़ संकल्प, अदम्य साहस, ईमानदारी और सत्य निष्ठा इस मंजिल तक पहुंचाने के अकाट्य मार्ग हैं।

आर्यन बाल्यान, कक्षा सांतवी सी
कमल पब्लिक सी.सै. स्कूल,
डी–ब्लॉक विकासपुरी, दिल्ली

सुबह होने वाली है

भारतवर्ष अपनी व्यापक व व्यावहारिक प्रौद्योगिकी एवं उच्च तकनीक क्षमता, विलक्षण आर्थिक उन्नयन की उत्कंठा एवं अपनी विराट सांस्कृतिक चेतना, जो उसे विरासत में मिली है, से शनैः–शनैः एक विकसित राष्ट्र के रुप में उमड़कर विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी और आकर्षित कर रहा है। यह सच है कि भारत उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है।

प्राचीन काल अपने विकास के लिए विश्व में विख्यात था। विश्व के अन्य देश जब अपनी प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हुए थे एवं जंगली जीवन बिता रहे थे उस समय हमारे देश की शिक्षा पद्धति विकास के चरमोत्कर्ष पर थी। हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता दूसरे के लिए अनुकरणीय थी। डॉ. थॉमस ने इस तथ्य की और ध्यान देते हुए कहा कि ऐसा कोई भी देश नहीं जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन काल से पैदा हुआ अथवा जिसने इतना स्थायी एवं शक्तिशाली प्रभाव पैदा किया हो।''

जिस देश में शिक्षा का स्तर इतना उंचा हो वह देश विश्वगुरु कहलाना ही चाहिए। अतीत काल से ही हमारा देश समृद्धि एवं वैभव के लिए विश्व विख्यात था। इसके प्रलोभन से ही मुसलमान आए। इसके पश्चात इस देश के वैभव को देखते हुए अनेक यूरोपीय जातियां इस देश में आने लगीं। सर्वप्रथम यहां पुर्तगाली आए, इसके बाद डच फ्रांसीसी तथा अंग्रेज यहां व्यापार करने के उद्देश्य से आए पर देश के वैभवशाली व्यक्ति अंग्रेजों की कूटनीति को समझ नहीं पाए। फलस्वरुप भारत वासियों इसका शिकार होना पड़ा।

लार्ड कर्जन की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति से भारत की सहिष्णुता को बहुत बड़ा धक्का लगा और जो कुछ बचा वह लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने पूरा किया। उसने 1835 में प्रसिद्ध ऐतिहासिक विवरण पत्र प्रस्तुत किया। भारत को सर्वोच्च पद पर देखकर उसने कूटनीति की चाल चली। उसने 1813 के आज्ञा पत्र में आए साहित्य शब्द का अर्थ अंग्रेजी साहित्य से लगाया तथा भारतीय विद्वानों का अर्थ उस व्यक्ति से लगाया जो लांक तथा मिल्टन के काव्य को भली भांति समझ सके।

भारतीय साहित्य का मजाक उड़ाते हुए उसने एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की अलमारी को भारत तथा अरव के सम्पूर्ण साहित्य के बराबर समझा। अर्थात मैकाले की शिक्षा नीति भारतीयों को एक क्लर्क से ज्यादा कुछ नहीं बनने देती। भारतीय सम्प्रभुता पर गहरे आघात का यह पहला अध्याय था क्योंकि साहित्य और कला ही समाज का दर्पण होती है। विश्व के सभी प्रगतिशील देश अपने विद्यार्थियों के कारण ही बढ़ रहे हैं मैकाले की शिक्षा नीति ने उन्हें भ्रमित कर दिया जिसके फलस्वरुप भारत आज भ्रष्टाचार की लपेट में हैं। भ्रष्टाचार की आड़ में श्वेतवसन अपराध भी किए जा रहे हैं जिन्हें (White collor of crime) कहते हैं श्वेतवसन अपराधों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। भारतीय समाज की स्थिति अति संवेदनशील है। आज बेईमान व्यक्ति को कुशल और चालाक समझा जाता है और ईमानदार व्यक्ति को कायर और डरपोक समझा जाता है।

आज समाज में जितने भी अपराध हो रहे हैं वे अत्यंत ऊच्च वर्ग और शिक्षित व्यक्तियों द्वारा किये जा रहे हैं और अपराध इतने सुनियोजित तरीके से किए जाते हैं कि उन्हें अपराध साबित करना टेढ़ी खीर होती है। जब तक उस अपराध की गोपनीयता नष्ट होती है तब तक अपराधी देश को करोड़ों का चूना लगा चुका होता है।

समाज व्यवस्था के लिए शिक्षा की सुंदर पद्वति होनी चाहिए। आज भी हमारे पास हमारे पूर्वजों के उपदेश हैं जिनके द्वारा भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

किसी भी राष्ट्र के उत्कर्ष एवं सर्वाधिक विकास में उस राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का उन्नयन, उच्च प्रौद्योगिकी व तकनीक क्षमता, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना, मूलपरक शिक्षा का व्यापक प्रचार व प्रसार एवं उच्चतम शिक्षा से अधिकतम रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना आदि है। भारतवर्ष अपनी व्यापक व व्यावहारिक प्रौद्योगिकी एवं उच्च तकनीक क्षमता विलक्षण आर्थिक उन्नयन की उत्कंठा एवं अपनी विराट सांस्कृतिक चेतना, जो उसे विरासत में मिली है, से शनैः–शनैः एक विकसित राष्ट्र के रुप में उमड़कर विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी और आकर्षित कर रहा है। यह सच है कि भारत उज्ज्वल भविष्य की और अग्रसर हो रहा है।

हमारी कुछ समस्यायें भी हैं लेकिन इससे भारत के विश्वगुरु बनने का सपना धूमिल नहीं हो जाता एक तरफ उच्चतम स्तर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं दूसरी तरफ विकास की नीतियों में तालमेल बनाया जाए तो निःसन्देह भारतवर्ष अपने विकास का लक्ष्य प्राप्त कर अग्रणी विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में शामिल होकर विश्व के मानचित्र पर एक बार तिरंगे को लहरा सकता है।

भारतवर्ष को विश्वगुरु का स्थान दिलाने के लिए हमें प्राचीन शिक्षा पद्धति को अपनाकर विद्यार्थियों में देशभक्ति और देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा देनी चाहिए क्योंकि एक सेना की मुकाबला करना उतना कठिन नहीं होता जितना कि उन गिनेचुने व्रतधारियों का होता है जिन्हें समाज से कोई डर नहीं देश के बुलावे पर वे बलिवेदी पर चढ़ने से नहीं डरते। एक लंबी रात की सुबह होने वाली है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत हुए के नक्शे पर विश्वगुरु का स्थान ले लेगा

अंजलि कुमारी नौंवीं ई
आर्मी पब्लिक स्कूल, बैरकपुर,
कोलकाता, पं. बंगाल

वापस लानी होगी खोई हुई एकता

देशभक्ति और देश प्रेम की भावना ही भारत को बचा सकती है और पुनः विश्वगुरु बना सकती है। जब हम समझेंगे कि सहज मानवीय सद्भावना और विश्वशान्ति हमारे महान देश का महान आदर्श है तभी हम अपने देश से प्यार कर पाएंगे।

भारत के गौरवपूर्ण स्वरुप और इतिहास की रचना के लिए हमें कई मोर्चों पर युद्ध लड़ने हैं यथा आर्थिक, राजनैतिक, कृषि, व्यवसाय एवं शिक्षा। इसमें हमें प्रगति करनी है। सृष्टि निर्माण और सभ्यता–संस्कृति की उच्च धारणा की दृष्टि से हमारा भारतवर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है। अपने उदात्त निर्माण और महान सभ्यता– संस्कृति के कारण ही नहीं, प्रकृति और भौगोलिक निर्माण की दृष्टि से भी भारत सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना है। कविवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में भारतवर्ष की प्रकृति और रचना के बारे में उचित ही कहा गया है कि–

''तीन तरफ सागर की लहरें जिसका बने बसेरा,
पतवारों पर नियति सजाती जिसका सांझ–सवेरा,
बनती हो मल्लाह मुट्ठियां सतत् भाग्य की रेखा,
रत्नाकर रत्नों को देता हो टकराकर लेखा।''

मात्र यही नहीं, सभी प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्यों और वैभव से सम्पन्न हमारा देश संसार का सबसे बड़ा जनतंत्र भी है। अपने विस्तार में यह विश्व का सातवां महान देश है। हमारे इस महान देश में गंगा जैसी नदी बहती है, जिससे पवित्र अन्य कोई जलधारा नहीं है। इस देश के सजीव प्राकृतिक सौंदर्य की तुलना में स्वर्ग का कल्पानालोक तुच्छ माना जाता है। भारत ऋषियों का तपोवन है, प्रकृति का उपवन है, इसीलिए प्रसिद्ध शायर इकबाल के शब्दों में गाया भी जाता है – *सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।*

यहां के हरे–भरे मैदान, बर्फ से चमकती चोटियां, रुपहली–सुनहली बदलियों की गरज से गूंज उठने वाला आकाश, लहराता नीला सागर, यहां के फल–फूल और चहचहाते पक्षियों, बहुरंगे पशुओं को देखने के लिए लोग दूर–दूर से यहां आते हैं। हिमालय भारत का प्रहरी है जिससे बड़ा संसार में अन्य कोई पर्वत नहीं। कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने हिमालय के बारे में उचित ही कहा है कि :

साकार दिव्य, गौरव–विराट,
पौरुष का पंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी का हिमकिरीट,
मेरे भारत का दिव्य भाल।

अगर देखा जाए तो भारत हमेशा से ही विश्व का गुरु रहा है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। आज जो हवाई जहाज ऊंची–ऊंची उड़ानें भरते हैं उसका तरीका तो भारत से ही मिला जैसे रामायण में इस्तेमाल हुआ 'उड़नखटोला'। यहां तक कि 'शून्य' जो कि गणित का आधार है वह भी भारत की ही देन है। रामानुजन, आर्यभट्ट, सी.वी. रमन, कल्पना चावला, रबीन्द्रनाथ टैगोर आदि कितने ही लोग हैं जिन्होंने सदा भारत का नाम ऊंचा किया है।

पर यह बहुत ही खेद की बात है कि अब न तो भारत का वह नाम है न ही वह इज्जत । यहां के लोग ही अपने देश पर गर्व नहीं करते। कुछ लोग तो भारत के वासी होने को अपना दुर्भाग्य समझते हैं। न तो उन्हें

अपने देश से प्यार है, न ही अपनी मातृभाषा से। शायद यही कारण है कि हमारा यह देश भारत अन्दर से खोखला होता जा रहा है और धीरे–धीरे पतन की और अग्रसर हो रहा है।

हर तरफ से हमारा देश विभिन्न समस्याओं में जकड़ा हुआ है। भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, बेकारी और न जाने क्या–क्या ? आज का हर युवक–युवती अपने देश को छोड़कर पश्चिमी साहित्य की और आकर्षित हो रहा है। व्यवहार बदल रहे हैं, बड़ों के लिए सम्मान तो जैसे खत्म ही हो चुका है। संगठित परिवार छोटे परिवारों का रुप ले चुके हैं। हमारा भारत जिसे हम 'अतुल्य भारत' कहते थे, वह तो जैसे एक सम्बोधन करने के लिए शब्द ही रह गया क्योंकि इसमें ऐसा कुछ बचा नहीं है।

भारतवासी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करना भी भूल गए हैं। हिन्दी भाषा का इस्तेमाल होता है, इसके नाम पर पैसे भी कमाए जाते हैं पर व्यवहार के नाम पर अंग्रेजी भाषा और अंग्रेज लोगों की चमचागिरी करने लगते हैं। हिन्दी आज अपने ही घर में परदेशी बनकर जी रही है। ऐसे हालातों में जहां भारत अपना अस्तित्व खोता जा रहा है वहां यह बहुत बड़ा प्रश्न उठता है कि भारत पुनः विश्वगुरु कैसे बने।

भारत हर चीज में सर्वोत्तम है। यहां कला की कमी नहीं है, अगर कमी है तो यहां की सोच में। अगर हम भारत को ऊंचाईयों पर देखना चाहते हैं तो खोई हुई एकता को वापस लाना होगा। अपनी सोच का परिवर्तन करना होगा तभी भारत दोबारा अपनी उस जगह को प्राप्त कर पाएगा।

ऐसा नहीं है कि यहां के लोगों के पास दिमाग नहीं है या किसी भी प्रकार के हुनर की कमी है। यहां का दिमाग ही तो दूसरे देशों में इस्तेमाल होता है। हर जगह हर क्षेत्र में कोई न कोई भारतवासी हमेशा मिलेगा। चाहे वह नासा हो या बिल गेट्स के इलाज के लिए बुलाइ गई डॉक्टरों की टीम।

अगर यही दिमाग अपने ही देश में प्रयोग होने लग जाए तो मैं नहीं मानती की भारत को विश्व गुरु बनने से कोई भी रोक सकता है। जब प्रत्येक भारतवासी अपनी जन्मभूमि को सम्मान देने लगेगा इसे अपना सब कुछ मानेगा तो भारत फिर से सोने की चिड़िया बन जाएगा।

अगर भारत विश्व गुरु का पद वापस चाहता है तो यहां के प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश के लिए देश भक्ति जागानी होगी। अमेरिका का सर्वश्रेष्ठ होने का यही कारण है कि वहां का प्रत्येक वासी अपने देश पर फक्र करत है।

देशभक्ति और देश प्रेम की भावना ही भारत को बचा सकती है और पुनः विश्वगुरु बना सकती है। जब हम समझेंगे कि सहज मानवीय सद्भावना और विश्व–शान्ति हमारे महान देश का महान आदर्श है तभी हम अपने देश से प्यार कर पाएंगे।भारत के गौरवपूर्ण स्वरुप और इतिहास की रचना के लिए हमें कई मोर्चों पर युद्ध लड़ने हैं, यथा आर्थिक, राजनैतिक, कृषि, व्यवसाय एवं शिक्षा। इसमें हमें प्रगति करनी है। हम सब मिलकर ही अपने भारत का वह सम्मान वापस ला सकते हैं और इसे पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं।

तन्वी कटारिया बारहवीं
राष्ट्रशक्ति विद्यालय, हस्तसाल,
उत्तम नगर, दिल्ली

युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

आज समाज में प्रत्येक विचारधारा और समस्या को लेकर विभिन्न सभायें कार्य कर रही हैं परन्तु अज्ञान का पर्दा हटाकर अध्यात्म विद्या या बह्म विद्या की शिक्षा देने वाली संस्थाओं तथा केन्द्रों का सर्वथा अभाव है। अतः सर्वप्रथम तो भारत में इस प्रकार के केन्द्रों की नितान्त आवश्यकता है। केवल उदार शिक्षा, यथार्थ ज्ञान, संप्रयोग परीक्षण अथवा दार्शनिक विचार पद्धति के अभ्यास से ही ये समस्याएं दूर हो सकती हैं।

भारत आदिम संस्कृति की क्रीड़ा–भूमि है। यह ऐसा पावन एवं गौरवमय देश है जहां देवता भी जन्म लेने को लालायित रहते हैं और इसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। कथित है *''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि''*। भारत वर्ष की प्रशंसा करते हुए सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद लिखते हैं–

''अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।''

समस्त विश्व को मानवता का पावन संदेश इसी देश से प्राप्त हुआ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में विश्वास करने वाला यह देश धरती का स्वर्ग, देवताओं की पुण्यभूमि तथा विश्व का सिरमौर कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। वेदों की वाणी इसी धरा पर गूंजी थी, उपनिषदों की ज्ञानधारा इसी वसुंधरा पर प्रवाहित हुई थी, गीता का उपदेश इसी पावन धरती पर दिया गया था तथा शांति, अहिंसा, प्रेम, भाई–चारे और निष्काम कर्म का संदेश इसी धरा ने संसार को दिया था। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके कारण हम विश्व को सर्व प्रथम ज्ञान दे सके तथा जगद्गुरु कहलाए।

हमारी यही सुदृढ़ संस्कृति विपदाओं एवं जटिलतम समस्याओं को शिकस्त अथवा पराजित करती आई है। परोपकार, त्याग, अनुप्राण के जितने सुंदर एवं सक्षम उदाहरण हमारे देश के महापुरुषों से मिलते हैं, संभवतः अन्यत्र मिलते हों। आर्यभट्ट, चाणक्य जैसे विद्वान तथा गीता, वेद, उपनिषद जैसे पावन ग्रंथ भारत को सर्वोत्कृष्ट विश्वगुरु बनाते हैं।

सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय वाली भारतीय संस्कृति ने अपने विकास की प्रक्रिया में अन्य जातियों की संस्कृतियों के अच्छे गुणों को ग्रहण करके उन्हें अपने भीतर आत्मसात कर लिया और आज वे भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। दूसरों के अच्छे विचारों को ग्रहण करने में भारतीय संस्कृति ने कभी परहेज नहीं किया। अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशिष्टता रही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को 'महामानवता का सागर' कहा है। भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, दया एवं परोपकार का बहुत महत्वपूर्ण समन्वय है।

संसार में प्रत्येक वस्तु की गति तालबद्ध या नियमानुकूल है और सारी सृष्टि कालचक्र के नियम के अधीन है। इसी नियम के अनुसार सूर्य व नक्षत्र को भी घूमना पड़ता है। एक समय था जबकि भारत वर्ष में ज्ञान और वैभव का सूर्य मध्याकाश पर प्रकाशमान था। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाएं तो आकाश मण्डल के अन्य नक्षत्रों की तरह सूर्य भी धीरे–धीरे पश्चिम की और बढ़ता हुआ चल रहा है। यही प्राकृतिक नियम विश्वसनीय और सत्य हैं तो ज्ञान व विभूति का सूर्य अपनी प्रदक्षिणा अवश्य पूर्ण करेगा और भारतवर्ष पर एक बार द्विगुण कांती

से दीप्तमान होगा। भारत का प्राचीन इतिहास देखने से हमें जान पड़ता है कि अन्य देशों की दशा के समान भारत वर्ष में भी रात्रि अज्ञान व दरिद्रता रुपी अंधकार का आंतरिक मुख्य कारण संकीर्णता (परिच्छिन्नता) के अतिरिक्त कुछ और नहीं है।

शनैः शनैः इस राष्ट्र की आर्त कराह श्रोताओं का भाषण बन गया है, इसका ध्वंस दर्शकों का दृश्य। वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का विघटन चहुं और दिखाई दे रहा है। विलास और भौतिकता के मद में भ्रांत लोग बेतहाशा धनोंपार्जन की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। आज का मानव स्वार्थपरता में इस तरह आकंठ डूब चुका है कि उसे उचित–अनुचित, नीति–अनीति का भान ही नहीं हो रहा है। व्यक्ति विशेष की निज स्वार्थपूर्ति से समाज का कितना अहित हो रहा है, इसका शायद किसी को आभास नहीं है।

प्रतिद्वंद्विता से अंकित इस व्यावसायिक युग में भारत के पुनः विश्वगुरु बनने की अपरिहार्य आवश्यकता तो स्पष्ट है। अधुना प्रश्न उठता है कैसे ? इस देश की संस्कृति के निस्वार्थ भाव ने भारत को सर्वाग्रमन्य किया, उसे उज्ज्वल ज्योति का स्तम्भ अर्थात सर्व देश सरताज बनाया।

आज समाज में प्रत्येक विचारधारा और समस्या को लेकर विभिन्न सभायें कार्य कर रही हैं परन्तु अज्ञान का पर्दा हटाकर अध्यात्म विद्या या बह्म विद्या की शिक्षा देने वाली संस्थाओं तथा केन्द्रों का सर्वथा अभाव है। अतः सर्वप्रथम तो भारत में इस प्रकार के केन्द्रों की नितान्त आवश्यकता है। केवल उदार शिक्षा, यथार्थ ज्ञान, संप्रयोग परीक्षण अथवा दार्शनिक विचार पद्धति के अभ्यास से ही ये समस्याएं दूर हो सकती हैं।

ऐसे में प्रारंभिक समस्या निवृत्ति कदम के रुप में अपने ज्ञान के सागर ग्रंथों की सहायता लेनी होगी। दुःसंवाद यह है कि हम ग्रंथों को वर्तमान परिस्थितियों हेतु प्रासंगिक मान्य एवं उचित बनाने के अमोघ सतत प्रयत्न करने की अपेक्षा उसे अप्रचलित एवं सडांध होने दे रहे हैं। सूलि रुप से यह कर्त्तव्य दृष्टान्त होता है, सूक्ष्म रुप से यह से यह हमारी ही भूल का पश्चाताप होगा।

ये पावन ग्रंथ पाश्चत्य जगत् को स्मरण दिलाती है कि हमारी अत्याधिक क्रियाशील तथा एकांगी संस्कृति के समक्ष एक ऐसा संकट उपस्थित है, जिससे आत्मविनाश हो सकता है क्योंकि इसमें मौलिक तथा अध्यात्मिक सुदृढता अतुलनीय है। प्राचीन काल में यह संस्कृति निस्संदेह की त्रृटिहित थी। फिर अंग्रेजी शासन के प्रभाव में भातिकता बढ़ती गई, औधोगिकरण अपनी चरम सीमा पर है एवं अध्यात्मिक चेतना की गहराई का अभाव प्रत्यक्ष है। ऐसी गइराई के बिना हमारे चारित्रिक तथा राजनैतिक विरोध शब्दजाल बनकर रह जाते हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति उच्च आदर्शों और जीवन मूल्यों के विपरीत आचरण कर रहा है।

पाश्चात्य जगत् के पास ज्ञान तो है किंतु यह ज्ञान भी तब तक नश्वर है जब तक भारत जगत् को अपनी सरस संस्कृति से अवगत नहीं करा देता। ज्ञान का अभाव कदापि नहीं है, किंतु इसकी महत्ता जानने वालों का जरुर है। भारत विश्वगुरु इसीलिए कहला पाया था क्योंकि उसके निकट ज्ञान तो था ही, साथ ही उस ज्ञान का सम्मान कर उसे उज्जवल स्त्रोत बनाने की क्षमता भी थी। आज जो विषम परिस्थितियां हमारे समक्ष उपस्थित हैं, वे नैतिक, मौलिक पतन की पराकाष्ठा ही तो है। ऐसे में हमें मार्गदर्शक की उत्यंत आवश्यकता है।

यह तो असंख्य समाधानों में से केवल एक ही औषधि है। अपने सगटित प्रयासों से हम भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में सक्षम हैं। इस सब में युवाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण रएवं परमावश्क भूमिका है। भारत संस्कृति को जगद्मुरु का श्रेय प्राप्त होना उसकी महत्ता को उपयुक्त रुप से दर्शाता है। निरंतर प्रयासों के द्वारा भारत पुनः न केवल महाद्विप–सरीखे भारतवर्ष को सभ्यता का पाठ पढाएगा, अपितु बाहरी विशाल भू–खण्ड पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ेगा। पुनः यह संसार भारत का ऋणि हो जाएगा।

अंततः सामूहिक और प्रतिबद्ध और प्रयासों के साथ हम वास्तव में आध्यात्मिक अधोपतन को परास्त करेंगे। भारत को पुनः विश्व का गुरु बनाने में सर्वोतम सफल रहेंगे। अतः अपनी योग्यता सामर्थ्य, चातुर्थ की सहायता से, अपनी दक्षता एवं निपणता से भारत को पुनः आध्यात्मिक वैज्ञानिक, सामाजिक आर्थिक शैक्षिक, बौधिक शीर्ष बिंदु तक पहुंचा सकते हैं।

कृतिका नरुला बारहवीं ब
सेंट मारग्रेट स्कूल, प्रशांत विहार

अपने भीतर सद्‌गुणों को जगाएं

आज के भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में चारों ओर स्वार्थ ही स्वार्थ दृष्टिगोचर होता है। परोपकार का त्याग कर लोग केवल अपने लिए ही जीने लगे हैं। उन्हें देशहित से स्वहित की ज्यादा परवाह है। हमारी भारतीय संस्कृति में तो पूरी वसुधा को एक कुटुम्ब कहकर संबोधित किया गया है। भारत ने विश्व को सदा ही परोपकार का संदेश दिया है।

हमारा देश भारत अपनी सभ्यता, संस्कृति, विभिन्न धर्मों व विभिन्नता में एकता आदि खूबियों के कारण विश्व प्रसिद्ध है। भारत विश्व सभ्यता का जनक है। वेद, उपनिषद, गीता पुराण, रामायण जैसे महान ग्रन्थों की रचना इसी देश में हुई।

एक समय था जब हमारा देश धार्मिक, सांस्कृतिक व आर्थिक रुप से पूर्णतः सम्पन्न था। लोग इसे सोने की चिड़िया कहते थे। विश्व के कई देशों से लोग कभी हमारे मित्र बनकर तो कभी हमारे दुश्मन बनकर यहां आते रहे। यहां की हर चीज ने विश्व के अन्य देशों को आकर्षित किया। विश्वगुरु के पद से सम्मानित इस देश ने समूचे विश्व को मानवता, नैतिकता, सच्चरित्रता व सदाचार की शिक्षा दी। करुणा, दया, परोपकार, कर्तव्य परायणता, आत्म–संयम, इंद्रिय दमन, सत्य भाषण जैसे अनेक नैतिक मूल्यों के कारण ही भारत विश्व गुरु कहलाया। अनेक पौराणिक व ऐतिहासिक आख्यानों में इसका वर्णन किया गया है।

धीरे–धीरे जब हम देशवासियों में नैतिक मूल्यों का ह्रास प्रारंभ हुआ तो विदेशियों ने अपनी गिद्‌ध दृष्टि हम पर डाली व परिणामस्वरुप सैकड़ों वर्षों तक हम दासता की जंजीरों में जकड़े रहे। पराधीनता के इस लंबे इतिहास में हम अपने नैतिक मूल्यों को भूल बैठे व कायर बनकर दासता के अभिशाप को सहन करते रहे परंतु अगर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है तो हमें उन गुणों को एक बार फिर जीवित करना होगा, जो इस समय हमारे अंदर मर चुके हैं।

विश्व का हर धर्म करुणा और दया का पाठ पढ़ाया है। दयालु व निष्कपट व्यक्ति न तो अपने–पराये का भेदभाव रखता है और न ही अपनी हानि की परवाह करता है। हमारे देश की कई महान हस्तियों जैसे महावीर, गौतम बुद्ध व गुरु नानक देव जी ने अपने–अपने धर्मों में करुणा व दया के भाव को श्रेष्ठ बताया है। तुलसीदास जी भी कहते है।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्राण।।

परंतु ऐसा लगता है आज हमारे समाज में दया व करुणा का भाव समाप्त हो चुका है। आज हमारे आसपास ही कई लोग गरीबों–लाचारों, जानवरों, बुजुर्गों व जरुरतमंदों पर धौंस जमाते रहते हैं। हमें चाहिए की हम उनका विरोध करें व दया की भावना विकसित करने की कोशिश करें। यह भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता है। परोपकार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– पर + उपकार। इसका अर्थ है दूसरों का भला करना। इसमें स्वार्थ का अंश भी नहीं होता है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह रहा है कि हमने कभी स्वार्थ के सहारे कोई लड़ाई नहीं जीती।

आज के भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में चारों ओर स्वार्थ ही स्वार्थ दृष्टिगोचर होता है। परोपकार का त्याग कर लोग केवल अपने लिए ही जीने लगे हैं। उन्हें देशहित से स्वहित की ज्यादा परवाह है। हमारी भारतीय संस्कृति में तो पूरी वसुधा को एक कुटुम्ब कहकर संबोधित किया गया है। भारत ने विश्व को सदा ही परोपकार का संदेश दिया है।

कर्तव्यपरायणता अर्थात् सभी लोगों द्वारा अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करना। यदि किसी भी देश के नागरिक चाहे वे विद्यार्थी हो शिक्षक हों, पालक हों, नेता हों या आम जनता हो सभी आने–अपने कर्तव्यों का निर्वाह सुचारु रुप से करते रहें तो उस देश को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। हमारा देश भारत तो इस दौड़ में सबसे आगे होगा।

किसी लालच के कारण या किन्हीं अन्य कारणों से जब मनुष्य आत्म–संयम को खोता है व इसके साथ–साथ वह इंद्रिय दमन भी नहीं कर पाता तो वह अन्जाने में अपने राष्ट्र के पतन में अपना सर्वाधिक योगदान दे देता है। अतः देशहित में नागरिकों को आत्मसंयमी होना बेहद आवश्यक है।

मनुष्य का जीवन नदी की धारा के समान है व ठहराव मौत है। जीवन का उद्देश्य आगे बढ़ते रहने में ही है। इसी में सुख है, आनंद है। एक आम कहावत है– जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। भौतिक सुख–सुविधाओं के कारण हम समय के बिल्कुल पाबंद नहीं रह गए हैं व इसे व्यर्थ गंवा देते हैं। देश व समाज हित में हमें समय की महत्त को समझना होगा।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए सत्यवादिता बहुत जरुरी है। इसका अर्थ है सत्य बोलना। हमें हमेशा सत्य बोलना चाहिए तथा सच का ही साथ देना चाहिए। कहा भी गया है : सत्यमेव जयते। अर्थात् सच की ही जीत होती है। सदियों से हमारे महापुरुषों ने अपने आचार–विचारों से भारतीयों को सदाचारी बनने की राह दिखाई परंतु ऐसा लगता है कि आजकल लोगों में सत्य भाषण और सदाचार की भावना समाप्त हो चुकी है। भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए हमें इन भावनाओं को दोबारा जाग्रत करना होगा।

मानव चरित्र को ही नैतिकता का पयार्य कहा जाता है। एक समय था जब भारत नैतिकता व सच्चरित्रता से ओत–प्रोत था परंतु इसके विपरीत यदि आज हम अपने देश की राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों को देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि चारों और भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी, भाई भतीजावाद, सांप्रदायिकता तथा आलस्य आदि का बोलबाला है, इसी वजह से विश्व में हमारी छवि धूमिल हुई है। आज हमारे देश के पतन का एकमात्र कारण है जीवन मूल्यों की रिक्तता अथवा नैतिक मूल्यों की हीनता।

अतः स्पष्ट है कि देश का हर व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतार लेगा तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः विश्व में सिरमौर बन जाएंगे और हमारा देश भारत पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन हो जाएगा।

रिया शर्मा आठवीं सी
विद्या सागर स्कूल,बिचौली मर्दाना,
इंदौर, मध्य प्रदेश

जहां चाह वहीं राह

पाश्चात्य संस्कृति की लोकप्रियता भी हमारे पिछड़ेपन का एक बिन्दु है। अतः इस संस्कृति का मोह–भंग करना जरुरी है। बिना परिज्ञान के किसी और की सभ्यता को अपनाना सही नहीं होता। संस्कृति का वास्तविक रुप तो देश में रहने वाले लोगों की वेशभूषा में निहित होता है, वहां की परम्परा व भाषा में निहित होता है।

भारत– राजा भरत द्वारा दिया गया अमूल्य और अमिट नाम जो सदैव स्वर्णाक्षरित रहा है। इसके कई और नाम हैं जो लोकप्रिय हैं जैसे हिन्दुस्तान और सोने की चिड़िया। इस देश को सोने की चिड़िया कहने को नहीं कहते। जिस तरह हमारे कार्य के पीछे कोई उद्देश्य होता है, उसी प्रकार यह नाम शौर्य और समृद्धि का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि भारत की अतुलनीय गाथाएं विश्व प्रसिद्ध हैं।

यहां जन्में कई महान गुरुओं ने विश्व को शांति और संस्कृति का पाठ पढ़ाया है, अतः इस प्रदेश को गुरु कहना अनुचित नहीं है। भारत गुरुओं का प्रदेश माना गया है। इसने यूं ही इन विविधताओं में विजयश्री प्राप्त नहीं की। कठिन परिश्रम से हमारे पूर्वजों ने इसकी स्थापना की परंतु आज हम उस अभिमान को मिट्टी में मिलाते जा रहे हैं। ऐसा क्यों ? हमने विचार करने की कोशिश ही नहीं की या अगर की तो अमल नहीं किया। नहीं देखा कि विश्व गुरु वही है जो शिष्ट हो, संस्कारी और गुणवान हो, जिसकी सोच सबसे परे हो और अत्यंत महत्वपूर्ण जो स्वार्थ रहित हो, अर्थात् भ्रष्टाचार रहित हो।

समय बड़ा बलवान है, यह कथन भी सिद्ध है। समय के साथ चलते–चलते और प्रतीच्य संस्कृति के संदर्भ में आकर इतिहास का राजशीर्ष धीरे–धीरे झुकने लगा है। इसके संयोजक के उपरान्त आज हमारा एकात्म भारत दिशाहीन होता चला जा रहा है। हर प्रकार से तृप्त यह हिन्दुस्तान आज अपनी सोच में वृद्धि नहीं कर पा रहा। आज हम ऐसी दुरुह राहों पर खड़े हैं। कि उनका चयन करना अत्यंत दुर्लभ है। हमें मन की एकाग्रता से उपभोक्तावाद को त्यागना होगा और यह आयास से ही संभव है।

हम आज भाईचारे का अर्थ भूल रहे हैं। जब हम अपने में ही एकत्रित नहीं तो इस देश को एकजुट कैसे करेंगे ? अतः सामूहिक रुप में परिवर्तन अनिवार्य है। राज्यसी बंटवारे, पारिवारिक झगड़ों और धर्म, जाति और प्रांत के दैनागत और प्रज्ञापित क्लेषों से हमें उभरना होगा तभी हम देश में शांति जगा पाएंगे। विश्व गुरु बनना मोतियों की माला पिरोना है जिसका हर मोती एक–दूसरे को सहारा देता रहता है। भाईचारे का मोती सदाचारी भावना और संस्कृति को प्रेरित करता है।

पाश्चात्य संस्कृति की लोकप्रियता भी हमारे पिछड़ेपन का एक बिन्दु है। अतः इस संस्कृति का मोह–भंग करना जरुरी है। बिना परिज्ञान के किसी और की सभ्यता को अपनाना सही नहीं होता। संस्कृति का वास्तविक रुप तो देश में रहने वाले लोगों की वेशभूषा में निहित होता है, वहां की परम्परा और भाषा में निहित होता है। हमें हमारी संस्कृति पर सदैव यह विश्वास रखना चाहिए कि इसकी भव्यता और संपूर्णता आलौकिकता से परिपूर्ण है। इसकी लोकप्रियता का संपूर्ण दायित्व हमारे कंधे पर होता है। संस्कृति के हर परिप्रेक्ष्य का परिपालन करना हमारा कर्तव्य ही नहीं हमारा संकल्प और गर्व भी होना चाहिए।

कोई भी देश की संस्कृति उसका अनोखा भूषण है। वह हर दूसरे से भिन्न होती है। अतः हमें यह बिल्कुल नहीं समझना चाहिए कि हमारी संस्कृति अप्रतिभा है, विपरीत हमें सदैव उसे और निखार कर निःशेष करना चाहिए, जिससे उसकी छटा चहुं और बिखर सके।

वर्तमान समय में विश्व में देशों का तारतम्य प्रतिभागियों से भरा है। इस सबसे आगे हमें केवल विज्ञान ही पहुंचा सकता है। कई कल्पों पूर्व से ही भारत चिकित्स क्षेत्र में पारंगत था। आज हम विज्ञान में आगे है, किन्तु अव्वल आने के लिए कठिन परिश्रम और दैविक क्षमताओं की आवश्यकता है। भारत के विज्ञान ने न केवल चिकित्सा जगत अपितु अंतरिक्ष और अन्य कई वैज्ञानिक क्षेत्रों में उपलब्धियां प्राप्त की हैं किन्तु अधिक सफलता और यश प्राप्त करने के लिए आत्म विश्वास की शायद कमी है, अतएव भारतीयों को अनुप्राणित करने की आवश्यकता है जिसके उपरान्त कई बच्चे पढ़कर भारत के उज्ज्वल भविष्य के सहायक बनेंगे।

विश्व में अनेक वैज्ञानिक आविष्कार शेष हैं। हमें निरन्तर प्रगति की और अग्रसर रहना होगा। हमें विनाशकारी खोजों से दूर हटकर मानव सभ्यता को सजाने व संवारने वाले यंत्रों की खोज करनी चाहिए। वैज्ञानिक प्रगति हमारे कृषि और उद्योग के क्षेत्र का पाथेय बनें। संस्कार, शिष्टाचार, विज्ञान व मानवता के साथ–साथ स्वार्थ रहित आत्मा भी चाहिए देश की उन्नति के लिए। निःस्वार्थ वही है जिसकी भावना केवल उससे न जुड़कर उसके देश की उन्नति के लिए हो। जिस देश की जनता स्वार्थ से परिपूर्ण हो वह आत्मोत्कर्ष की चरमसीमा कभी पार नहीं कर सकती। वह केवल नृशंस और एक विभिषिका बनकर रह जाती है।

देश की डोर केवल सरकारी कर्मचारियों और बड़े उद्योगपतियों के हाथों में नहीं, उससे अधिक उसकी जनता के हाथों में होती है। छोटे–छोटे अशिष्ट और असभ्य गलतियों की तखती बढ़ते–बढ़ते भ्रष्टाचार का रुप ले लेती है। हम केवल यह याद रखना चाहिए कि देश हमारा है, उसकी देखरेख व उन्नति हमारा दायित्व है। गुरु होने की एक और विशेता यह है कि वह कभी भी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझकर अहंकार के मद में चूर नहीं होता है। जिस प्रकार एक पेड़ फलों से लदकर झुक जाता है, उसी प्रकार गुरु भी ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुंचकर, और ज्ञान प्राप्त कर दूसरों तक पहुंचाने की लालसा सदैव जगाए रखता है।

अगर उपयुक्त सभी गुण वापस उसी प्रकार विद्यमान हो गए जैसे वे सदियों पहले थे तो भारत को पुनः विश्व गुरु बनने से कोई भी नहीं रोक पाएगा। इसके स्तंभ इतने बलशाली हो जाएंगे कि वे सदैव अविच्छिन्न ही रहेंगे। यह इतना कठिन नहीं है क्योंकि जहां चाह, वहां राह।

शालिनी कुमारी, दसवीं ए
विद्या भारती चिन्मय विद्यालय
टेल्को कॉलोनी, छत्तीसगढ़

शिक्षा पद्धति को सुधारना आवश्यक

अगर भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है तो सबसे पहले यहां की शिक्षा पद्यति को सुधारना होगा और शिक्षा हर वर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य करनी होगी। इस पर भारतीय सरकार का योगदान ही सबसे महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि अगर सरकार इसके लिए कुछ कठोर नियम बनाती है तो लोग उसे अवश्य मानेंगे और अपने बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजेंगे।

विश्व गुरु से तात्पर्य है जगद्गुरु अर्थात् ऐसे गुरु जिनकी चर्चा पूरे विश्व में होती है। यह पदवी भारत को कई वर्ष पूर्व मिल चुकी थी। पर अब हालात एवं शिक्षा प्रणाली खराब होने के कारण यह पद भारत से छिन गया है। इसलिए यह भारतीयों के लिए एक सवाल है कि भारत पुनः विश्व गुरु कैसे बने ? बहुत वर्ष पूर्व भाारत में ऐसे गुरु हुआ करते थे जो अपने ज्ञान से पूरे विश्व को चौंका देते थे, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण नाम हैं– आर्यभट्ट, रामनुजन, सी.वी. रमन, सतेन्द्र नाथ बोस आदि। ये भारत के ऐसे जाने–माने वैज्ञानिक रहे, जिन्होंने छाप पूरे विश्व पर छोड़ी।

उपभोग के पीछे चलने के कारण एवं पश्चिमी संस्कृति को अपनाने के कारण यहां की शिक्षा प्रणाली कमजोर होती जा रही है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का रिश्ता केवल पैसों तक सीमित होता जा रहा है। शिक्षक सोचता है कि उसे पढ़ाने के लिए अधिक से अधिक पैसे मिले और विद्यार्थी चाहता है कि उसे कितने भी पैसे लगाने पड़े पर वह पास हो जाए। इन सभी के कारण हमारी शिक्षा प्रणाली कमजोर पड़ती जा रही है। भारत में असमान शिक्षा होने के कारण और गरीब वर्ग के न पढ़ पाने के कारण यहां की शिक्षा और कमजोर होती जा रही है।

लोग सोचते हैं कि जो विद्यालय अच्छे से सजा है वही सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है। पर यह गलत है क्योंकि स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि ''विद्यालय केवल ईंट, पत्थर, सीमेंट आदि से बना मकान नहीं होता, इसके तो मुख्य स्तम्भ गुरु होते हैं जो विद्यार्थी को अपने ज्ञान से शिक्षित करते हैं और शिक्षक सबसे ज्यादा खुश तब होता है जब उनका विद्यार्थी आगे चलकर कोई बड़ा काम करे और लोग उसके मार्गदर्शक हों।

भारत की कुछ वर्ष पूर्व की पढ़ाई और अभी की पढ़ाई में काफी अंतर आ चुका है। पहले विद्यार्थी आश्रम में पढ़ते थे और हर प्रकार की सुख–सुविधा का ख्याल खुद रखते थे। तब शिक्षक किसी के साथ भेदभाव नहीं करते थे। अभी का समय पहले से बिल्कुल विपरीत है अर्थात् आश्रम की जगह विद्यालय हो गए जहां लोग ए. सी. की सुविधा व केवल पढ़ने एवं खाने से मतलब रखते हैं। इस समय का रिश्ता छात्र और शिक्षक के बीच है, वह वहुत ही कमजोर है। कई छात्र बुरी संगत में पड़ने के कारण गलत रास्तों को अपना लेते हैं जो आगे चलकर उनके लिए काफी हानिकारक बन जाता है।

अगर भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है तो सबसे पहले यहां की शिक्षा पद्यति को सुधारना होगा और शिक्षा हर वर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य करनी होगी। इस पर भारतीय सरकार का योगदान ही सबसे महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि अगर सरकार इसके लिए कुछ कठोर नियम बनाती है तो लोग उसे अवश्य मानेंगे और अपने बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजेंगे। साथ ही विद्यार्थी के मन में शिक्षक के प्रति ऐसी सम्मान भावना पैदा करनी होगी जिससे वह शिक्षक का आदर करे और उनके द्वारा बनाए गये रास्ते पर चले।

विश्वगुरु बनने के लिए यहां के छात्रों में मानसिक एवं शारीरिक विकास बहुत आवश्यक है। भारत में एक गंभीर सवाल यह भी है कि यहां पर सबसे अधिक बच्चे कुपोषण का शिकार बनते हैं जिसके कारण भावी पीढ़ी कमजोर पड़ रही है। सरकार को इसकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि बच्चे स्वस्थ बनें और भावी भारत की सेवा में अपना योगदान दे सकें। भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए देशप्रेम की भावना भी विद्यार्थियों के मन में पैदा करनी होगी। अगर सरकार भी ऐसा कार्य करती है तो जल्द ही भारत को पुनः विश्वगुरु का पद मिल जाएगा।

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु यहां के सभी धर्म–जाति और लिंग के लोगों को साथ लेकर चलना होगा जिससे भात का पूर्ण विकास हो सके। जैसे कि राजा राममोहन राय सामाजिक बुराइयों को मिटाकर तथा कमजोर लोगों को साथ लेकर आगे बढ़े जिसकी वजह से उस क्षेत्र का काफी विकास हुआ। समाज को साथ लेकर चलने वाले गुरूओं में कुछ महत्वपूर्ण गुरु रहे हैं जिनमें विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, द्रोणाचार्य, ददीची आदि मुख्य है। अगर सभी गुरु और छात्र इस बात का ध्यान रखें और छात्र कड़ी मेहनत करें तो अवश्य ही एक दिन ऐसा आएगा जब भारत पुनः विश्वगुरु कहलाएगा।

विवेकानन्द दसवीं
भाऊराव देवरस सरस्वती
विद्या मंदिर, सै.–7, नोएडा,
उत्तर प्रदेश

बहुमुखी हो शिक्षा का उद्देश्य

भारत को पुनः विश्व गुरु के रुप में स्थापित करने के लिए सामाजिक व्यवस्था को फिर से सुदृढ़ करना होगा। मानव–मानव में जातिगत भेदभाव नहीं होना चाहिए। व्यक्ति में सामाजिक भावना का उदय करने के लिए सामाजिक संगठनों एवं केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। समाज में ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, जाति–वर्ग भेद की दीवार गिरानी होगी।

प्रत्येक प्राणी को अपने राष्ट्र, अपनी मातृभूमि से अमिट प्रेम होता है। 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कह कर माता और मातृभूमि को स्वर्ग से भी महान माना गया है। राष्ट्रीय प्रतीक ध्वज, चिन्ह, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत एवं संविधान आदि के प्रति श्रद्धाभाव देश प्रेम के भावों को पुष्ट एवं विकसित करता है। इसी भावना से प्रेरित होकर असंख्य लोगों ने इसकी स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान दिया। यही कारण है मानव के मन में अपने देश का एक अत्यंत भव्य, उन्नत, गौरवमय रुप होता है।

प्राचीन पृष्ठभूमिः हमारा प्राचीन भारत प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत था। सभ्यता का सर्वप्रथम प्रयास यहीं हुआ। अनेक देशों के लोग यहां आकर अपनी ज्ञान पिपासा को शांत किया करते थे। रामराज्य के उस युग में सर्वत्र शांति और समृद्धि थी। सभी को समान समझा जाता था। भारत सोने की चिड़िया, विश्व गुरु कहलाता था। दूध की नदियां बहती थीं। घृणा, विद्वेष, छल, प्रपंच, स्वार्थ आदि लेशमात्र भी नहीं थे।

समग्रतः भारत सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करता था। विदेशी भी प्रंशसा करते थे। किंतु जैसे कि कहावत है 'सबै दिन जात न एक समान'– परिस्थितियां बदलीं। द्रविड, हूण, कुशान आदि विदेशी आहांताओं ने हमारी सामाजिक तथा धार्मिक मर्यादाओं तथा आस्थाओं पर आघात किया। निरंतर होने वाले बाह्य आक्रमणों ने शस्य–श्यामला भारत–भू को पैरों तले कुचलने का प्रयास किया। मध्यकाल में आक्रमणकारियों ने इसे लूटा, मान–मर्यादा तथा सम्मान का हरण किया और अंग्रेजों ने आर्थिक रुप से तो देश को कमजोर बनाया ही, साथ ही साथ हमारी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मान्यताओं को भी आघात पहुंचाया।

सामाजिक स्वरुपः प्राचीन काल में भारत की सामाजिक व्यवस्था एवं संगठन अत्यंत उच्चकोटि के थे। सुदृढ़ सामाजिक मूल्य व मान्यताऐं हमारे राष्ट्रीय जीवन की रीढ़ थे। परंतु मध्यकाल से समाज जाति–प्रथा के जाल में उलझता चला गया। भारत को पुनः विश्व गुरु के रुप में स्थापित करने के लिए सामाजिक व्यवस्था को फिर से सुदृढ़ करना होगा। मानव–मानव में जातिगत भेदभाव नहीं होना चाहिए। व्यक्ति में सामाजिक भावना का उदय करने के लिए सामाजिक संगठनों एवं केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। समाज में ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, जाति–वर्ग भेद की दीवार गिरानी होगी।

नैतिक स्वरुपः भारत में दिन प्रति–दिन नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। भारत को विश्वगुरु होने के लिए नैतिक दृष्टि से भी समुन्नत होना पड़ेगा। भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय चरित्र की भावना विकसित होनी चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थों के स्थान पर राष्ट्रीय एवं सामाजिक हितों को महत्व देना होगा। परस्पर निष्ठा, कर्तव्यपरायणता, सेवा, सद्भावना, प्रेम, त्याग, भाईचारे आदि की भावना से हर देशवासी को सर्वोपरि होना पड़ेगा। तभी हमारी नैतिक मान्यताएं विश्व में अपने उज्ज्वल स्वरुप में विद्यमान होंगी।

सांस्कृतिक स्वरुप : हमारे देश की संस्कृति का मूल है– सांस्कृतिक जीवन–दर्शन का सामाजिक होना, चिंतन–शैली के रुप में एकता होना। किंतु दुर्भाग्य से आज देश सांस्कृतिक पतन की ओर जा रहा है। इस स्थिति से अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए स्थान–स्थान पर सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए जिनका उद्देश्य मानवतावाद की स्थापना तथा विश्व शांति को प्रोत्साहित करना होगा। इन सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा समस्त स्वदेशी तथा विदेशी कलाओं को प्रोत्साहित एवं विकसित करके सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास होगा।

आर्थिक स्वरुप : प्राचीन काल में आर्थिक समृद्धि के कारण भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था किंतु सैकड़ों वर्षों की पराधीनता तथा आर्थिक शोषण के कारण स्वाधीनता के 66 वर्षों बाद भी हम निर्धनता के दौर से गुजर रहे हैं। हमारी अर्थव्यवस्था विदेशी आर्थिक सहायता पर आधारित है। आर्थिक रुप से भी भारत को विश्वगुरु होने के लिए भारत के गांवों को नवीन संसाधन उपलब्ध करा कर समृद्ध बनाना हेागा। बड़े–बड़े औद्यौगिक नगर बनाकर सभी को रोजगार और आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने होने। व्यक्तिगत पूंजी को जिससे भारत का प्रत्येक नागरिक सुखी और समृद्ध हो। सभी को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध हों।

शैक्षिक स्वरुपः प्राचीन काल में भारत शिक्षा एवं कलाओं को प्रमुख केन्द्र रहा है। तक्षशिला, विक्रमशिला, नालंदा प्रभृति शिक्षा केन्द्रों में देश–विदेश के अनेकानेक छात्र भारतीय धर्म, दर्शन एवं साहित्य का अध्ययन करने आते थे। शिक्षा को व्यवसाय न मानकर आध्यात्मिक अनुष्ठान माना जाता था, किंतु आज शिक्षा में व्यावसायिकता प्रमुख हो गई है। शिक्षा केवल उपाधियां एवं नौकरी प्राप्त करने का साधन मात्र बन कर रह गई हैं। शिक्षा का स्वरुप पूर्णतया सर्वांगीण विकास को महत्व देना होगा। अधिकाधिक छात्रों को व्यावसायिक, औद्योगिक तथा रचनात्मक प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। प्रवेश धन के आधार पर न होकर योग्यता के आधार पर हो। मेधावी और निर्धन छात्रों को आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। विद्यालयों में वैज्ञानिक आविष्कारों तथा शोधों के साथ–साथ नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना करने वाले पाठ्यक्रमों का समावेश हो। जहां हम एक बार फिर से विश्व का सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से नेतृत्व करने में समर्थ होंगे और भारत फिर से विश्वगुरु के आसन पर विराजमान होगा।

राजनैतिक स्वरुपः स्वाधीनता आन्दोलन का महत्वपूर्ण कारण यह था कि तत्कालीन नेता राष्ट्रीय नेता थे। राष्ट्र और देशवासियों का हित उनके लिए सर्वोपरि था। इसके लिए बड़े से बड़ा त्याग या बलिदान हंसते–हंसते कर देते थे आज स्थिति सर्वथा विपरीत है। आज के नेता जनता के हितों की उपेक्षा करके अपनी कुर्सी एवं सत्ता को बचाने के प्रयास में ही दिन–रात संलग्न हैं। राजनीति में भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, रिश्वतखोरी जैसी बुराइयां व्याप्त है। भारत वर्ष के नागरिकों को आदर्श नेता बनाने के लिए अन्य तकनीकी संस्थाओं की भांति विशेष प्रशिक्षण संस्थान खोलने होंगे, जहां से प्रशिक्षित नेता देश के हितों की रक्षा करते हुए उसे विकास के पथ पर ले जायेंगे।

आशुतोष गुप्ता आठवीं
हिलवुड्स अकेडमी
जी ब्लाक, प्रीत विहार, दिल्ली

एक होकर बढ़ना है आगे

गरीबी और महंगाई ने भी हिंदुस्तान में अपनी जगह बना ली है। महंगाई अनेक दुष्परिणामों को जन्म देती है। आज भी महंगाई ने दिनोंदिन आसमान छू लिया है। महंगाई और गरीबी सचमुच दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है जो हमारे भारत को विश्व गुरु बनाने में रुकावटें ला रहा है।

हमारे देश के स्वराज्य के लिए कई महान नेताओं ने जान तक कुर्बान की। इन महात्माओं ने हमें स्वराज्य दिलवाया लेकिन इस स्वराज्य को हमें सुराज्य में परिवर्तित करना एक चुनौती हैं।

स्वतंत्रता पाने के बाद कृषि, उद्योग, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा आदि क्षेत्रों में भारत ने काफी तरक्की की है। विश्व के विकासशील देशों में भारत का अग्र स्थान है। इसके बावजूद हमारा देश अपनी मूल समस्याओं से मुक्ति नहीं पा सका है। हम लोग इस स्वतंत्रता का महत्व अब तक नहीं समझ पा रहे। हमारा जीवन समस्याओं की धर्मशाला है और ये हमारे देश को विश्वगुरु बनाने में रुकावटें ला रही हैं। इन समस्याओं को हमें समझ कर इन्हें हल करना चाहिए क्योंकि कही न कहीं हम भी इसमें शामिल हैं।

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने से रोकने वाली समस्याओं में निरक्षरता, गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि और प्रदूषण महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। जब पढ़ेगा इंडिया तभी तो बढ़ेगा इंडिया।

निरक्षरता हमारे भारतीयों के लिए एक अभिशाप है। दुख की बात है कि भारत में आज भी साक्ष्झरता की तुलना में निरक्षरता कई गुना ज्यादा है। निरक्षरता के होते हुए देशवासियों में राष्ट्रीयता का प्रबल भाव जाग्रत नहीं हो सकता। निरक्षरता के अभिशाप से मुक्त होने के लिए सरकार और कई सामाजिक संस्थाएं भरसक प्रयत्न कर रही हैं। सभी बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलने के अधिकार का लाभ उठाना चाहिए।

गरीबी और महंगाई ने भी हिंदुस्तान में अपनी जगह बना ली है। महंगाई अनेक दुष्परिणामों को जन्म देती है। आज भी महंगाई ने दिनोंदिन आसमान छू लिया है। महंगाई और गरीबी सचमुच दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है जो हमारे भारत को विश्व गुरु बनाने में रुकावटें ला रहा है।

जनसंख्या वृद्धि और प्रदूषण भी हमारे देश के दुश्मन हैं। जनसंख्या बढ़ने के कारण ही प्रदूषण हमें गले लगा रहा है। हमारे देश में जनसंख्या के विस्फोट के कई कारण हैं। जनसंख्या और प्रदूषण पर नियंत्रण करना आज समय की सबसे बड़ी मांग है। जनसंख्या रोकने के लिए हमें परिवार नियोजन के आदर्श को अपनाना चाहिए तभी हम प्रगति के पथ पर चल सकते हैं।

भारत के विकास में हमें एक होकर आगे बढ़ना है, अकेले होकर नहीं। एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। एकता न होने पर भारत एक अच्छा राष्ट्र होने के गौरव से वंचित हो जाएगा। राष्ट्रीय एकता कायम रखने के लिए में छोटे–मोटे झगड़े भूल कर सिर्फ राष्ट्र के विकास के बारे में ही सोचना चाहिए।

''काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।''

हमें आज का काम आज ही करना होगा। इन समस्याओं से हम परिचित हैं। सिर्फ इन्हें हमें जानना नहीं बल्कि उनका हल निकाल कर उन पर अमल भी करना होगा। तभी हमारा हिंदुस्तान पुनः विश्वगुरु बन सकता है। समाज भी अपनी समस्याओं को हल करने से मुंह ताकते हैं। 'यह मेरी जिम्मेदारी नहीं' कह कर मुंह फेर लेते हैं। इसलिए हमें ही देश के प्रति अपने कर्तव्यों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। इस कठिनाई को पार कर के ही हम अपने देश को आगे ले जा सकते हैं। हम इन समस्याओं को पूरी तरह से नष्ट तो नहीं कर सकते लेकिन कम तो कर सकते हैं ना।

समाज में ऊंच–नीच का भेदभाव दूर कर 'हम सब भाई–भाई' इस पर सोचना चाहिए। इन सबके लिए हमें आधुनिक टेक्नोलोजी (तंत्रज्ञान) का ज्ञान होना आवश्यक है। जिसके स्वर्णाक्षरों की अमर गाथा संसार के इतिहास में लिखी गई ऐसा महान भारत हमारा देश आदर्श देश तो है ही। फिर भी, भारत को विश्वगुरु बनने के काम में हमें जुट जाना है।

इन समस्याओं की चक्की में आखिर कब तक पिसते रहेंगे हम! हमें सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना हमें अपने देश को पुनः विश्वगुरु बनाना है। यह हमारा ध्येय है और लक्ष्य तक पहुंचना यही हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य है।

सोनू रमेश पडोल, ग्यारहवीं
तिलक नगर कनिष्ठ महाविद्यालय
डोंबिवली, मुम्बई, महाराष्ट्र

सबको अपना बना कर चलें

कालचक्र गति शील है व समय परिवर्तन शील है। इसलिए महानपुरुषों का यह देश भी समय के अनुसार परिवर्तित होता चला गया। पहले विदेशी लोग यहा से व्यापार करने को लालयित रहते थे, वर्तमान समय में हम जहां विदेशी सहायता की बैसाखियों के सहारे चलने का प्रयास कर रहे हैं। हम उसे हटाकर, भारत को स्वावलंबन के सहारे आर्थिक संपन्नता की और अग्रसर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

संसार में अनेक देश हैं। उन सभी देशों की अपनी–अपनी व अलग–अलग संस्कृति है। उसी श्रृंखला में हमारा देश भारतवर्ष भी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत एक प्राचीन देश है जिसका प्राचीन नाम आर्यवर्त था अर्थात ऋषियों का देश। इस नाम से यह आभास होता है कि यह देश विश्व–सभ्यता का जनक है। इसी धरा ने अध्यात्म का पाठ समूची मानवता को पढ़ाया व ज्ञान, भक्ति, कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित की। भारत के हर क्षेत्र में अनेक महान्, विद्वान, वैज्ञानिक, योद्धा, ऋषि, दार्शनिक, साहित्यकार एवं कवि हुए। महान उर्दू कवि इकबाल ने ठीक ही कहा है :

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा,

विश्व–सभ्यता का जनक : भारत विश्व–सभ्यता का जनक है। वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, गीता, रामायण जैसे पवित्र व महान ग्रंथों की रचना भी भारत में ही हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में भी जगदीश चन्द्र बसु, गणित के क्षेत्र में आचार्य महावीर स्वामी, आर्य भट्ट, नारायण पंडित आदि व चिकित्सा विज्ञान में पंतजलि, चरक तथा धन्वतरि व कवि के रुप में महर्षि वाल्मिकी जी, वेदव्यास, कबीर, सूर आदि दानवीर, दधीचि व योद्धा के रुप में भीम, अर्जुन तथा भगवान के रुप में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज श्री कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी आदि पैदा हुए जिन्होंने अपने कार्यों से भारत का नाम दुनिया में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाया।

निःसंदेह भारत महापुरुषों, देवी–देवताओं की जननी रही है। यह देश प्राकृतिक दृष्टि से भी खुशहाल रहा है। गंगा जैसी पवित्र नदी जो कि पौराणिक कथाओं से संबंधित है, वह इसी देश में बहती है। भारत देश शुरु से ही आध्यात्मिक रहा है जिसने दुनिया को वेद, पुराण, संस्कार आदि दिए हैं। जो मनुष्य को मुक्ति का रास्ता दिखाते हैं रामायण, महाभारत व गीता आदि धार्मिक पुस्तकें मनुष्य के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करती हैं।

महान संस्कृति : भारत की सभ्यता और संस्कृति की मिसालें संसार के प्रत्येक देश में दी जाती है। हमारा देश विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। सर्वप्रथम हमारे देश में ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई। मानव सभ्यता का उद्भव व विकास भी इसी पुण्य भूमि पर हुआ।

प्रकृति की पूर्ण कृपादृष्टि हमारे प्यारे भारत वर्ष पर रही है, इसलिए उसने इसे शक्ति, सौंदर्य व वैभव से अलंकृत किया है अब यह हम पर निर्भय करता है कि हम इसका सर्वोत्तम प्रयोग किस प्रकार करते हैं। हमारा भारतवर्ष निश्चय ही गुणों की खान है। प्राकृतिक सौंदर्य से लेकर नैतिकता के क्षेत्र में यह अतुलनीय है। भारत अनेकता में एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अनेक भाषाएं, अनेक धर्म फिर भी हम एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं।

सारांशतः हम यह कह सकते हैं कि हमारा भारतवर्ष भौगोलिक ही नहीं अपितु भावात्मक स्तर पर उत्कृष्ट है, क्योंकि यहां वसुधैव कुंटुंबकम् की संस्कृति आज भी जीवित है। 'अतिथि देवो भवः' की भावना प्रत्येक भारतवासी के कण–कण में समाई हुई है। हमें अपने देश पर गव है। स्वर्ग के सुखों को लुटाने वाली भारत–भूमि के विषय में जितना कहा जाए उतना ही कम प्रतीत होता है। इस पावन भूमि को कोटि–कोटि नमन करते हुए श्री धर जी ने कहा है–

आर्थिक रुप से संपन्न : हम उस भारत का स्वप्न देखते हैं जो कभी सोने की चिड़िया कहलाता है नहीं था। कालचक्र गति शील है व समय परिवर्तन शील है। इसलिए महानपुरुषों का यह देश भी समय के अनुसार परिवर्तित होता चला गया। पहले विदेशी लोग यहा व्यापार करने को लालायित रहते थे, वर्तमान समय में हम जहां विदेशी सहायता की बैसाखियों के सहारे चलने का प्रयास कर रहे हैं। हम उसे हटाकर भारत को स्वावलंबन के सहारे आर्थिक संपन्नता की और अग्रसर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

मेरे सपनों के भारत में सांप्रदायिकता, आतंकवाद व अलगाववाद की प्रवृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। मेरी कल्पना के भारत में तो जीवन के शाश्वत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की गई व लोगों में प्रेम, अंहिसा, सत्य व परोपकार आदि की भावना है। हमने जिस भारत का स्वप्न देखा है, उसमें अफसरशाही भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद व रिश्वतखोरी जैसी बुराईयों का नामोनिशान नहीं होगा।

दुर्बल राष्ट्र का विश्व–राजनीति में कोई स्थान नहीं मेरा स्वप्न है कि भारत एक शांतिप्रिय परंतु सशक्त व सुदृढ राष्ट्र बने जिसके नाममात्र से शत्रु कांप उठे।

उचित विकास कैसे : उचित विकास के लिए आवश्यक है कि हम देश की महान परंपराओं को समझें उसकी विशालता और वैभव में अपना पूरा–पूरा सहयोग दें व उन्हें देखें और समझें। तभी सही अर्थों में देश जागृत होगा।
देश भक्ति तो हृदय का स्वाभाविक भाव या प्रवाह है। जिस प्रकार कोई पुत्र अपनी माना की रक्षा करता है, उसके मान–सम्मान का ध्यान रखता है उसी प्रकार से प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है कि वह देश के सुख व उसकी रक्षा में पूरा सहयोग दें। सच्ची देशभक्ति वह है कि संकटकाल में हम अपना तन, मन धन व सर्वस्व देश के हित में अर्पण कर दें। सभी को देश प्यारा लगता है। अपने देश को प्रेम करते हुए हम विश्वप्रेम और मानव प्रेम की सीमा तक ऊपर उठे यही भावना सच्चे देश प्रेम की भावना है।

लुप्त प्रतिभाएं : आज के भौतिकवाद` युग में भारत अपनी पहचान खोता जा रहा है। अतः अब यह प्रश्न उठता है कि हम अपनी पहली अवस्था को पुनः कैसे प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में हमें यह विचारना होगा कि विश्व गुरु कैसे बन सकता है। भारत के विश्वगुरु होने का एक प्रमुख कारण आध्यात्मिकता थी। अतः यदि हम इस भौतिकता से बचकर अपने महापुरुषों, ऋषियों के प्राचीन महाकाव्यों व साहित्य के अनुसार चलना प्रारंभ कर दें तो भारत पुनः विश्व गुरु कहलाएगा।

देश के प्रति कर्तव्य : एक आदर्श नागरिक को अपने देश से स्वाभाविक प्रेम होना चाहिए। इसके लिए उसे देश की महान परंपराओं व संस्कृति को समझना चाहिए। प्राकृतिक वैभव व सुषमा की कद्र करनी चाहिए। देश के प्रति अपने लगाव में निरंतर वृद्धि करनी चाहिए। सच्ची देश भक्ति का परिचय देते हुए हमें संकट के समय अपना सर्वस्व देश–हित में अर्पित करने को तैयार रहना चाहिए। हमें देश में हो रहे गलत कार्यों पर आवाज उठानी चाहिए।

पवित्र उदार भाव : देशभक्ति कोई संकुचित भावना नहीं है। यह देश को एकता के सूत्र में बाधता है। यह तो ऐसी उदार भावना है जिसमें 'जियो व जीने दो' का भाव हमेशा जुड़ा रहता है। हमें इसे अपने स्वार्थ की कालिमा से कलुषित नहीं करना चाहिए। हमें इसे धर्म, भाषा, जाति के नाम पर नहीं बांटना चाहिए। प्रेम से सबको अपना बनाकर चलें। स्वयं विकास करें व दूसरे को भी करने दें। तभी विश्वगुरु कहलाने के लायक हमारा भारत हो जाएगा।

तनुषा त्यागी दसवीं बी
श्रीमती ब्रह्मामादेवी बालिका विद्या
मंदिर, मोदीनगर रोड, हापुड़, उत्तर प्रदेश

विगत गलतियों से लेनी होगी सीख

यदि कठिन परिस्थितियों के समय हम सभी भारतवासी एक होकर उसका सामना करते तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति भारत के सम्मान पर आंच लगा पाती ? हमें यह खोया हुआ सम्मान वापस लाने के लिए अपनी पिछली गलतियों से सीख लेनी होगी। भारत विश्व गुरु तभी बन सकता है जब देश के नागरिक एक होकर इसके विषय में सोचें। हमें आपसी प्रेम और भाईचारे की भावनाओं का विकास करना होगा।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।''

महान उर्दू कवि इकबाल जी की यह पंक्तियां भारत की सभ्यता की भव्यता का प्रतीक है। यह हमें इस बात की स्मृति कराती हैं कि हमारा यह राष्ट्र प्राचीन काल से ही विश्व गुरु का ताज पहने हुए है। संसार के अन्य देश जब अशिक्षित तथा नग्नावस्था में थे, तब हमारा यह राष्ट्र उन्नति के शिखर को छू रहा था। वह भारत ही था जिसने विश्व को उन्नति का पहला पाठ पढाया था। भारत ने ही अध्यात्म तथा ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की थी।

भारत की इस पुण्यभूमि पर आर्य भट्ट, भास्कराचार्य, सुश्रुत जैसे कई विद्वानों ने जन्म लिया जिनकी लगन और परिश्रम के कारण ही सम्पूर्ण विश्व आधुनिकता की ओर कदम बढ़ा पाया। भारत की संस्कृति जैसी उत्तम संस्कृति विश्व के किसी भी राष्ट्र की नहीं थी। भारतवासियों के बीच जैसा प्रेम और भाईचारा था, वैसा और किसी भी देश के लोगों में नहीं था।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' का पवित्र संदेश भी भारत ने ही दिया था। भारतवासियों के आदर्शों तथा सद्‌गुणों के कारण ही भारत को विश्व गुरु होने का सम्मान प्राप्त हुआ था। पर क्या आज भी भारत को सबसे उन्नत राष्ट्र माना जाता है ? क्या आज भी भारत को विश्व गुरु होने का सम्मान प्राप्त है ?

यदि हम भारत की वर्तमान स्थिति के विषय में चर्चा करें तो हमें यह ज्ञात होगा कि हमारे राष्ट्र की स्थिति इतनी अनुकूल नहीं है। भारत के सिर पर अब विश्व गुरु का ताज नहीं है। प्राचीन काल से ही भारत से यह ताज छीनने के कई प्रयास किये गये हैं। ऐसे ही कई प्रयासों का धीरे–धीरे प्रभाव पड़ने लगा और भारत श्रेष्ठता प्राप्त करने की इस दौड़ में पीछे रह गया। दूसरे देशों ने अपनी चालाकी से भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गये आविष्कारों को अपने नाम से विश्व के सामने रख दिया और सारा श्रेय ले गये।

भारत की इस भूमि से आकर्षित होकर कई आक्रमणकारियों ने इस पावन भूमि पर आक्रमण किया और जो सम्मान हमें सदियों से प्राप्त था, वह हमसे छीन लिया। भारत की वर्तमान स्थिति के लिए केवल इन आक्रमणों तथा षड्‌यंत्रों को जिम्मेदार मानना ठीक नहीं होगा। भारत की स्थिति के लिए कहीं न कहीं हम भारतवासी भी कसूरवार हैं। एक देश के सम्मान की रक्षा करने की जिम्मेदारी उसके देशवासियों की है।

यदि कठिन परिस्थितियों के समय हम सभी भारतवासी एक होकर उसका सामना करते तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति भारत के सम्मान पर आंच लगा पाती ? हमें यह खोया हुआ सम्मान वापस लाने के लिए अपनी पिछली गलतियों से सीख लेनी होगी। भारत विश्व गुरु तभी बन सकता है जब देश के नागरिक एक

होकर इसके विषय में सोचें। हमें आपसी प्रेम और भाईचारे की भावनाओं का विकास करना होगा। हमें अपने अंदर के भेदभावों को खत्म करना होगा। हमें अपने आप को यह याद दिलाना होगा कि हम सबसे पहले एक भारतीय हैं, और इस देश के अन्य नागरिक हमारे भाई–बहन। अतः भारतवासियों में पल रहे धर्म, संप्रदाय के भेदभावों का विनाश कर हमें भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने की ओर अपना पहला कदम उठाना होगा।

भारतवासियों द्वारा भारत को विश्वगुरु बनाने के प्रयासों का असफल होने का और एक कारण है। वह कारण है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार की समस्या अन्य सभी समस्याओं से गंभीर है। कहा जाता है कि भ्रष्टाचार एक विकराल नाग है और जिस समाज में यह अपने फन फैला लेता है वह समाज बर्बाद हो जाता है। यह बहुत ही दुख की बात है कि भारत की भूमि पर भी यह अपने फन तेजी से फैलाता जा रहा है।

वर्तमान काल में सभी का जीवन स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। सभी धन प्राप्ति में लगे हुए हैं। सभी लोग धन प्राप्ति में इतने मग्न हो गए हैं कि वे देश की उन्नति से पहले अपनी उन्नति को रखते हैं। यदि हम अपने प्रयासों में सफल होना चाहते हैं तो हमें अपने इस स्वार्थ से मुक्ति पानी होगी। हमें अपना मनोबल ऊँचा करना होगा तथा देश की उन्नति को सबसे अधिक बल देना होगा। यदि हम भ्रष्टाचार रुपी इस नाग से बच जाएं तो हम भारत को विश्व गुरु बनाने के सपने को सच्चाई में बदल सकते हैं।

क्या केवल भ्रष्टाचार से मुक्ति पा लेने से हमारा राष्ट्र विश्व गुरु बन पाएगा ? इस प्रश्न का हमें यह उत्तर मिलेगा कि भारत का पुनः विश्व गुरु बनना असंभव है जब तक भारतवासियों में देशप्रेम की भावना उत्पन्न न हो जब तक हम देश के हित के लिए सब कुछ न्योछावर न करें, तब तक हम भारत की प्रगति की रफ्तार को बढ़ा नहीं सकते। जिस मिट्टी से हमारी यादें जुड़ी हैं, जिस मिट्टी में हमारा शरीर बना है, जिस भूमि ने अपने सभी वासियों का पोषण किया उसके प्रति हमें भी कार्य करने चाहिए। हमें उन सभी वीर जवानों के आदर्शों का पालन करना चाहिए जिन्होंने भारतमाता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

हमें उसी देश के लिए कार्य करना चाहिए जिसमें हमने जन्म लिया हो। हमें यदि अपने देश को छोड़ किसी और देश से प्रेम है तो हमारा हृदय पत्थर के समान है। गुप्त जी ने ठीक ही कहा है – ''वह हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

आजकल भारतवासियों की मनोवृत्ति देखकर तो ऐसा महसूस होता है कि सभी के हृदय पत्थरों में परिवर्तित हो गए हैं। वर्तमान में कई भारतवासी अच्छी नौकरी की तलाश में दूसरे देशों में चले जाते हैं और उन देशों की उन्नति के भागीदार बन जाते हैं। देश प्रेम की भावना के विकास से ही हमारा देश श्रेष्ठता प्राप्त करने के इस दौड़ में फिर से वापस आ सकता है।

भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए हमें कई और समस्याओं का भी समाधान करना होगा। भारत में आतंकवाद, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी आदि समस्याओं ने अपनी जड़ें मजबूत कर ली हैं। इन सब से मुक्ति पाने से ही हमारा राष्ट्र विकास की सीढ़ियों को चढ़ सकता है। भारत को विश्व गुरु बनाने का कर्तव्य भारत के नागरिकों का है। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए एकजुट होकर भारत के हित में कार्य करना होगा।

हम भारतवासी ही अपने कर्तव्य का पालन करें और भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए अपना पहला कदम लें। हम भारतवासियों के प्रयास से वह दिन दूर नहीं होगा जब हम कह सकेंगे– ''विश्व विजयी तिंरगा प्यारा, विश्व गुरु है भारत हमारा।''

पूरव नौवीं–बी
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
वसंत कुज, दिल्ली

दिनोंदिन प्रगति से बनेगा विश्वगुरु

आपने देखा होगा कि बड़े लोग जिन्होंने जिंदगी में महान काम किए हैं वे सिर्फ अपने व अपने देश को ही महान बोलते हैं। भारत सभी को सामान्य रुप से देखता है। आज सभी देश अलग–अलग क्षेत्रों में बंट गए हैं। सभी देश आज एक–दूसरे को हानि पहुंचाना चाहते हैं परंतु भारत सभी देशों को अपने भाई के रुप में देखता है।

हमारा देश ऐसा देश है जहां पर विभिन्न संप्रदाय के लोग रहते हैं। भारत को हिंदोस्तान, आर्यवर्त तथा अंग्रेजी में इंडिया भी कहते हैं। भारत के नागरिक परस्पर एक–दूसरे पर विश्वास करते हैं। किसी व्यक्ति विशेष, समुदाय, संगठन इत्यादि की महानता इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी महानता या अच्छे कार्यों का अनुकरण कर कितने लोग समुदाय या संगठन महान बने हैं न कि इस पर कि वह स्वयं कितना महान है।

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है जहां के संविधान में प्रत्येक भारतीय को स्वतंत्रता का अधिकार समता का अधिकार एवं अन्य मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। भारत के प्राचीन सभ्यता से विश्व गुरु कहा जाता है क्योंकि जब समस्त संसार अंधकार एवं अविश्वास में था तब भारत मनुष्य एवं उसकी पहचान के विषय में जागृत एवं शिक्षा प्रदान करता था। जो मनुष्य अपने आप को महान व देश को महान करार करता है वह असल में न तो महान होता है न ही गुरु बन पाता है।

आपने देखा होगा कि बड़े लोग जिन्होंने जिंदगी में महान काम किए हैं वे सिर्फ अपने व अपने देश को ही महान बोलते हैं। भारत सभी को सामान्य रुप से देखता है। आज सभी देश अलग–अलग क्षेत्रों में बंट गए हैं। सभी देश आज एक–दूसरे को हानि पहुंचाना चाहते हैं परंतु भारत सभी देशों को अपने भाई के रुप में देखता है।

भारत में देश–विदेश के लोग शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। भारत एक सोने का देश है। यदि भारतीयों को सोने का मूल्य पता होता तो अंग्रेज हमारे भाईचारे, स्वभाव का दुरुपयोग नहीं करते। इसके अलावा भारत में गुणी, शिक्षित लोग रहते हैं जो मृत्यु लोक को जीवित करते हैं।

हमारे मन में एक सवाल जागृत होता है कि यदि भारत का इतिहास इतना अच्छा था तो क्यों आज भारत को अन्य देशों की तुलना में इतनी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। जवाब यह है कि भारतीय सिर्फ रंग रुप में ही भारतीय थे, वे हर चीज के लिए अन्य देशों पर निर्भर रहते थे। परतंत्रता के समय लॉर्ड मैकाले ने कहा था कि ''मैं अंग्रेजी को भारत के राज्यरुप में मान्यता दिलवाना चाहता हूं और हर साल यहां ब्रिटिश के झंडे लहराए जाएंगे।'' परंतु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसे देश–प्रेमियों ने इसका विरोध किया और हिंदी भाषा को मान्यता दिलवाई।

प्राचीन काल में भारत का व्यापार अन्य देशों में होता था। हमारे देश की अर्थव्यवस्था प्रारम्भ से मजबूत रही है और आज के समय में जब विश्व भर में मंदी का दौर था, जिसका असर अमेरिका, ब्रिटेन पर भी पड़ा, उस समय भी हमारा देश एक शक्तिशाली और मजबूत अर्थव्यवस्था के रुप में था। हमारा देश किसी के सामने झुका नहीं।

विज्ञान के क्षेत्र में भी हमारा देश इतना प्रगति कर चुका है कि विश्व में सबसे पहले हमारे देश के वैज्ञानिकों ने चांद पर पानी की खोज की थी। हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अग्नि 5, अग्नि 6, अग्नि–4, जैसे दूर तक मार करने वाली मिसाइलों का निर्माण किया है और पूरे विश्व में अपना नाम दर्ज करवाया है।

आज भी हमारा देश संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा के क्षेत्र में सभी देशों से आगे हैं। अन्य देशों के लोग हमारी संस्कृति को सीखने के लिए आते हैं। भारत का वैश्विक स्तर पर प्रभाव उसकी आर्थिक प्रगति की वजह से बढ़ा है। हमारा देश आज भी विज्ञान, कला, साहित्य, शिक्षा, सभ्यता, अर्थव्यवस्था, के क्षेत्रों में इतनी तेजी से प्रगति कर रहा है कि वह विश्व का गुरु बन सकता है।

साक्षी सिंह आठवीं बी
वासवदत्ता विद्या विहार,
सेड़म, जिला : गुलबर्गा, कर्नाटक

कमजोरियों पर विजय बनाएगी विश्वगुरु

आचार्य महाप्रज्ञ जी के अणुव्रत वाक्य का पालन करना पड़ेगा कि ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा। व्यक्ति को सुधारने के लिए आध्यात्मिक उन्नति आवश्यक है। आध्यात्कि उन्नति मतलब आत्मा की उन्नति, भावों की शुद्धि। आर्थिक क्षेत्र को समर्थ बनाने के लिए आचार्य कौटिल्य–चरित नीतिशास्त्र से प्रेरणा लेकर सक्रिय नीतियां अपनानी होंगी।

''दक्षिण में रत्नाकर समुद्र जिसके चरण–प्रक्षालन कर रहा है, नगाधिराज हिमालय इसके उत्तर में मुकुटमणि की तरह शोभायमान है और जो ब्रह्मर्षि और राजरत्नों से समृद्ध उस भारतमाता को मैं वंदन करतीं हूं।'' ये पक्तियां भारत के गौरवशाली इतिहास की साक्षी है।

प्राचीन भारत विश्वगुरु : जिसके स्वातंत्रता– संग्राम की अमरगाथा संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखी गई है, ऐसा महान भारत हमारा देश है। भारत के भूतकाल का प्रत्येक पृष्ठ भव्य, रम्य एवं समृद्ध है। उस समय हमारे देश में विद्या संपत्ति, बुद्धिसंपत्ति, द्रव्य संपत्ति तथा आध्यात्मिक संपत्ति का विकास चरम शिखर पर था। मर्यादापुरुषोतम राम, आज्ञापालक भीष्म, सत्यनिष्ठ युधिष्ठिर, पराक्रमी विक्रमादित्य आदि अनेक चक्रवर्ती राजाओं ने भारत की भूमि को गर्वित किया है।

रघुकुलगुरु वशिष्ठ, रामायणकार वाल्मीकि, महाभारतकार व्यास, संपूर्ण समुद्र को पी जाने वाले अगस्त्यमुनि, वैदिक संस्कृति के प्रस्थापक शंकराचार्य आदि महर्षिओं की पदरज से यह भूमि पवित्र हुई है। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, उत्तम रामचरित जैसी जग प्रसिद्ध काव्यकृतियां, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता जैसे वैदकीय ग्रंथ, कामशास्त्र का ज्ञान देता हुआ कामसूत्र, महान ग्रंथ नीतिशास्त्र, गणित शास्त्र को प्रकाशित करता हुआ आर्यभट्टीयम् इत्यादि ग्रंथ रत्न हमारे कीर्ति कलश हैं। ऐसे भारत की प्रशस्ति करते हुए डॉ. रमाकान्त शुक्ल कहते हैं :

यत्र मन्दाकिनी पापसंहारिणी
यत्र गोदावरी चारुसन्चारिणी
देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
भूतले भावि तन्मामकं भारतम्।

शौर्य, पराक्रम, द्रव्य, उदारता, हुकता, क्षमा, करुणा से संपृकत तथा तत्वज्ञान के शिखर पर विराजमान रहकर भारत ने भूतकाल में यथार्थवतः विश्वगुरु की भूमिका निभाई थी। हमारे निबंध के शीर्षक में उल्लिखित ''पुनः विश्वगुरु'' शब्द महत्वपूर्ण है, जो सूचित करते हैं कि भारत भूतकाल में विश्वगुरु था।

मुगलों एवं अंग्रेजों का आक्रमण : 9 वीं–10 वीं सदी तक शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, राजशेखर, आचार्य मम्मट आदि विद्वानों की विद्वता के ज्ञान का प्रकाश चारों दिशाओं में व्याप्त था। भारत इनकी विद्वता से परिपूर्ण था। किन्तु यह कहते हैं कि *''समय बड़ा बलवान है, नहीं कोई बलवान''* अतः समय के प्रवाह के साथ परिवर्तन का दौर शुरु हुआ। बारहवीं शताब्दी के पश्चात भारत पर मुगल सुलतानों ने आक्रमण किया और भारतीय संस्कृति के पतन की शुरुआत हुई। हुमायूं, अकबर, जैसे बादशाहों ने प्रजा के विकास के कार्य किए, परंतु ज्यादातर सुलतानों ने अपने धर्म की स्थापना को महत्व दे कर प्रजा का शोषण किया और लूट मचाई। मुगल शासन से

हमें मुक्ति मिली ही नहीं थी कि फ्रेंच, पोर्टुगीज, डच, अंग्रेज आदि यूरोपियन ने भारत में घुसपैठ की। व्यापार हेतु अतिथि बनकर आए अंग्रेजों ने तत्पश्चात् संपूर्ण भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया और 200 वर्षों तक शोषण, अत्याचार, धर्म–परिवर्तन किया और करवाया। अतः देशजनों में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो गया। इस अत्याचार में भारतमाता को मुक्ति दिलाने के लिए कई महापुरुषों और विभूतियों का जन्म हुआ।

स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि ने प्रजा के नैतिक, भौतिक और आध्यात्मिक पुनरुतार्थ के लिए और महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, सरदार पटेल जैसे स्वतंत्रवीरों ने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए प्रचंड पुरुषार्थ किया। फलस्वरुप हमें 1947 में आजादी तो मिली लेकिन अंग्रेजों की कूटनीति के कारण विशाल आर्यावर्त का विभाजन हो गया और भारत तथा पाकिस्तान यह दो राष्ट्र अस्तित्व में आयें। बाद में कोमी हुल्लड़, हिंदू–मुस्लिम अनैक्य, आंतरिक विषवाद की वजह से 1971 में बांग्लालेश भी भारत से विभक्त हुआ। इस कारण विशाल भौगोलिक कद का स्वामी हमारा देश कई टुकड़ों में बंट गया और अपने विश्वगुरु के पद से क्रमशः अवनत हुआ।

भारत की वर्तमान स्थिति : अंग्रेज गए पर अपनी निशानी छोड़ गए। अंग्रेजों ने जिस तकनीकी युग का प्रारंभ किया था, वह स्वतंत्रता के पश्चात प्रतिदिन नूतन स्वरुप से विकसित होता गया। साथ ही देश की बढ़ती हुई जनसंख्या में संस्कारों की अवगति हो गई। आज के भौतिकवादी, भोगवादी, उपभोक्तावादी, दृष्टिकोण, ग्लैमर, महंगे शौक, रातोंरात धनवान बनने, संस्कृति के अनुकरण ने भारत में बहुत विसंगति या और विकृतियों को जन्म दिया है।

पुन : विश्वगुरु बनने की और प्रयाण : वर्तमान समय में इस भयावह परिस्थिति का सृजन हुआ है, उसका मूल कारण यह है कि हम हमारी संस्कृति एवं संस्कारों को भूल गए हैं। यदि हमें पुनः समर्थ बनना है, पुनः विश्वगुरु का पद प्राप्त करना है तो हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं को और सुसुप्त शक्तिओं को जागृत करना है। व्यक्ति को गुरु बनना हो तो उसमें ज्ञान, नैतिक मूल्य, सद्भावना आदि आवश्यक है। ठीक उसी तरह विश्व गुरु बनने के लिए समस्त देशवासियों में सद्भावना, विश्वबंधुत्व, प्रामाणिकता जैसे आदर्शों से देश–दुनिया को उस दिशा में कार्यरत करना होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ जी के अणुव्रत वाक्य का पालन करना पड़ेगा कि ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा। व्यक्ति को सुधारने के लिए आध्यात्मिक उन्नति आवश्यक है। आध्यात्कि उन्नति मतलब आत्मा की उन्नति, भावों की शुद्धि। आर्थिक क्षेत्र को समर्थ बनाने के लिए आचार्य कौटिल्य–चरित नीतिशास्त्र से प्रेरणा लेकर सक्रिय नीतियां अपनानी होंगी। इससे देश की गरीबी, बेकारी, महंगाई, आदि समस्याओं का निवारण होगा।

जगद्गुरु कृष्ण की भूमि पर आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ युगानुरुप तकनीकि परिवर्तन जरुरी है। देश को महाशक्ति बनाने के लिए हमें तकनीक के साथ संस्कृति का भी समुचित समन्वय करना होगा। इस तरह अद्यतन खोज को देश में आविष्कृत करने के साथ–साथ हमें शांति के कार्यों में भी सतत प्रवृत्त रहना पड़ेगा। इन आदर्श कार्यों में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने युवापीढ़ी को इस दिशा में कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित किया है। क्योंकि युवा पीढ़ी इस कार्य को सही ढ़ंग से और पूर्ण स्फूर्ति से कर सकती है।

अतः भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए हमें बाहर नहीं स्वयं से ही युद्ध करना होगा। अपने अंदर की बुराइयों, और कमजोरिओं के साथ युद्ध करके जीत हासिल करनी होगी। अन्याय , अनैतिकता, भ्रष्टाचार आदि की घुसपैठ के लिए खुद की योग्यता के बारे में भी सोचना चाहिए कि दूसरे तो जो हैं सो हैं लेकिन हम कितने दूध के धुले हैं सच्चा राष्ट्रभक्त बनने के लिए देश की सीमा पर जाकर गोली चलाने की या नेता बनकर नारेबाजी करने की जरुरत नहीं है। सच्चा नागरिक बनना ही देशभक्ति है। जब व्यक्ति का यह आचरण सुधरेगा तभी वह सदाचारी बनेगा। देश में सदाचार के प्रचार से भ्रष्टाचार, कोमवाद, हिंसा, अनैतिकता और अंधविश्वास का जड़मूल से नाश होगा। जब यह परिस्थिति होगी तभी बन पाएगा भारत विश्वगुरु।

गोठीवाला मेघना अशोक भाई
सेठ श्री प्राणलाल हीरालाल
बचकाणीवाला विद्या मंदिर
खारवेर नगर, सूरत

विश्व गुरु बनने का मंत्र है तकनीक

दुनिया की आर्थिक महाशक्तियां तकनीक के मामले में भी आगे हैं। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत तकनीकी सैक्टरों से ही आता है। तकनीक के विभिन्न आयामों का इस्तेमाल करके हम भारत के भी कई शहरों की कायाकल्प कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर तकनीक की मदद से कृषि उत्पादन को उल्लेखनीय तौर पर बढ़ाया जा सकता है।

एक अरब की आबादी वाला मुल्क भारत, दुनिया की शीर्ष तीन आर्थिक महाशक्तियों में शामिल होने की राह पर सधे हुए कदमों से आगे बढ़ रहा है। लेकिन हकीकत का एक चेहरा और भी है। प्रति व्यक्ति के लिहाज से भारत की औसत घरेलू आय 750 डॉलर है, जो कि सभी 53 अफ्रीकी देशों से भी 20 फीसदी कम है। यही वजह है कि आज भारत की क्षमताओं और इसकी हकीकत के बीच खाई को पाटने की सख्त जरुरत आन पड़ी है। यह न केवल सिर्फ भारत के लिए जरुरी है बल्कि दुनिया की भलाई के लिए भी इसे अंजाम दिए जाने की अहमियत है।

भारतीय कायाकल्प के जरिए ही दुनिया की शक्लो – सूरत में इस लिहाज से आमूल–चूल बदलाव लाया जा सकता है। इससे न सिर्फ क्षेत्रीय भेदभाव मिटेगा बल्कि हर कही लोगों के जीवनस्तर को भी बेहतरीन बनाया जा सकेगा। वह इसलिए क्योंकि हमारी धरती पर रहने वाले समूचे इंसानों में से हर छठा आदमी इसी देश में रहता है। इस ख्वाब को हकीकत में बदलने के लिए भारत को कुछ चीजों को करना होगा। हालांकि जरुरत हमारी अर्थव्यवस्था के हर पहलू में तकनीकी विकास की है और इसे ही हमारी सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए प्रमुख हथियार बनाने की है।

दुनिया की आर्थिक महाशक्तियां तकनीक के मामले में भी आगे हैं। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत तकनीकी सैक्टरों से ही आता है। तकनीक के विभिन्न आयामों का इस्तेमाल करके हम भारत के भी कई शहरों की कायाकल्प कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर तकनीक की मदद से कृषि उत्पादन को उल्लेखनीय तौर पर बढ़ाया जा सकता है।

मेरा मानना है कि कृषि क्षेत्र में एक बार फिर से आर्थिक और सामाजिक विकास का इंजन बन कर उभरने की कुव्वत है। भारत के किसान अर्थ व्यवस्था में खतरे के मुहाने पर सबसे आगे खड़े हैं। वे मौसमी अनिश्चितताएं झेलते हैं, उत्पादन की बिकवाली के उनके पास कोई भरोसेमंद स्त्रोत नहीं हैं। उत्पाद के बदले बेहद कम रकम उनकी जेबों में आती है, संसाधनों की उनके पास उपलब्धता बेहद कम और स्तर बेहद घटिया होता जा रहा है। इन सबसे ऊपर बिजी संस्थाओं से कर्जा लेने की सबसे ज्यादा कीमत उन्हें ही चुकानी पड़ती है।

दुर्भाग्य से, उन्हें फसल की कम कीमत, कम निवेश, कम उपज और कम आमदनी के सिस्टम का शिकार होना पड़ता है। संसाधनों की कमी उन्हें हर चीज के लिए झेलनी पड़ती है, चाहे वह जमीन हो, पानी, फसल का पोषण या फसलों की सुरक्षा। यहां एक विरोधाभास है। क्योंकि दूसरे देशों से अगर तुलना की जाए, खासतौर पर अमेरिका और नीन से तो भारत के पास सबसे ज्यादा अनुपात के लिए जमीन है। सच तो यह है कि समूचे एशिया में तो भारत के पास 30 प्रतिशत सिंचाई वाली जमीन है।

हमने औद्योगिक क्रांति के मौके को गंवा दिया और पीछे रह गये। सौभाग्य से हम फिर से दौड़ में शामिल हो गए क्योंकि उपनिवेशवादी शासन से आजादी के तुरंत बाद बने उच्च शिक्षा के संस्थानों, प्रशिक्षित श्रमशक्ति के खजाने ने हमें मालामाल कर दिया। आर्थिक सुधारों ने हमारी नई पीढ़ी की ऊर्जा शक्ति को अडिग बना दिया और ग्लोबलाईजेशन ने भवनाओं के नये दरवाजे खोल दिये। हमें लोगों को इस नींव को और मजबूत बनाना होगा और दरवाजा खटखटाती संभावनाओं का पूरा फायदा उठाना से कतई चूकना नहीं है।

ज्यादा ऊपज वाली हाइब्रिड फसलों के जरिए हरित क्रांति करके हमने एक ऐतिहासिक काम किया है। लेकिन तब से कृषि में तकनीकी विकास की हमारी रफ्तार सुस्त रही है। आज भारत को सूखे और रासायनिक कारकों से अप्रभावित फसलों के लिए तकनीक के विकास की जरुरत है।

नई तकनीक से भारत के पास समाज की कायाकल्प करने का माद्दा भी है। यह हर व्यक्ति को अलग–अलग तौर पर अपनी सामर्थ्य बढ़ाने में भी मदद कर सकती है। सच्ची ताकत वही है, जिसके जरिये कोई भी व्यक्ति अपनी तकदीर की इबादत में कुछ फेरबदल करने या फिर उसे नया आकार देने की कुव्वत दिला सके।

मेरे विचार से पूरी दुनिया गुट में रचने–बसने वाली शक्ति से हर व्यक्ति विशेष में रचने बसने वाली शक्ति की और है। तकनीक की मदद से ही यह बदलाव संभव है। तकनीक हर शख्स को चुनने, संवाद करने, जुड़ने बनने का केवल एक ही मंत्र है और वह है तकनीक। केवल तकनीक ही हमारी मदद कर सकती है विश्व गुरु बनने में।

श्रेया सिंह दसवीं बी
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल,
हडसन लेन, किंगस्वे कैंप, दिल्ली

जनसंख्या वृद्धि पर रोक जरुरी

हमें हमारे समाज से भ्रष्टाचार को भी रोकना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊंचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरुप लेकर विकसित हो।

भारत हमारी मातृभूमि है। अपनी जन्म भूमि से सभी को प्यार होता है। भारत विश्व का श्रेष्ठ देश है। इसकी श्रेष्ठता और महानता की घोषणा सदियों पूर्व ही हो गई है। भारत को अंग्रेजों के आने से पहले सोने की चिड़िया भी कहा जाता था। भारत में बादशाहों का भी काफी साल राज रहा है। भारत के आखिरी मुगल बहादुर शाह जफर थे। उनके बाद हमारे देश पर अंग्रेजों ने दो सौ साल राज किया। अंग्रेजों ने भारतवासियों पर बहुत अत्याचार किए। भारत को हर तरह से बदल दिया।

भारत ने स्वतंत्रता तो प्राप्त की मगर उसके साथ–साथ उसका विभाजन भी हुआ। 15 अगस्त, 1947 को भारत ने अंग्रेजों के जाल से स्वतंत्रता प्राप्त की, इस को हर साल हम भारतवासी स्वतंत्रता दिवस के नाम से एक त्यौहार की तरह पूरे भारत में मनाते हैं। भारत में फिर लोकतंत्र आया। विभाजन के बाद भी भारत की संस्कृति एकता के गीत पूरे विश्व में गाए जाते हैं।

भारत ही वह देश है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात किया है। सभी धर्मों और त्योहारों को मनाने वाला भारत देश एकता का प्रतीक है। भारत की जन्म भूमि पर देश के महान पुरुषों ने जन्म लिया है। आर्य भट्ट जैसे गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य, सुश्रुत जैसे चिकित्सक भारत के हैं पर इन सब के बाद भारत विश्व के अनेक देशों में कहीं न कहीं पीछे रह गया है। इस सब का सबसे बड़ा कारण हम स्वयं ही हैं।

आज आबादी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। भारत स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी जिन अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उनमें से सबसे भयंकर एक विकराल समस्या है जनसंख्या वृद्धि। गरीबी, बेरोजगारी, घटते संसाधन, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं की जड़ यही है। यही समस्या अन्य अनके समस्याओं के मूल में है। इसके कारण नागरिकों का नैमित पतन होता है, जिसके फलस्वरुप राष्ट्रीय चरित्र की हानि तथा कार्य क्षमता एवं राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ता है।

जनसंख्या बढ़ने के कारण अनेक हैं–छोटी उम्र में विवाह, पुत्र की कामना, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएं, भाग्यवादी दृष्टिकोण, अशिक्षा, जानकारी का अभाव आदि। यही कारण है जिन की वजह से भारत आज पीछे है। लड़कियों को लड़कों से कम समझना और उनको घर से बाहर न जाने देना यही तो भारतवासियों की पिछड़ी सोच है जिसकी वजह से भारतवासियों को पूरे विश्व में कमजोर समझा जाता है।

भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरुप भ्रष्टाचार के कारण धुंधला–सा हो गया है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रुप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यही है कि इस अर्थ प्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीकों को अपना रहा है। कमरतोड़ महंगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है।

हर दिन हमें भ्रष्टाचार के कितने किस्से सुनने में आते हैं। डाक्टरों को हम भगवान का दूसरा रुप समझते हैं पर वे भी हमारे साथ धोखा करते हैं। यह बात स्टार प्लस पर आने वाले शो 'सत्यमेव जयते' में काफी अच्छी तरह से बताई एवं दिखाई गई थी। उसमें बेईमानी के बारे में भी दिखाया गया था कि किस तरह फलों–सब्जियों को अच्छा दिखाने के लिए वह खतरनाक और जेहरीली दवाईयों का प्रयोग करते हैं। इन्हीं लोगों की वजह से भारत आज वहां नहीं जहां उसे होना चाहिए।

बदलाव कोई बादल नहीं जो बरसेगा। आज आबादी को ही जागना होगा। हर बार कोई महात्मा गांधी की तरह हमारी सहायता करने नहीं आऐगा। आज जरुरत है कि हम वह व्यक्ति बनें जो पहला कदम उठाएं क्योंकि अगर एक व्यक्ति बदलेगा तो समाज बदलेगा और अगर समाज बदलेगा तो वो सुधार, बदलाव पूरे देश में नजर आएगा। हमें अपनी सोच को बदलना होगा। आज भी कुछ लोग जादू–टोने में विश्वास रखते हैं और पीछे रह जाते हैं। परंपराओं की अंध–आसक्ति ने हमारे विकास को रोक दिया। हमें धर्म के वास्तविक रुप को समझ कर उसका आचरण कर प्रगति की और बढ़ना चाहिए।

भारत भूमि अहिंसा की पुजारी है पर पिछले कुछ दशकों से सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवाद का बोलबाला है। कुछ–कुछ दिनों बाद आतंकवादी हमलों के बारे में सुनने में आता है। मासूम लोग मारे जाते हैं। भारत के कई राज्य जैसे–कश्मीर असम, बिहार, आदि आतंकवाद के शिकार हो चुके हैं। अभी कुछ दिनों पहले ही असम में मुसलमानों पर हमलों के बारे में सुनने में आया था। यह सब हादसे भारत की दूसरे देशों पर एक बुरी छवि छोड़ते हैं।

आवश्कता है इसके विरुद्ध कठोर कदम उठाने की। कहते हैं– ''लातों के भूत बातों से नहीं मानते''। अतः आतंकवाद रुपी सांप के फन को कुचलने का हमें पूर्ण प्रयास करना होगा। इस अभियान में देश के प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है।

करोड़ों रुपये लगाकर हम उपग्रह बना रहे हैं, वैज्ञानिक प्रगति में विश्व के महान राष्ट्रों की गिनती में आना चाहते हैं, किंतु गरीबी से भारत का जन भूखा और नंगा है। आज भारत की जनता महंगाई की चक्की में पिसती जा रही है। महंगाई की खाई भरने के चार उपाय है कर चोरी को रोकना,राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंध तथा संचालन में तीव्र कुशलता, सरकारी खर्चों में योजनाबद्ध रुप में कमी का आह्वाहन, मांग के अनुसार उत्पादन का प्रयत्न।

हमें हमारे समाज से भ्रष्टाचार को भी रोकना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊंचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरुप लेकर विकसित हो। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएं भी सुलभ करानी होंगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगाना अनिवार्य है। यह सच है कि इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गये हैं। अनेक समाज सेवी संस्थाएं भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। विवाह की आयु निर्धारित की गई है।शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़के–लड़कियों पर जोर डालना चाहिए। आज के युग में दोनों के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। एक लड़की के लिए अनेक सुविधाएं दी जा रही हैं, जैसे लाडली स्किल, फिर भी आशानुरुप सफलता नहीं मिल पाई है। यह केवल सरकार की नहीं अपितु नागरिकों का भी कर्तव्य है कि वे इस क्षेत्र में सजग प्रयास करें।

हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऐसे काम करेंगे जिससे हमारे भारत का सर हमेशा उठा रहे, कभी न झुके। हम स्वंय शिक्षा प्राप्त करेंगे और दूसरों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्साहित करेंगे। अपने समाज और देश द्वारा दिए हुए नैतिक मूल्यों पर आगे बढ़ेंगे। हम विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे और अपने भारत से बुराइयों को बाहर निकाल फेकेंगे। फिर दिन दूर नहीं, जब हम गर्व के साथ कहेंगे:

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा।

मलिहा जामिल बारहवीं ए
कटरा दीना, बेग, लाल कुआं
दिल्ली

हिन्दी का करना होगा सम्मान

यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। यदि हम अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करेंगे तो ही हम सभी देशों में विश्वगुरू कहलाएंगे। मैं अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती हूं लेकिन मैंने इस विषय को हिन्दी में लिखने का निर्णय किया क्योंकि यह जांची–परखी बात है कि जितना अच्छा मनुष्य अपनी राष्ट्रभाषा में लिख सकता है उतना किसी और भाषा में नहीं।

• *'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'* जननी व जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठतर होती है। मां जन्म देती है। मातृभूमि लालन–पालन करती है लेकिन जन्मदीयिनी मां से भी ज्यादा महत्व मातृभूमि का होता है, क्योंकि जन्मभूमि अपनी संतान का लालन–पालन ता उम्र करती है।

राष्ट्र मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है। उसके प्रति अनायास ही स्नेह एवं श्रद्धा उमड़ती है। जो व्यक्ति अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं उसके प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करता है, वह कृतघ्न है। जो व्यक्ति देशप्रेम की भावना से रहित है वह निरा पशु के समान है।

भारत को विश्वगुरू बनाने के लिए हमें जो सावधानियां बरतनी चाहिए वह इस प्रकार से हैं : आप सब यह जानते हैं कि हमारे देश में आजकल जो सबसे पहली समस्या है वह है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार एक ऐसी बीमारी या खतरनाक जहर कह लीजिए जो सभी देशों में कूट–कूट कर भरा हुआ है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार एक ऐसा शब्द बन चुका है जिससे समाज में न केवल व्यक्ति अपितु हम जैसे विद्यार्थी और बच्चे भी परिचित हो चुके हैं।

हमें भ्रष्टाचार को रोकना होगा। जैसा कि सभी लोग कहते हैं कि आज का विद्यार्थी ही कल का नेता है। यदि हमें अभी से ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरणा दी जाए तो यह संभव है कि हमारे देश से भ्रष्टाचार रूपी कुरीति समाप्त हो जाए।

▪ जिस प्रकार तार के बिना वाणी और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार होता है, उसी तरह नारी के बिना मानव जीवन। इस सच्चाई को बहुत पहले जान लिया था। सभी लड़कियों को अच्छी पढ़ाई मिलनी चाहिए। आज लड़कियां प्रत्येक क्षेत्र में आगे हैं। वैसे तो आजकल लड़के और लड़की में अंतर नहीं समझा जाता लेकिन आज भी कुछ ऐसे रूढ़िवादी लोग हैं जो लड़कियों को न पढ़ाकर उन्हें घर संभालने को कहते हैं। यह गलत है। इसका विरोध सभी को करना चाहिए।

आजकल कन्या भ्रूण हत्या भी हो रही है। इसे भी हम नारी के विषय में ही लेंगे क्योंकि आज की लड़की ही कल की नारी है। यदि कन्या भ्रूण हत्या को न रोका गया तो लड़कियों की जनसंख्या बहुत कम हो जाएगी। इसलिए लड़कियों को उनका अधिकार मिलना चाहिए। कोई भी लड़की इस अधिकार से वंचित नहीं रहनी चाहिए। यदि प्रत्येक लड़की शिक्षित होगी तो वही सबसे पहले देश की समस्याओं के विरुद्ध खड़ी होगी क्योंकि नारी एक दैवीय शक्ति है जिसे ईश्वर से भी ऊंचा दर्जा दिया जाता है और जिन्हें भगवान भी प्रणाम करते हैं।

▪हमें अपने देश से आतंकवाद को समाप्त करना होगा। हमें सभी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाने होंगे। कभी भारत और पाकिस्तान में कोई अन्तर न था। अंग्रेजों के कारण पाकिस्तान और भारत अलग–अलग हो गए। हमें इस अन्तर को समाप्त करना होगा और पाकिस्तान के साथ भी अच्छे संबंध बनाने होंगे तभी आतंक समाप्त होगा और तभी भारत विश्वगुरू बनने की दिशा में पहुंच पाएगा।

▪ यह बुरी बात है कि आज के युग में हिन्दुस्तान के लोग हिन्दी भाषा में पिछड़ते जा रहे हैं। यह अच्छा है कि हम अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं तथा इसे सीखने की कोशिश कर रहे हैं परंतु अपनी मातृभाषा को हमें उतना ही सम्मान देना चाहिए जितना एक बच्चा अपनी मां से प्रेम करता है। भारत के लोग संस्कृत भी जानते हैं जिसे भारत की ही नहीं बल्कि सभी देशों की जननी कहा जाता है।

यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। यदि हम अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करेंगे तो ही हम सभी देशों में विश्वगुरू कहलाएंगे। मैं अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती हूं लेकिन मैंने इस विषय को हिन्दी में लिखने का निर्णय किया क्योंकि यह जांची–परखी बात है कि जितना अच्छा मनुष्य अपनी राष्ट्रभाषा में लिख सकता है उतना किसी और भाषा में नही।

▪ आज गरीबी जनसंख्या के कारण बढ़ रही है। हमारी जनसंख्या 125 करोड़ से भी ऊपर है। जहां देखो नौकरी प्राप्त करने के लिए लोगों की एक लम्बी लाईन लगी होती है जिनमें से कुछ ही नौकरी प्राप्त कर पाते हैं और बाकी लोगों का दिल टूट जाता है। इसका कारण है बढ़ती हुई जनसंख्या। अधिकांश बच्चे दो–चार कक्षाएं पढ़कर स्कूल छोड़ देते हैं। गरीब मां–बाप अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते। कई लोग बेरोजगारी के कारण आत्महत्या कर बैठते हैं। अपने देश की बेरोजगारी को खत्म करने के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए।

▪ हमें प्रदूषण की समस्या का भी हल सोचना होगा क्योंकि यदि देश का प्रत्येक नागरिक स्वस्थ होगा। स्वच्छता के कारण हमारी संस्कृति तथा पर्यटन स्थलों को चार चांद लग जाएंगे और इससे भी हमारे देश को विश्वगुरू बनने में मदद मिलेगी।

▪ महंगाई के कारण गरीब आदमी और आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है। हर चीज के दाम बढ़ गए हैं। पहले तो गरीब व्यक्ति इन सभी चीजों को लेने में समर्थ नहीं लेकिन आज तो आम आदमी भी इसमें सम्मिलित हो गया है। अतः हमारी सरकार को ऐसा समाधान निकालना चाहिए जिससे न तो किसानों को नुकसान हो और न ही खरीदने वालों को इसलिए इस बात पर गौर कीजिये।

▪ प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी धर्म से जुड़ा होता है। इस कारण वह अपने धर्म को अन्य धर्मों से बड़ा समझने की भूल करता है। इस भूल के कारण विवाद व वैमनस्य फैलता है और इसे ही साम्प्रदायिकता कहते हैं। जब मानव दानव बन जाता है तो यह दानवता ही साम्प्रदायिकता है। अतः इसे खत्म कर हमें आपस में प्यार बांटना है।

▪ भारतवासियों में इतनी एकता होनी चाहिए कि कोई भी देश हमारे देश से दुश्मनी नहीं रखना चाहे। हमें अपने भारतवासी भाई और बहनों पर विश्वास होना चाहिए। यदि हम कोई भी काम करें तो एकता से करें। यह सभी समस्याएं जिनका हमने उल्लेख किया है, यह भी एकता से ही खत्म हो सकती है और भारत विश्वगुरू का भी गुरू कहलाएगा क्योंकि ''एकता में बल है।''

अब अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि आप सब भी इस पर ध्यान दें और लोगों को भी समझाऐं। यदि हमारे देश में सभी गुण होंगे तो भारत अवश्य ही विश्वगुरू बनेगा। तात्पर्य है कि भविष्य में भारत ज्योति–स्तंभ की भांति प्रज्ज्वलित होगा तथा संसार के सभी राष्ट्रों का मार्गदर्शक होगा जिससे यह देश फिर से सोने की चिड़िया कहलाएगा।

तेजस्विनी पंडित, दसवीं
दयानन्द आदर्श विद्यालय,
कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश

कुछ तो खास है भारत में

भारत की सभ्यता और संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है। मानव संस्कृति का आदिम ग्रंथ ऋगवेद की रचना का श्रेय इसी देश को प्राप्त है। संसार की प्रायः सभी प्राचीन संस्कृतियां नष्ट हो चुकी हैं परन्तु भारतीय संस्कृति समय की आंधियों और तूफानों का सामना करती हुई अब भी अपनी उच्चता और महानता का शंखनाद कर रही है।

भारत एक ऐसा देश है जो सभी देशों से बहुत अलग है। सभी को अपनी मातृभूमि पर गर्व है पर भारत–भूमि तो स्वर्ग से भी महान है। जो भी इस भारत की भूमि पर जन्मा है, वह बड़ा ही भाग्यवान है।

भारत के उत्तर में हिमालय की हिममंडित गगनचुम्बी चोटियां हैं, जिस पर बर्फ चांदी के समान चमकती है। तीनों और से समुद्र जिसके चरण पखारता है। गंगा–यमुना जैसी नदियां जिसके हृदय का कंठ हार हैं तथा जहां सूर्य की किरणें केसर के फूलों की तरह शोभा बरसाती है, ऐसा देश है भारत। हमारा भारत विश्व सभ्यता का जनक है। संसार के अन्य देश जब अशिक्षित तथा नग्नावस्था में थे, तब भी यह उन्नति के चरमोत्कर्ष पर था।

भारत ने ही मानव को सभ्यता का पहला पाठ पढ़ाया। विश्व की प्राचीनतम पुस्तक 'वेद' तथा विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत भी इसी देश की ही देन है। उपनिषद्, पुराण, दर्शन, गीता, रामायण जैसे सभी ग्रंथों की रचना इसी देश में हुई।

हमारा देश भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम–स्थल है। केवल इसी देश में विभिन्न संस्कृति को समान रूप में फलने–फूलने पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक धर्मों, मतों, सम्प्रदायों तथा वेदों को जन्म देने वाले हमारे देश ने भारत की विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात कर लिया है। भारत की प्राचीन वास्तुकला आज के वैज्ञानिकों को विस्मय में डाल देती है। भारतीय कला और कारीगरी द्वारा निर्मित वस्तुएं अनेक देशों में जाती थीं। इसी समृद्धि के कारण यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था तथा सभी के आकर्षण का केन्द्र था।

हमारे देश भारत में अनेक मंत्रदृष्टा, ज्ञानी, ऋषि–महात्माओं एवं विद्वानों ने जन्म लिया। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानक, कबीर, विवेकानन्द, गांधी और अनेक महामानवों ने इसी धरा पर जन्म लेकर इसका मान बढ़ाया। इस धरती पर शिवाजी, राणा प्रताप जैसे वीर, हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी, अर्जुन जैसे धनुर्धर, कालिदास, बाल्मीकि, तुलसीदास, सूरदास तथा रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे अनेक कवियों ने जन्म लिया। इस पुण्य भूमि पर आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, जगदीश चन्द्र वासु, चन्द्रशेखर जैसे महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया।

आज विश्व में जो देश शक्ति सम्पन्न हैं, वे ही पूज्य माने जाते हैं। भारत देश संसार रूपी गगन पर एक जगमगाता नक्षत्र है। यह देश धन–धान्य और समृद्धि में पारसमणि पत्थर के समान माना जाता था। संसार में केवल यही एक देश है जहां षड्ऋतुओं का आगमन होता है। गंगा, यमुना, सतलुज, व्यास, गोमती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी अनेक नदियां हैं जो अपने अमृत जल से इस देश की धरती की प्यास शांत करती है।

भारत पर प्रकृति की विशेष कृपा है। यहां पर खनिज पदार्थों का बाहुल्य है। अपनी अपार संपदा के कारण ही इसे सोने की चिड़िया की संज्ञा दी गई है। धन–संपदा के कारण ही हमारा देश विदेशी आक्रमणकारियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है।

भारत की सभ्यता और संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है। मानव संस्कृति का आदिम ग्रंथ ऋगवेद की रचना का श्रेय इसी देश को प्राप्त है। संसार की प्रायः सभी प्राचीन संस्कृतियां नष्ट हो चुकी हैं परन्तु भारतीय संस्कृति समय की आंधियों और तूफानों का सामना करती हुई अब भी अपनी उच्चता और महानता का शंखनाद कर रही है। इसका कारण यह है कि इस देश की संस्कृति की अपनी आत्मा और परमात्मा की गुत्थियां सुलझाने वाले कोरे दार्शनिक ही नहीं थे, उन्होंने गहराई के साथ खोज की है। संगीत, कला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि के क्षेत्र में भी हमारी उन्नति आश्चर्य में डालने वाली है। संसार का एक बड़ा भाग घुमंतू जीवन बिता रहा था, हमारा देश भारत उच्चकोटि की नागरिक सभ्यता का विकास कर चुका था।

भारत को विश्व गुरू अर्थात सभ्यता एवं संस्कृति का जनक कहा जाता था। विश्व के अन्य देश जिस समय अशिक्षित असभ्य थे तब भी यह उन्नति के चरमोत्कर्ष पर था। भारत ने ही मानव को सभ्यता का प्रथम पाठ पढ़ाया था।

आज के युग में जो लोग पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, जो लोग आज चांद को छू चुके हैं जैसे– कल्पना चावला, सुनीता विलीयम ये दोनों ही हमारे प्यारे भारत की हैं। जिन लोगों ने हमारे देश को आजाद करवाया वे भी हमारे भारत के थे, जैसे चाचा नेहरू, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि। ये सब तो हमारे भारत के लिए मर कर भी अमर हैं।

खेलों के क्षेत्र में हमारा भारत कम नहीं है आज विदेश में चल रहे ओलंपिक में भी हमारे प्यारे भारत के लोगों ने पुरस्कार जीत कर भारत का नाम रोशन किया है। यदि हम फिर से प्रयास करें तो भारत को दोबारा से उसी स्थान पर लाकर खड़ा कर सकते हैं।

भव्या, नौवीं
आर्य गर्ल्स पब्लिक स्कूल,
पानीपत, हरियाणा

प्रगति पथ पर आरुढ है भारत

भारत एक अत्यंत प्राचीन देश है जो कभी सोने का चिड़िया कहलाता था। यह देश ऋषि–मुनियों, साधु–संतों, महापुरुषों आदि का देश है। स्वयं भगवान ने भी इस देश में अवतार लिया। यह देश देवताओं का भी दुलारा है। इस देश के उत्तर में हिमालय संतरी बनकर खड़ा हैं, अनेक नदियां अपने शीतल जल से इसे सींचती है, अनेक ऋतुएं बारी–बारी से आकर इसका श्रृंगार करती हैं।

युवक ही किसी देश की शक्ति के आधार होते हैं। उनमें जोश और उत्साह होता है। वे अपने जीवन में कुछ कर दिखाना चाहते हैं। जिन्होंने भी देश और समाज के लिए कुछ किया, जवानी में ही किया। राम हो या कृष्ण, बुद्ध हो या महावीर, सभी ने कुछ करने का दमखम जवानी में दिखाया। महात्मा गांधी जीवन के अंत तक लड़ते रहे, क्योंकि उन्होंने जवानी से ही संघर्ष की आदत डाल ली थी।

भारत ने आजादी की कहानी अपनी युवा शक्ति के बल पर लिखी। आज भारत का भविष्य इसीलिए सुरक्षित है क्योंकि उसके पास विश्व में सर्वाधिक युवा हैं। युवक स्वभाव से ही कुरीतियों के विरोधी होने हैं। अतः आज समाज की बुराइयों को समाप्त करने में तथा भ्रष्ट शासन–व्यवस्था को उखाड़ने में युवाओं पर ही भरोसा किया जा सकता है। हमारे भारत में दो दिवस अच्छे से मनाए जाते हैं– एक स्वतंत्रता दिवस, दूसरा गणतंत्र दिवस। महान देश भारत को भी सैंकड़ों वर्षों तक पराधीनता का दुख सहन करना पड़ा था। अनेक महापुरुषों, देश – भक्तों तथा शहीदों के बलिदानों के कारण हमें स्वंतत्रता प्राप्त हुई।

15 अगस्त के दिन हमें प्रण करना चाहिए कि देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए हम अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे। हमें यह भी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम आपसी भेदभाव तथा फूट आदि से दूर रहेंगे, देश की एकता को नष्ट नहीं होने देंगे, राष्ट्रीय तिरंगे की आन, शान और बान को इसी तरह बनाए रखेंगे, शहीदों के पावन बलिदान को कभी न भूलेंगे और देश के महान नेताओं द्वारा बनाए मार्ग पर चलेंगे।

26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था। इसी दिन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। विद्यालयों में भी उत्सव अत्यंत उत्साह से मनाया जाता है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हमें अपने देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता की रक्षा करनी चाहिए तथा आपसी भेद–भाव को भुलाकर देश की उन्नति में अपना सहयोग देना चाहिए।

आज भारत का सूर्योदय काल है। गुलामी की जंजीरों को काटने के बाद वह प्रगति के रथ पर आरुढ़ हो चुका है। आज भारत विश्व का तीसरा बड़ा देश है जो विज्ञान तकनीक और धन–संपत्ति कमाने में बढ़ – चढ़कर लगा हुआ है। अब अमरीका, इंग्लैंड आदि देशों को अंग्रेजी पढ़ाने से लेकर खाता–बही बनाने की सेवाएं भारतवासी दे रहे हैं।

उन्नत देशों में हड़कम्प मच गया है कि आने वाले सालों में सारी सेवाएं भारतीय नागरिक ले जाएंगे। अब भारत की कंपनियां बहुत शक्तिशाली बनती जा रही हैं। संसार की सबसे बड़ी स्टील कंपनी का मालिक भारतीय उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल है। रतन टाटा ने ब्रिटेन की प्रमुख स्टील कंपनी को खरीदकर अंग्रेजों को दिखा दिया है कि अब भारत शक्ति स्त्रोत बन चुका है।

भारत त्यौहारों का देश है। यहां वर्ष भर कोई न कोई त्यौहार आता ही रहता है। इन त्यौहारों में भारतीय संस्कृति की झांकी मिलती है। ये त्यौहार हर्ष एवं उल्लास का प्रतीक भी होते हैं। भारत में समय – समय पर मनाये जाने वाले अनेक त्यौहार हमारे नीरस एवं व्यस्त जीवन में उल्लास, उमंग और स्फूर्ति का संचार करते हैं।

भारत एक अत्यंत प्राचीन देश है जो कभी सोने का चिड़िया कहलाता था। यह देश ऋषि मुनियों साधु–संतों, महापुरुषों आदि का देश है। स्वयं भगवान ने भी इस देश में अवतार लिया। यह देश देवताओं का भी दुलारा है। इस देश के उत्तर में हिमालय संतरी बनकर खड़ा हैं, उनेक नदियां अपने शीतल जल से इसे सींचतीं है, अनेक ऋतुएं बारी–बारी से आकर इसका श्रृंगार करती हैं।

सुंदरता की दृष्टि से यह देश अद्वितीय है यहां विदेशी पर्यटक आते हैं तथा यहां के सौदंर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। यहां की अनेकता में एकता कोदशकर वे चकित रह जाते हैं। हमें अपने देश पर गर्व है। हमें इसकी संस्कृति पर गर्व है। हमारी अभिलाषा है कि यह दिन–दूनी रात चौगुनी उन्नति करे। प्रत्येक भारतवासी का भी कर्तव्य है कि वह देश की अखंडता और एकता के लिए कार्य करे तथा इसके सम्मान की रक्षा के लिए संकल्प ले।

आंचल खुराना, नौवीं डी
सेंट सिसीलियास पब्लिक स्कूल, दिल्ली